

प्रकाशक

शादूल रामस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट  
बीकानेर

प्रथम बार, १९९०

मूल्य

18)

## प्राक्थन

प्रसूत कहानी-संस्कृत, अपने प्रकारा माध्यम तथा अपनी विषय-वस्तु इन दोनों बातों में मुख्य विरापता रस्यता है। इसमें भी मुरलीधरजी व्यास की लिखी हुई पचीस कहानियाँ हैं, जो मयक्री-सक राजस्थानी भाषा में ही लिखी गई हैं। यह इस ग्रन्थ की पृथ्वी विरापता है। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में राजस्थानी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि इस समय राजस्थानी की साहित्यिक प्रगति एक दम निम्न होते हुए भी अपने घर में इसकी प्रतिष्ठा का सर्वाङ्ग बोली बोली हिन्दी के मुकामसे बहुत कुछ बढ़ गई है। सिवा इसके विचारतमक साहित्य राजस्थानी साधारण बाहरी बोधन इन सब क्षेत्रों में राजस्थान के लोगों ने अब हिन्दी ही को मान लिया है। इसके कई ऐतिहासिक कारण हैं। लिखित अक्षर भारत की देखन की ओर जो ध्यान दिखाने देता है जिस देखन के लिए वास्तव के लोग शुरू हुआ समग्र देश को धूप कर राजस्थान के बरिष्ठ बन्धु समाज ने वही महत्वपूर्ण सहायता दी है। उस ध्यान ने अक्षर-माधिका के साथ हिन्दी को आग्रह बना लिया है। इसीलिए राजस्थान में हिन्दी की संस्थापना होने में देर नहीं हुई। साधारण राजस्थानी जनता में हिन्दी की प्रसिद्धि भारतीयता और इसकी आधुनिक विविध कार्यप्रतिष्ठा एवं सुविधाओं के कारण हिन्दी को ग्रहण करने में कुछ रुकना नहीं दिखाई दी, परन्तु अपनी मातृ-भाषा जानना खोलू बोली राजस्थानी का प्रयोग जो सीमित हो जाने के कारण लोगों में कुछ अचानकी सी भी आभाई है विशेषतः जब जनता में राजस्थानी

के मीन और विस्तृत साहित्य के सम्बन्ध में पूरी जानकारी न होने पर भी पूरा अभिमान अवरन ही विद्यमान है। पर राजस्थान के अधिकांशियों के संस्कृति पूरा मन में राजस्थानी भाषा और साहित्य की अब इसी गहरी है कि वह कभी उन्माद होने की नहीं। अभी तक राजस्थान के लोगों ने अनेक और अर्धसाहित्य में लोक-साहित्य के रूप में और लिखित और अलिखित सम्प्रदाय में उच्च कोटि के परिमार्जित साहित्य के रूप में राजस्थानी साहित्य की धारा की व्यवहार रखा है। विद्वज्जन रामदास सरदार आदि जिनका काव्य शास्त्राभ्यास ही हिंगल साहित्य से काफी परिचय है वनसे निकल कर ग्रामीण लोक-साहित्य की कविता और कवियित्री तक सब छोटी के राजस्थानी लोककविताओं में कविता-सर्जना अभी तक विशेष रूप से चम्कू है। "लिखे-पढ़े" के सम्बन्ध कुछ प्रभावशाली लेखक और नेताओं के सिवा साधारण राजस्थानी लिखितजनों की भी वह अनिरीत है कि राजस्थान में ही मातृभाषा चम्कू रहें—राजस्थानी तथा हिन्दी। जैसे कई स्थानों से राजस्थान के मारवाड़ प्रांत की भाषा पर आधारित "हिंगल" और मज-मजह की भाषा पर आधारित "हिंगल" के दो साहित्यिक मातृभाषा राजस्थान के कवि तथा अन्य लेखकों के द्वारा व्यवहार में आई जाती थी। अस्तु परन्तु हिन्दी की अपनी अधिक मात्रता ऐसे रूप में राजस्थान में अपनी प्राकृतिक मनोभाव के बल लिखित तथा अनुमति ऐसे बहुत लेखक दिखाई देते हैं जिनमें अपनी मातृ-भाषा में अक्षरों के साहित्य प्रकाश करने में अक्षणीय और अक्षमक जाहोना और अक्षम स्पष्ट है।

प्रस्तुत कहानी-संस्कृत के लेखक भी मुख्यतः अक्षम ऐसे राजस्थानी-मेही लेखकों में एक प्रमुख हैं जिनकी लेखनी द्वारा प्राकृतिक राजस्थानी भाषा-स्वरूपता की अनमोल सेवा हुई है, और जाना है कि अक्षम में भी होती रहेगी।

इस ईसाई बीसवें शताब्दी के द्वितीय दशक में भी लिखक

भारतिया ये राजस्थानी भाषा का हिन्दी बंगला मराठी गुजराती आदि के बराबर साहित्यिक सर्वाङ्ग देने के लिए, राजस्थानी में सबसे भाषा से साहित्य सभ्यता की नींव डाली थी। भारतवासी ये दो लाख राजस्थानी में लिखकर बहई से प्रकाशित किये थे। इसकी भाषा में कुछ स्वतन्त्रता थी—यह भाषा उनकी अपनी बनाई हुई एक नई साहित्यिक राजस्थानी थी जिसमें कई शब्दों की शोधों का मिश्रण था। यह

“विश्वोत्तमा भाषा” सम्भवतः अपनी कृत्रिमता के कारण लोक-प्रिय नहीं हो पाई। इसके बाद बीच-बीच में गद्य रचना के लिए साहित्यिक प्रतिष्ठा वाली राजस्थानी (अर्थात् मारवाड़ की भाषा) कुछ स्थिति क्षेत्रों के द्वारा प्रयुक्त होती आई। अधिकतर हिन्दी के द्वारा अपना क्षेत्र संकुचित होत हुए भी राजस्थानी में कई तौर से साहित्य सभ्यता की एक परम्परा पुनर्जीवित हुई। यह परम्परा उपेक्षणीय नहीं है—इसका प्रमाण है प्रस्तुत पुस्तक।

कविता कदाची प्रभृति साहित्य रचना जो अपनी दार्ष्टिक या मार्मिक भाषा का प्रकाशन के लिए या कि Creative genius अपनी “कारबिनी प्रतिमा” के महत्त्व मानने की मुक्त क्षेत्र बनती है जहाँ को स्वाभाविक रीति में प्रत्यक्ष मान-सम्बन्ध के साथ अपने स्वच्छिन्न का बात करती है। विचारधारा में सीधे हुई भाषा में रचना अधिकतर Smelling of the lamp अर्थात् स्वाभाविक गति में सिद्धि बनने की रोशनी के सामने पैदल निरीक्ष मायका की न की भरमार रहती है। ज्ञान विज्ञान या आकाशवाणी साहित्य में यह भाषा-मायका बनने प्रकट हो नहीं हो पाने जाया-विषयक संभावनीय कृत्रिमता को आकाश विषय का गौरव महत्त्व एवं सँर्द्ध देता है। जो कुछ है इसमें तो सन्देह नहीं है कि इसका अन्तर्गत परिचय क्षेत्र की अपनी भाषा में हो बिना साहित्य में मिश्रण है। इसकी किन्ही समाज में निर्वाचितता रहने से समाज के द्वारा अर्थात् हुई किसी एक सुनिश्चित साहित्यिक भाषा के साथ मान जाया अन्तर्गत या

उपेक्षित नहीं रह सकती। इतिहास फ्रांस में वहाँ की बौद्धिक भाषा Provençal 'प्रवोंसाङ्ग' एक समय सम्पूर्ण युग में भारत की ध्वजस्तम्भ सुप्रतिष्ठित साहित्यिक भाषा थी। अब इसका प्राचीन गौरव अस्तमित है—प्रवोंसाङ्ग बोलने वालों ने कई पीढ़ियों से उत्तर फ्रांस की फ्रांसीसी French भाषा का अपनी राजकीय तथा साहित्यिक भाषा बना लिया है पर—'नामा यूरो माना माया, बिना स्वदेशी भाषा मिटे कि आशा ?'—प्रवोंसाङ्ग लोगों ने अपनी स्वदेशी भाषा का त्याग अभी नहीं किया। वे लोग इसमें बचापूर कुछ-कुछ कविता आदि बनाये आते हैं और कई वर्ष हुए, इनके एक कवि Frederic Mistral फ्रेडरिक मिस्तुराल ने अपनी मातृ-भाषा प्रवोंसाङ्ग में Mireio मिरियो ( या Mireille मिरैह ) नाम के प्रेम जीवन को जातक कर एक सुन्दर कल्पन लिख कर फ्रांसीसी अधुना के साथ प्रकाशित किया था जिसके लिए उसको अग्राहिक्यता Noble Prize ( नोबल पारितोषिक ) स्वीडन की विद्वत्सदस्यी से मिला है।

इतना लिखने का अन्तिमार्थ यह है कि श्री मुरलीधरजी के त्रिम भाषा से हुए कहानियों में अपनी मातृ-भाषा का उपयोग किया है वह मेरे विचार के अनुसार निरतिशय सद्भावता और सज्जनता का परिचायक है। हममें अपने राजस्थान की आत्मा का एक परिपूर्ण बिछारा होता है। हम विषय में अधिक चिन्ता विषयबोधन विह्वल ही होगा। मैं स्वयं राजस्थानी अच्छी तरह से नहीं जानता इसके बहुत से नाम राज्यों के अर्थ मेरे लिए अज्ञात ही है। परन्तु हम विषय में मेरा पूर्ण विश्वास है कि हम पुस्तक की कहानियों में राजस्थान के भाग्य का रहन-सहन उसका वास्तव्य की भंगियाँ भाषा पात्र-पात्रियों की अपरिज्ञान के कारण Verisimilitude अर्थात् साय-साय या सत्य सादृश्य के अनुगामी अथवा वास्तव्यानुसारी ही है वास्तव्य विस्तृत सत्य भाग्य है। इस की जगह पर ध्वनि के गुरु वक्त्र के लिए यह Verisimilitude गुण को केवल भाषा के द्वारा

ही महज रूप से जा सकता है 'कारपित्री साहित्य-सर्जना' के लिए समुत्पन्न बचती है। अतएव मापगत भाष्यम इस पुस्तक का अचजीव प्रथम गुण है। इसमें जहाँ तक मेरा अनुभव है, राजस्थानी भाषा का सुन्दर सुष्ठु प्रयोग हुआ है। The well of Rajasthanian undeified—"शुद्ध ठेठ कबोफ़क़न की राजस्थानी का छस" इस पुस्तक की भाषा को हम कह सकते हैं। इसकी कहानियाँ कुछ आधुनिक काळ की समष्टिगत सामाजिक या व्यक्तिगत चारित्रिक अभिव्यक्तियों का सेठर है और कुछ ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर। लेखक का दृष्टिकोण आधुनिक अर्थात् समीक्षणापूर्ण है। क्या वस्तु केवल बटना मात्र को आश्रय करने से वह एक प्रकार का प्राग्वहीन इतिहास ही रह जाता है। हाँ यह पूर्णतः सत्य है कि कभी बटना में ऐसा महत्व होता है जिससे स्वयं किसी न किसी प्रकार का साहित्यिक रस उत्पन्न होता है। परन्तु लेखक की रचिर्भंगी तथा प्रकाशभंगी दृष्टिों मिश्रकर साधारण को असाधारण बना रही हैं बाहरी रूप-रंग के अन्तराल में जो भीतरी प्राण रहता है उसे भी पाठक या श्रोता के सामने ला देती है। प्रस्तुत ग्रन्थ की कहानियाँ छोटी छोटी हैं इसलिए इनमें घन्यास में जेता पूरा चरित्र चित्रण अपेक्षित या संभवपर नहीं था। पर हा-एक सतक में लेखक ने अपने पात्रों की व्यक्तिगत या चारित्रिक अवस्था मार्मिक विशेषता को सार्थक और सुन्दर रूप में दिखाया है। भंगाल तथा भारत के आधुनिक चरित्र-चित्रलेखक औपम्यासिकों में जो पविष्ट माने जाते हैं और जिनकी कृतियों से भारत भारती कृतार्थ-सी पतों है सो मुरलीधरजी उन शालूचन्द्र अट्टापाध्याय के भाव शिष्य हैं। शालू की श्रार दृष्टि और उनकी चरित चित्रलेखन विषयक प्रतिभा की श्यामि राजस्थान की घरेलू बातों पर निताम्त सार्थक भाव से राजस्थानी कहानीकार भी मुरलीधरजी न केता

कर कनक एक अभिनव सुन्दर प्रकाशम किया है । यह प्रस्तुत ग्रन्थ के विषय-वस्तु में सम्बन्धित गुण हैं जो अनुभवी पाठक के हृदय को जीत सगा ।

मेरा विश्वास है इन कहानियों के अंग्रेजी और हिन्दी अनुवाद में मनु-भारती का गौरव बढ़ेगा । अपने प्रान्तिक सुमीने के अनुमार हिन्दी को व्यवहार में लाते हुए भी राजस्थान की सुसंवात इस युग के राजस्थानी कवि और अन्य क्षेत्रक यथापूर्व राजस्थानी-वाङ्मय के पुण्यो में हार घनाकर भारत-भारती के चरणों में अर्घ्य-स्वरूप अर्पण करते रहें मेरे स्वदेश के प्रबर्धमान साहित्य गौरव के लिये यह मेरी हार्दिक कामना है ।

दीपावली २ १३ वि सं

सुनीलकुमार चावुनिया

२ नवम्बर १९२९ ई

पूना

घोरी बस्तु मेह घाँने हँ बस्वम-बस्तु ।  
है ता आ भटसेह छात्र छादरै चिपड़ रो ॥









## प्रकाशकीय

साबूत राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर रै प्रकाशन विभाग री आ 'वरसगाँठ' पुस्तक राजस्थानी प्रथमाक्षा रो सीजा प्रस्थ है। इय वैसी राअरवान रो अतु-काम्य "कलायस" नै राजस्थानी भाषा रो पैलो अपन्यास "आमै पच्छी प्रकाशित हो चुका है। राजस्थान रा प्रसिद्ध क्लांखी लेखक भी मुखीपर व्यास री अमुपम ५ सामाजिक क्लाणियों रो संग्रह 'वरसगाँठ' रै नाम सँ प्रकाशित करवा मनै भखी सुरी हुय रही है।

ममाज सुबार नै सांस्कृतिक कामों में व्यास रवि रम्यो वाली तथा बीकानेर री प्रसिद्ध बिदुपी भीमसी गहन दूवी दग्माणी इखरै प्रकाशम सारू ५ ०) पौंच सी रूपिबां री सहायता इन्स्टीट्यूट नै दी ह। इन्स्टीट्यूट इयांरी बदारता री आभारी है।

बीकानेर

चन्द्रदान चारण

१ दिसम्बर १९६९

प्रकाशन मंत्री

## प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा-को प्राचीन वाङ्मय-साहित्य बनी समृद्ध है। राजस्थानी-में विविध प्रकार की बातें हैं-बरम में नीति की बोरण में बरम-की ऐकता में धूर्त-की खोरा में बसोहिर्वा-की राजा में प्रजा-की आदर्शवादी में बयस्यवादी छोटी में मोठी सारांश सब मिल रही।

यह राजस्थानी-का प्राचीन वाङ्मय-साहित्य समृद्ध है किन्ती-ई आधुनिक वाङ्मय-साहित्य हीन-हीन है। आज सू कीई पचास वर्ष पैसा राजस्थानी-साहित्य-का बयस्यी लेखक की शिवबन्धुकी भरपिया कमक-सुंदर नांव-की ओक छापी बार्ता लिखी ही किन्में राजस्थानी जीवन-को सुंदर चित्रण हुआ हो। किन्-ई वाङ्मय राजस्थानी भाषा का मोटा अनुवादी की शुक्लचन्दकी बागौरी मारवादी-हितकारक-का सम्पादक की छोटेराम सुनक की शिववारम्भ टोपनीबाक की बज्जाल विवाही जिसेरे हल दिया में छोटा-मोटा प्रपञ्च किया हा।

आधुनिक राजस्थानी वाङ्मय-का बयम महत्वपूर्ण लेखक की मुरलीधर व्यास है। आज-सू बीस वर्ष पैसा आज राजस्थानी में बची खेडी-की बातें लिखनी सक करी हो। और आज कीई कीई है। १० बातें लिख चुका है।

व्यासजी में राजस्थानी साहित्य-ई उदार की खोरादर बयम है। राजस्थानी-में आधुनिक साहित्य-की नीनवा ऐक थाप कविता नाटक बातें आदि साहित्य-ई विविध जगह-में लेख-में रचना करी और मातृ भाषा को संसार भरज साक भाषी लेखकों-में बची प्रेरणा थी। बातें लिखने-में थाप-में विशेष सफाया प्राप्त हुई।

ध्वस्तग्री 'कच्चा-रै बास्ती कच्चा' सिद्धान्त-रा समर्थक नहीं उन्हीं-री मात्स्यवा-में कच्चा रा उपबांग जीवन्-रै साक ह । हय बास्ती उन्हीं-री बागों-में आदर्शवाद-रा पुर पायीमै है । पण समाज-नै पतन-रै छाटै-में वैकल्य बास्ती प्रगति-शिरोची लक्षियों और विद्वत्तिषों-रो पयाब रूप पाइको-रै सामने खान्ता बै बहरी समझै है । धमाज-री विद्वत्तिषों-री धार-सू पान्तिषों नहीं सीख-बै उन्हीं-री ओर सी पदचों-रो प्यान लीजल बास्ती बै बराबर ठप्पर रहा है त्रिन्-सू समाज-में मैली हुचोड़ी गद्गरी आधी हुचल-में मद्द मिळै ।

संघ-री बनकरी बाती सामाजिक है । कच्चेक ऐतिहासिक सी है । ऐतिहासिक बागों-में राजस्वाम-रै अतीत गौरव-रा ऊजका प्रसंगों-रा चिह्न है । सामाजिक बागों-में वर्तमान राजस्वामी-समाज-रा चिबिच पनबागुल्य रूपों-रा और सईको सू मछी हुई विद्वत्तिषों-रा दरप है ।

बरमगंड -में परम्पतिषों-रा मारिबाहा रीरोचला गरीबा ऊपर लंबीचामों-रा गीचों-रो लख मंडरावणो बरमच -में बम-रै मोच ऊपर मरिबाहा रै छारै आंमर-में जीवनों-में हो कदाचों-में ध्यक देवणा 'भादो -में बेदी-रै माचै बम-सू क'र मरय लई कुमान-रा प्यवहार धार मानु जालि पर हुचल बाळी अन्धाधार-रो बागा चित्रय गाव -में गा माथा-रै साथ हुचो बको समानुषिक अन्धाधार और बर्म रै मोच ऊपर पुच करीबल बास्ती गावों-रा बर्म-गुरों-रै बरै हुचल बास्ती हुचैरा लबा बकमै-रा मीच -में बापी प्रतिष्ठा रान्ध-री आगर बर में कूर-बल्लह राखी आर हुँली-बल्लहों-रो चिचार नहीं करमै मृगधे उपाचों-में हजल बचलल री लारी ममाहुति-रा मांगारंग दिजल ह । 'जदाज हुचो -में बाळ त्रिबहु-रै पुनविचार रा बरम लखै है और उम-ने मदानुभूतिपूर दिचार करल आर समाज-में आगी जलै है ।

प्यासजी कड़ीबाह-रा समर्थक नहीं । 'जक में धवेक' नामक कहानी का समाज है अन्विता-धनमयिका मित्रक-री मनोवृत्ति से ब्रीद-आमता चिह्नक है । कोक-सेवा-रो मत चतुर्ध करण्यको विदुष्यताय कायम केवतो रहने गृहस्थी-सू मूढो मोह खेच है पन जेक घोषो खड्की-जै पत्नी कए-सू कोई अंगीकृत नहीं करन री हकठ-में उज-न भाप-री पत्नी बलाह-जै बल-रै मायम-सू सेवा करन-रा नूनी मागे अचमल है नै सेवा-रो अजोको कए समाज-रै सामने रखै ई जो देखवै लोग है ।

बाज-री भाषा प्रकाश बाकी रोजक और गृहस्थीवार है । बनी बहक-रै बाह प्यासजी-री बली रो जो मयम समझ पाठ्य-रै धम्मने रत्नता बजो हरक हुवे है । बूझा संघर्ष भी बेमा पाठ्य-र सामने धमसी इसी धम्या है ।

राजस्थानी भाषा-में घडी-जै बहने-सा बाह्य-भाषा साहित्यकर—लेख नाटक उपन्यास और अनुवाद विरोध विविध साहित्य-रो विमर्श कर रहा है और कुछ सुन्दर मन्त्र कोकपुर जवपुर धौकाल-सू जयस्थित भी हुपा व हो रहा है । माधु पाता मेमी इका पुस्तकी-जै अचमल और लेखका जै प्रोत्साहन है तो कोका ही वर्धा में जायनिक इस-रो साहित्य भी बड़ी मात्रा में त्वा होसकै है । राजस्थान-री अचता और सरकार धम्यो करण्य समझ-में इका और ध्यान है—यो ही जलित निवेदन है ।

## घरसगाट

[ १ ]

मे भयरो रत्न । हाँटर बन्ध । कटिवा मोवाक नः माय । राग  
 हो आर-है बन्धी काय ना दल किया काई विजय रा जाय । गछी में हीन  
 जाय । सोमू पूजना पूजना राम राम करना घर में बटिवा । सोनी रो  
 मा बन्धी—आ-है काई अन्ध हो केजा । आहुत-म लोह माये बोटियाह  
 आ लहरा । रैम-लहर घर म जाय जाय करा । मागो होवना रावना  
 व वा-वाका करना हर्षा है गुना ह ।

बागू बन्धिया बमराज-म ना रमलर है गुरी दूवनी हो ।  
 दम अह रः कर्मा बईलदा जायव नै गरा रा । होयेमा जायवाय  
 जायवाय कर । बईलदा राव आव जगु ना मागो-म रईदस  
 कोर बूधम बराव-गु अह क इम माय माय बान्धव रा करन  
 अन्धम बन्धन-है जाय । बरक ना लीवाक नः क म लारावो है ।



रानी का'र धीसू गृहणी-में बहम्पो । मोती-री मा जगां जगां-म  
 कई मेखी हुबोडी बाखी-झरोखी बाखी शरसरकवा अवर-सु बाख रही ।  
 गोहा गछ-में बाख'र बीसू पड़ रही ।

मोती-री मा जेक कासो सो पूर ओह'र छेक लनै बैडी-बैडी भव  
 कटरण जगनी । माग-री बाख बिमनी-नै अवार-ई बैर काखनो हो ।  
 धोसू बोखिनो—बिमनी-में दिन थका ठेक मरा खावती .. .. ।

मरा कटे-सु खावती । गहा माराज बोखिया—अलाका पईसा  
 दे जावो र ठेक से जावो ।”

‘तो मीठे ठेक-नो बिनी-ई कर लेती ।”

मीठे ठेक-री तो काख गृही बयाव की ।”

बीसू हुन्नी हो'र बोखिनो—कई करा कई नहीं करा । कनै  
 कुटी कोटी कोपनी ।

मोती-री मा कबो—मीठा माराज कनै-सु कबी कयाव को ।

‘जागती-बुझती किवां पणममस कबे है । गैकी बला करे है ।  
 माराज-री अलाखो खंभी तो बूझी-ई कोपनी । बचास-रै फेरे पांच-  
 पांच-री समझी पांच काष्ठां अवारं ठेई पूर्ण है ।”

“तो बीडी कोराव को । बाड़ी बचास-री खिच दा ।”

“पण पक्षे कई बहसी । बाखनी व का व ) दे'र २ ) री बीडी  
 खिचनी हो । अकनी पक्ष २ ) अपर १ ) काख लेसी । बरिवा को  
 गिल्ली-रा १२) ई बाल असी ।”

बरसू मोती-री बरसगाठ है । कई बी-गुह तो काखनी-ई  
 बहसी । माताजी-री पूजा हुन्नी । बरसनी-को काज है ।”

गरीबों-ना जगत राज्यको करमी । तनै तो पूजा-री बिना है पर मन  
 ये फिर है कहे-ई माताज सुनी मार्ग जाय बहिरा ता कोइ करम ।

[ ५ ]

अहीमै सी रिज कृपा अमरण जाता बहमै श्रीम-मै सी-नै  
 कदवा-री बिना बागमै छागो बज ननै भजन-ना बीज भा मही । आज  
 कदवा-मै-री सुदी दुखी जइ राज्ये कारीगर नै मनी छंर मनको  
 माताज र धरै नवा कर गवी भइर रहिवा मागिवा । मनको माताज  
 रामुनी-मै दाव बाहिवा बड़ा जग बरै रवा दा भर माता-गो लपी  
 बायो लू रोद जाव कता जीवता दा । माता-ना मित्रिवा-ई भासी मार्ग  
 गुदकता दा श्रीम-री बल सुनै बाहिवा—जा रे जाई ! सी-मं कुल  
 बाना बाये ? सी-ना हरिवा जावना बडा बीदा है ।

आज राज्ये-री निहारन माने कहेक नकर बाहिवा—देन जाई ।  
 बावली ल'बाई-ना । । कदवा-री दान दा व भर चारी जिभाई ।  
 । क का । इत्येक दा बईवा नवाता इ ।

श्रीम बाहिवा—माताज गरीब दु मने दुरी नर ला बीता -

“मन रोद जा बाका-ई जाव हो कोइ । किन मने बीजा  
 बावक बेरिवा दा । भर रोद-ना कता छाव ही जइ मरा रही क  
 द चरक-ना बईवा दा । डा बडा दिने जाव ह ? दुख दा लवाव  
 बाव -

बीसू बप्पी-ई लोच-विचार'र करव करवो पन ठोई कपड़ा-बस्ता-रा  
 १२) कर्ब हुब न्या । बाकी मोठी-री बरसगाँठ कातर गुड-पी  
 कातुन-में जाग न्या । पादा हुब न्या बाबैजी-री जल ।

मोठी-री मा माताजी माँही पकाव करली कूँरो पाखियो बनेछ  
 बजारही भूप-दीप कर'र कापसी-रो मोग बरिबो । हाथ जोड़'र  
 बरबास करो—मा ! मिमबा कुसम रामी कोरै-ने सोरो राखी बबकछे  
 भाबी कछे-सू सवाजी बाबै । मोठी-रै छिजाइ में हीको कमिबो घर  
 बीसू-नै जीमन-रो कबो ।

बीसू बोखियो—मनै तो अवार सी-नैपा जागै ई । गूरबी नाच है ।  
 ये बीम छो । म्हारै तो ठाव डपरिबा बल ।

मोठी री मा बप्पी बैवा-सुनी करी बद् माताजी-नै कूँरो बम्बर  
 मूँहो लोडम-नै बैदी-ई हो'क हूँ-में मीठा माराज भा'र बोरो  
 सुमाबो-ई । गरजना करी—कारै बीसूबा ! बाँबी-रा रविबा जा ।

बीसू रै हाथ-रो कबो हाथ-में-ई रैप न्यो । काबारी-सू बोखियो—  
 अबकछे माकी हो माराज ! जाग्यो महीनै दोब् बरिबा सालो-ई है वम् ।

'बेसी कछे-सू ! बप-रै सिर-सू ! छकड़ारो बद्दो बप्पी !  
 जाग्यो-कताही तो हूँ जानूँ कपयो । बप्पी उरकाप हूँ बा । पछे  
 माँह हाथ द'र राखैका । कज मारैबा'र काकोजी-काजीजी छे'र  
 रविबा बरब पड़ेका ।

मोठी-री मा बोबी—माराज ! हाथ ओहूँ हूँ अबकछे माकी  
 बस्ता । जाज दावर री बरसगाँठ

बकगी राँड बरसगाँठ ! बैरा मास बडावै घर बैवाबती-ने  
 — २ .

‘माराज ! माछ करे खसिया है । हुकदा सिक्क जाली तो भी बच है ।’

‘आ भाई ! छुई होयो हूँ तो आज जाल्द हाथो ची रख कोयनी । खसिया छे-र-नूँ जाल्द ।’

जीम् माराज-वा एग आक-र बाकिबो-माराज । अबकड़ी बार माछी बगसाय हो । मायछे महीने - -

‘माछ कुच करे कुचव । म्हाते तो आया-गवा-ई काम चाले है । राजिर मल कर । देगा खसिया दे ।’

‘लमे होया माराज ! तो आवरा अबार ताई कोय-ने राकला ? ल’ तो कुटी काछी-नी कायनी ।’

‘तो काई चीज सज्जल दे । खसिया दे-र पाछी क जालीजे । हया छे र माराज तीना-ने मिर-नूँ पण्य ताई देखा बच कर-रै सरीर मायै चाड़ी-री तीव-ई को देखो नी । मागी-रै हाथो-मे हो खसिया चाड़ी-रा खसिया ।’

‘लला ला ! दम अब मोहो मल कर ।’

‘म्हाते लमे ता चीज न बस्त । आ काचा पड़ी है छे जायो । आगले महीने आप-रा कई भाव-ई खसिया राज् कोयनी, अबकड़ी बार माछ करो कैर

‘कैर म्हाते करमा-रा जव-ई तो छ-नूँ पाया बहिबो । बेरा बछरो एग जमाई है । चीज-बस्त डिवा कोयनी ? माछ-री भीव-ई लांवा है । देखी करे-नूँ ।’

आ क र हार मागी-रा हाथ बकहिवा-ईज । मागी घा-बाय मामो हुनर राखल जाला । ला ! मा ! काका ! काका ! भो- -  
म्हाते बहिवा भः बहिवा बहिवा दे ‘आ-मा भोपरे

भीमू बैठो-बैठो देखलो रबो । मा मूपा माथो कियं जमी माथे पड़ी हो ।

## मेह मामो

खैरात बाजै । बिरसा-रो आबक होक नहीं । खोप भाँकवाँ  
कड़ियाँ आभै सामो ओखै । प्यार मिलत भेडा बुधै बढे जाई बल के  
कजाली जामाँ सी हाँगर मरण्या लो कजाली जामाँ होव सी । भै-सो  
बाचोहो । सगळ्याँ रा मूडा हुक्या जायै । बास हचो मूबो के खोम  
बाप'र सीदायै । हाँगराँ लाक बागाँ-जामाँ बल्य-रो बंदोबस्त हूरे ।  
दिन-मै बचो-ई बल्ले वन सिंजवा पड़ी पावो सगरी लैकाव ।

सिंहराईबल्लाँ-री बल जावो । जामाँ-जामाँ उगाभी-रा पणप  
बिछा र होमरो जमावाँ बैठा । घाँत-भाँत-रा जामाँ काँरे के बिरसा  
घाँत बिचाँ-मै होसी बिरसा मोही होमी बिरसा बकर कर होसी ।  
व पड़ी मज्-मै लो हुकड़ा र-ई लाँस कर जडीने जै कड़वा माँप-बूरी  
जावै कर माक डहल्यै ।

कोभी कैने खोसाँ-री भीड़त कोरी हुचगी । कोभी कैने जुम्ब  
बरस-रो खोप हुचगी अह आ बल्लत जावो । खोमी कैव बिरसी-भाँटा  
भाप-रो लज जाँव बिचो । कोभी कैने जमरेभी इसी कोरी जावो  
बिछो होम कर मिय लो डह-ई गवा । कोभी कैव बैठा सगळ-ई  
बामण्य मै डग बल्लयै अह बरसावखो बिरसा बाँ बिना ! मूडा  
बिचो-ई बावो ।



‘बी-तेह-रो ठो डजिहारो भी देख्याने महीना बीत ग्या ।  
ओछद-नै-भी को मिळै नी ।

‘अपे सूखा सोगरा सामा को बाणू नी उस्ताद ।

‘ओर कांजी बहै । राम रात्री हो अद् सो-कंजी मिळतो हो ।  
जम मुनां हा के बर जल भाव बहतो हो जिन्को-नी बंज हुए जाती ।

‘अपे ?’

अपे कीपरी ? बसवा डांघर अहीबै-बहीबै मरका मामला मर  
जाती ।’

‘मायकाज तो आगां जगद-सू डांगरी-रै मरयै-रा समंवार बण्य  
ग्या ।’

‘तुमिवा-नी चाखी ठो देख जिना मिमका-री दसा डांगरी-सं  
है नू की हुए जाती ।’

‘नहीं नहीं मिमका तो मजहरी कर-र-ई पैर मर लेती ।

“करधी के-री ? मखिनी-नी-री ? मजहरी है कइ बाणू की ?”

‘नहीं तो बहै कांजी करसो ?’

‘सिंह पासी मूंडो डेर निकल जाता । अकहिबै-नै सख में पटक  
देता । बोइती माज पूर-पसखा बाणू-र दावरी-बै बैटाव लेता । डोकरी  
बर हू पाखा-नी बुधा जाता ।

[ ३ ]

उडीक-बी-उडीक-में पैखो सावुन बीत ग्यो । बीजोई आगो  
बावुन आगो । बोई सामी बैचाव । जिमगी देखो जुपगी ही सगला-  
री जाल्ना-में मै बाबोको जानै बैही-भी कोजी बहराक पदमचाली  
हुवै ।

अद्वैतवार तो बिन हो । मास्टरजी र बंसी जेक बंयखा बात-रो  
जनुबाहू पड़े हा । बात पूरी हुकी । मास्टरजी गमबै-सूं वयोना पूछता-  
पूछता बारी मांय-सू बारै देखिषा । किन्नी कबो-प्येका म्दारी इ सुण्यो  
बातजी !

बारै फुरैर देखिषा ता जगौ तुगावा राखर दीगर मिमल सै  
मिळा र कोई १२ कया जूमा । राखर कथाहा कबाहा मिळिपाहा, जेक  
बाकरो किन्नी-री आंमिषा-में मांस हा बड़ो-बड़ी जम्-जम् करती करती  
होरो होरी बोझी-राखर मग्य है मिषका पड़गी कोई दया करो नी ।

‘बारी जल काई है ?

‘मायक हां बातजी ! क्यों तुगावा ।’

‘जदीमै-सू छाया हो जर कठीमै जामो ।’

मगर पत्नी-सू भावा हां मजरी मिळ जायी ता घट-ई र  
जायी । इतौ में मग्य राखर रोबुज छाया । डोकरो जक बारै रै माथे  
पर हाथ धरैर बाको—इबै-रं बार मैं हम जावा । अ दानू म्दमा  
पावा है । ममै हम दारा जाव है । बातहा जावट भूला है । निरण-इ  
को भांगी नी । की दहो-बम्पो हुबै ता दिरावा बातजी !

मास्टरजी शरिषा भर बांका माग जर मांय-सू मंगायो । सगळा-र  
हुकड़ो हुकड़ा पानी थावा । राखर बीरुक्का-आली दार् रोटी माथे  
पड़िषा । जेकामे-रा बिषा दिरावा । की पान धादिषा । बातहा जाल  
जाल अस्मीस हा । बंसी बाकरी-बै पूछिषा-माजी ! बारी ता वा  
हाकल है दीबरा-रो कोई हुकी ?

बाकरी जक जमै-नै बगैर बाकी—को म्दारा भाई इ । जल हुं  
काता-मै मांस सेतो । बहीगर दहैर भर मिदमी

इतौ में जक मिमल बोझिषा—ज्याव कर रिषा । अयर आबारा ।  
रात दारी-मारी काट देना । दिमंग बूबरयो राखर मजरी जाल  
मिदमो ।



दूसरी बोझियो—रामजी भबड़े बिरछा देसी जणै तो ठीक नहीं जणै धरारी को मोच-ई है ।

‘बोच मोहो हुन्को उस्ताव ! हुं जगद हुं—बैर बंसी घर कभी मुँहो कियो ।

( ४ )

गंगलै अऊझियै-नै सगळी-में बाझियो । बोझी पूरा पछा सांजल छापो । बिड हो-लीन सेर बासी छाझियो जिहो बड़े जतन-सू मोयकी-में बाक कियो । रावर बैर पृथक जागा—

कहै बाबसा, बूझी ?”

‘भाय खे बा (दण-जर) मेह मामै-नै, बैरा !”

कहुं, जणै पछै रोखै कीया है बासी !”

जो मर्य ! बासी को छाजे-ई रोखै है । काका ! जरे काका ! देख बासी रोखै है ।”

‘माझी ! रोवा कीई हुसी ? छाठे मिमल जामो-ई कोर को बाखे की जिहो को को परमात्मा है ।

गंगलौ हुकी बैडो-ई हो बै हुत्ते-में जंजी-जाम्यै म्हात्ताज भावर बोयो हुमाबी-ज्यो ! कडीन-री ल्यारी करो हो ? जंजी वैखडी-ई को छापी की ।

जंजी जंज-सू चुकला ! बा-सू बसा भिरी बासी है ।”

‘जा मर्य ! हवा कम को बाखे की, सगळ्यै रै जाला-गला बाररे है । कुई को बोवणी करावणी-ई पवसी ।”

“रामजी रावी हुकी जय सौ छुई कर देसू म्हात्ताज को ।

‘जियै-री मैं भिस्तो बैच कियो हो ?

तो जय दे-ई बतला काई कय ?”

“लंबी है भीर करै कोई ?”

गंगको बुझी तो बढो-ई हो । हाथ पसार'र बाखियो—म्हारै बक  
बलका महराम ! भीर ता म्हारै कनै कु ई-ब-कोई ।

म्हाराज भागै भाव-अर लूटै सू चाई नै छोड'र भाव-रो रस्तो कियो।

दुरख खागा बड् पाहोमण्वाँ मिसल जापी । गळै मिस'र रापी ।  
बोझरो बाखी-जाधा हाँ बेधा ' बुध जामै कोई हुसी । जीता रवा  
तो के मिसल्यो ।

बोगी हुसी माझी ! भगवान सारी बत्ता बोली करसी ।

“म्हारै ता मकाइ कु ई हाँवा झीसरको ह । दलरिया'र गगखो  
गळ र मर बही जाम ।

( २ )

“अबै एक ग्वा दाही । पाला का बाखीजै नी ।”

“ई कोवाँ बामू हूँ दाही ।”

“देख बैरा ! म'ई बाखै ई नी बाख दल बाख घना ब्याला है  
म्हारा बैरा ।”

“मेह जामो म्हामे बाई बैमी दाही ।”

“माहू ।”

“जखै ?

“बुध दाही समतिवा, गला ।

माचै-ई दाही ।

“हाँ बैरा !

मदी लू चिलमारी है ।”

माचो बक हूँ पाली ।

‘धर दादी मने कई देसी ।’

‘तू बोरी है तबे गुडिवां बूबड़ो ”

साथी ! थोहो रे काका ! ( बोकी दूर बाहर ) ‘हूँ तो ककरी  
को बाहूबोनी गुडिवां मने । मेह मामै-रो धर जाओ धनो ।

बेरा । डाकुरजी-ने कै जिफो मेहो कर दे ।’

“डाकुरजी मेहो कर देसी ? ’

“हां !”

( सगळा कथा बाचता नाकता )—‘ डाकुरजी मेह मामै-रो धर मेहो  
करो मेह मामै-के धर मेहो करो । ( कैर बोकी देर पड़े )—‘दादी !  
मक जामी है ।’

‘मने-ई कली है ।’

‘मने-ई ।’

‘हूँ पैकां काम् ।’

हूँ पैकां । ( मारण-ने दोहै )

“मा बेरा ! कदो मन ।’

बेक पैद-रै तळै बिसाई-की । गंगाओ छकडिवां तुग जालो ।  
डोकरी रोडिवां पोबुन जाली ।

तबली-रो कई पूडणो ? हवा-री सिंह ई कोबी ही । दिक्कादै पासे  
बोहा-बोहा बाह्रिया बणै हा । देकता-देकतां बीजली पक कासो  
मारियो । जामो इचामीजन जालो । बाम बाब'र पासी पदन जामो ।  
मेह जोसरिबी वो हूमे जोसरिवां कै कैर होखी-ई को खल्य ही नी ।  
डोकरी बोली-बी देखे बेरा ! पारे कहां-सू रामजी मेह मामै-ने  
मेज दिवा ।

आ तो बिरला बरमे है दादी !”



# गाय

[ १ ]

मिक्का-री हूओ मीच ही के बाकी सिहापी तिर जाव । तरै-तरै  
री-खोपड़िया भेखी हुयोपी तरै-तरै-री बोखी बोखे । कोई केवुओ हो-  
जावै कु हे होवो, कसाहुओ-ने ता माथो खेवण बही देनो खोपीजे ।

हुओ—मार्ह ! आ तो पईसा-री कीर है कई कसाह र कई  
बीजो । धाम-काह तो बरम-बरम से जून-में पड़िया रेबे है । ओह  
कपराजजी बड़े है 'कपली पड़े तो रोई में ई बरसी ।

तीजो—हां किसा रेखा भी जड़े बरम-ने कुज पड़े । बरम रे  
जावे पईसा तो कई जाल-ई कई खोज कोचनी ।

बौबो—ये काकाह जिहो हो पड़े । बरत-रै किसी सारै-री बात  
हे । काक-बाका-ने ईज बोईजे के के सगली गाथा-ने बीजरा-पिरोक  
में पाक देवै । कई धाम-ईज हिन्दु हां के कोचनी ?

पांचवी—मार्ह ! कोई-ने होत कोचनी । मन्नाव-री मरधी हुसी  
जिहो काम बरसी ।

बड़ो—जावै मन्नाव धाम-री मरधी ठर-सू बटाव ही होवै का ?  
कई बातों करो हो । हवां तो बही के पांच-साल अजा भेका हुब-र  
सगली गाथा-ने बोखी बर-र खेजा सगला धाम धाम-री सेव  
बचारे है ।

ओह सिद्धकचारी सेठजी धा-र बोखिया—कांव री मीच है ?

ओक बन्धो—आरक-री गारां बीबाम हुबै है ।

सेठ—आरकरी है सदा मुकाम-री बात है ।

कट्टर गौ-भक्त—गारां कमार्तु खेबै है बिबै-सू ऊपर कोई बोकी को बूबै नी, इत्ता बांगरा-री १२ ) मुकालै बोकी ही है, कुई भेई बबो नी तिखक काठज-बै है हीलो तो बैसख-परम-में हो ।

सेठ—बा है मर्तु ? आरा-रै कुज गछै-में पाछै कुई कस-रो सौहो कोयनी ।

गौ भक्त—इबै-में काई बू कस-बठ बगाबो हो कमार्तु-रै हाथ-सू गारां बोडाबुली है ।

छठ—पज मर्तु ! इत्ता बांगर तो गछै-में पछाज्जा पड़े नी ? आ आर-ई मूबै बात हुबै इसी तो कोबनी मित-रो रोखज्ज है । बा बाबा रे ! कुज बीह बेच-र ओछाकी मोछ खेबै ।

गौ-भक्त—तो मर्तु ! वीबरासिरोठ-में बाब दिया ।

सेठ—पईसा कोकर-रा को जाली चाम बीरीबै अइ दाम बाबैई ।

अक भगेबो—इबै मिळगिबै सेठ रै काई खेबज बै है । ओछो मूख-र तोखजिबो है । तिखक तो हाथ अक रो काब-र बैसख बजिबो है । पज कस-री बैसख है—काबो तिखक माबरी बाबो बेईमानी-री जानै निसाप्पी ।

बंसोबर-ई रस्तै बैबतो ऊभम्पी । सगळी बाला मुबो । माबुक तो हो हो । काँप्पा-में पापी जाबम्बो । पज करै काई ? सती-रा सांग बडो होरो । हिरदै-री निसासा घाले मूँहै-सू बीबळ पविबो—'इत्याद्यन्ते विद्धी बन्धे वसिष्ठस्य मयोरधः ।' इरीमें-ई तो जानै छट बै-नै कोई बात पाइ जाबो जाबिबा-में जास्ता-रो बात जाय बडो ।

बोली बोखण्णालो—डोह सौ अ क बपै सो पावै । डोह सौ अ क,  
डोह सौ दोष बोखो डोह सौ .. । बोखो केई-नै बोखण्ण हुवै तो ।  
डोह सौ अ क डोह सौ दोष डोह सौ ती

बंसी जाये बचर बोखिबो—मार्ग ! हुं बर्खूझा, बच १२ मिमर  
डैरयो पवसी अ क बपै सँ सखा करैर धार्यु पु ।

भीष माँव-सू अ क—रग है रे शेर । कोई मार्ग रो झाम्झ मिमरिबो  
तो कर । ! बरती-में मछा-भखी किसी को बसे बी ?

कहर गौ-मच्छ अर बीजा तो माला-री जै सवालन धर्म ही बी ।"

बोलीदस—बैगो भायै मार्ग ! वहीं जयै बोली कलम हुच जाती ।

बंसी अवार का' केयर बर्खूसिबख उडानौर करे । झर सेड  
गोपीरामजी-रै बंधके पुगो । सेडजी हरिजन-री मंडली-रै बीच में बैठा  
मच्छ मुज रहा हा । अँकवाँ भीबिबोड़ी बी अर किसी बीजी दुबिबा-में  
रिबर रहा हा ।

बनी—सेडजी ! राम राम ।

सेडजी—( चमकर ) जालो जालो म्हारात्र ! जाली<sup>१</sup> बचारी ।

बनी—बरखा मेझा करतो जामै बखिबो ।

सेडजी—( हँसर ) देखी सुधीज जालोका म्हारात्र ।

बंसी—मछा-ई गौई करो मझ ! जालर तो है

सेडजी—( बाल कट र ) डेह तो ई पच है तो मिमल-ई म्हारात्र !  
चाली पर दाध बरैर कवा—काई मिमल मिमल है पवखो जालासे-ई  
अमड़ीज जाले ! अबड़े बंसी-रै हिरदै-रा ठार लहक उडिया ।  
बरम्परा-सू हिरदै में बर दिबाई जमद-बोत रै पिरबाल-री बीव  
दिङगी । बाल रामर बखिबो-मेरा ! .. जाले है जाल-सू गावा सोबायो ।

मिठ्ठी—काँ बाल है ? अबछी बालछी गाथा इत दुबै है ।  
ममात्र काँ-रै कर बढो छुबम करै है, भाताँ रै बिबबा-आमरम  
में ।

बंसी—( बीच में ह ) जवछा कपी गाथा नहीं सन्निधि गाथा ।  
इत्ती बे'र मारी इत्तीगत समझापी ।

मिठ्ठी पाँच सौ-रा बाल बिबा भर कबो—दूरी तो छोड़िबा मन ।  
मछ जापीत्र तो कर्तू-रै मारै लवक कराय दिया । बाखी भाताँ-रै  
नाँव पर गगन होखी जापीत्र । ऊमोही-नै ब क न क गाथ द दिया ।

बंसी—येही ! गऊ-बाल कुल येबैका भर्ता ?

मिठ्ठी—म्हारा ! दाव पाँ ह बिबा बाँ । भाताँ तो गऊमाना-नै  
काँ-रै इत पुताँ नै सबा कराय माय सृषा बाँ । मा मा बैबिया काँ  
कमाँ-रै दाव-सँ छुरण पर भी मा-री सबा की करैता नी ?

बंसी आलोबाँ ह'र बासतो हुपा । जाँदवाँ-में प्रेम-रा बाम्ब भर  
हिरदै-म्ब अबात्र उठती ही—दाव र बुनियाँ ! इमै जानीणै-न 'दिदाँ रा  
इमर-नेर 'अरियाणै' बैबै है । पिछार ।

## [ २ ]

बंसी छेक गाथ बातर भरै जायो । बातर-रै हावाँ-म्ब ईत्र  
बाराबता पोषता दाव माय करत गोबर उदावता भर बाम्ब बगल  
हु बता । बंसी-न ओषता दल'र गाथ दूर-दूर करती भर बै-री आनिबाँ  
में सरछता बचछता भर कछता-री मिखावट-रा बाव माय प्रगट हुता ।  
बंसी मुँह-म्ब मुँहा बिबा'र मावतो—गाथ किमी'क अछम्य बम्ब  
अगदाव बुनियाँ-रै बातर-रै बावतै बगलौ है । आ बूच-म्ब बज  
छाव-म्ब बावत-छानि गोबर-म्ब बकीता भर छानि सून-म्ब बाराबता  
बावत-म्ब बीरव बैबै है । काँ-काँ दबै रा उपकार मिखाणीत्र ।



जहाँ तो इसे ठपकारी जीब-रै बरसल-सू दिन्नु बापनै किरणन  
हुवा समझै । अपि महरमाथा इबै बासतै-ई तो इबै-बै मा कबो  
ई-बा सत्तै ई 'मा' इंस है । सगळ-बै अल-पाठ रै मेरु भाव रै निवा  
वृत्त-रै कय-म जीवण-बाल देखै । हाय ! इसे ठपकारी जीब-नो मारण-  
री व्यवस्था देखबवाळै निर्दयी नियम-नो काई 'परम' केनो  
भोग है ?

सोचल-सोचल बिदे री आंखियां मेमाधु बान-सू बबबबाबीज अतो  
जीर बा मा-मा क'र गळ-माला-रै मूढे-सू मूढो निपान केतो । मा-  
बेदे रै मिछल-रो ओ दरब बहो ही प्यसीकिक हुतो ।

बीरै बीरै गळ-माला ध्यावगी । बर-में जाबै आनंद बरसगी ।  
जमी टाक-नो-मै लोद में छिपा बिबै-रो जाह किया करतो । बिबै-रै शरीर  
पर मैद-नो बल-बल रचवा गळ-में घुपरा बाबिबा । शोचही कय  
आंगन-में बाचतो तो बिबै-रै मायै-लागै ही बंसी-नो बिरबो असाह-र  
आत्मन्-सू बाच उठगा । मा-बेदो दोन-नै साह सुबरी राखता । दाम्  
देखै बिबै-रै घुप लेवना कोम-बला कवा करता—बंसी गाव री गैका  
माग है । काई-कोई बेट-गाव सारी रान-सू मैम री-मैम हुबमी ई  
जाबो जह प्यनिबा में सीम हा । बंसी बाव-रै हल-रै बासतै बिबै-न  
दागै पग-री भूह ओर गळ माग रै कपर-सू उदाव दवता ।

छोक दिन गाव बूचतो देखा बंसी-री मा कबै आबगी बंसी दो  
बनो माव-सू बूच काह'र बाकी-नो बन इब-ई दाह दिया । मा  
बोली—बंसी ! दो बन बिबो छोक दिया ?

बंसी—रापकी रै बागै ।

बाकी—नू तो गैको है बबबी ता इबो ही बबिबो गुबिबो बूच  
बूच केमी भर पल-नूय ना भमी ।

बंसी—आ मा ! बापही-हठी कमजोर है जल्दी । दूध-मू रूबै-रा  
हाइ मजदूर है सो । हुँ हूँ-न रूब दूध पा-प्यार मोरी करूँ । आ  
महारो गपनी मा साबै-हुँ प्रम-रा जवठार है ।

मा—तू तो गैबा है । मोहन मोहनी सार दूध बच कोपनी ।

बंसी—मोहन-माबूनी ता आ लीजी साबूनी ।

मा—हां ! दूध बपोनी ? आवा घना कैल माला । हाथो-रो'र  
जिनातुरो-रा अक-बराबरो करी बबो ?

[ १ ]

मिथल-दरुब-री बुबलना-हुँ बिचित्र हुबै ह । कैह-बै आइ प्यार  
करता रंग'र दूबै-नै कुल जाल किया ईरना हुबल जाग जाय । गऊ  
माला-रा घर में हूँ तर-रो माल-मलमाल आइ प्यार देल'र घर आका  
कैवल माला—आ घर में किया थोड़ो बाल मिथो दूधरै काम-री ता  
पुरमन-हुँ का मिछी नी जल देगो जवै हूँ-री अ हाजरो ।

माधन-रो मा—माबूनी ! ये हूँ-न दान-हुँ बबू देव बपो बी ?  
बंसी-री मा—नहो बैरा बंसी लदे ।

मोहन रो मा—दो-बार दिन बह'र है जाली । मिथ-रा हंदा ता  
अट जाली ।

बंसी-री मा—बारें जवै तो बीकलो ! सोमात्री-नै बुबाब'र गऊ-  
दाम देव देवा ।

माधन-रो मा—जदे जवै कब दिवा ई जीवने जी गऊ दाम  
किया है कारै-नु दूध जाल काई दुध जले काई कमी ?

बंसी-री मा—हां बाल ता बीक है ।

अक दिन मामू-बहू-नै मोका बापगवा । बंसी नु हुँ काम बगवई  
गवा हा । हुँ-नै बह १ २२ दिन बीक हो । मा'को देग'र बनी ही मा

धोलाजी-मै बुझाव'र गड-नल देव दिवा । बेंबली बेली बंसी-री मा  
कयो—भोसाजी ! गाव-मै सोरी राखोजी । डोकर-री आंखियां डबडबा  
बीजगी 'र गम्य मारी हुगयो । भामौ बोकी-बावही-रा सैंसकार बरै  
बर-रा हुगया महाराज । म्हार घर-री धन-जख बूझ गयो ।

धीलाजी गाव मै रोरी । बा मचकी । डाल-री हर करज बागी ।  
भबकी धोलाजी नैबलै-री मचक को । गाव माहाबै दुरी । दीनता भर  
कय्या मरी भोजी रहि घर काली नाथी । पण कदख । बा डैकी  
बैकड़की बार निरान्ना-भरी निजर बेई मै देखन साद बसारी, वन  
भोसाजी-री दिव-दिव बिचै-न बढै ज्यादा पण समान का दिवा मो ।

बिहोवै-रै शोखै पढ़वै माय-सूं 'करजा'-रा बैकड़का दरसय बंसी  
री मा. बहुत जर पावेली सगळी किया ।

[ ४ ]

बंसी निव-रान उद्यम रेबन काम्यो । नै-नै रै-रै'र कु ई बल पाव  
जावती भर हिरवै में हूक डकती । आंखियां माय बंसगी । बैरो हसो  
हुगया जावै किपी खंड बिचो दुर्ग । न कखो घरा ताई बैढो रैतो ।  
मच-सूं ई'न कणकी बलां करठा भर बैवयो-मा । तनै कून बढे कुच  
कलपो हुधी ? एन बारै रूप खैवलो हुधी ? हाव मा ! भाव छूं जवान  
हुपगी म्हारें जीतै जी कुव जावै तनै काई-काई हुक मोपया पढ़ता  
हुसी, मा ! बारै आंखियां-रो भाव कुन समझयो हुसी ? भोसाजी-रै  
घरे बरमावै-रा डंगर मोकका कभा हुसी । पाली बढे कुच परवा करबो  
हुसी । बिचै-नै कयै-ई समाज पर सुग जाती कयै-ई घर-जाव्यं घर  
बोच जातो कयै-ई आत्म-म्याली हुती । दिव दिन बसी-री हाकठ  
हिगवती जावती ही ।

अ क दिव बंसी नै बराबर बुझार बखियो रयो । राव-मै बुझार १ ४  
दियरी हुगयो जवै रै जोर-सूं बक्य कावो । रै-रै'र बैवलो—मा

गाम्भी ! तू कटै ई ? हाय ! म्हारे बीला-बी लनै दूमरै-रो द्वारा देगल  
 बहिबो ! कदै-ई केतो-अरे ! गोपी-नै पकड़ा रे ! बारै गही दौध जावै ।  
 कदै-ई कबुता-अरे मा ! धां बागां कर्छि दाम त्रिधा ? केइ-नै मूल-रै  
 आटे मारण-रै वास्तै बीअै रै घर भेज देणो कर्छि परम कपीअै ? तामम  
 करलै-सू मांस जेव जार-सू चम्मच खाणी । डाकडर कैपा के हूयै रै  
 हिरदै-नै डेय बालां है हाई फेज दाज रो डर है । बैदओ भावा ।  
 बधिबा लुराक ही । हिरदै-री गलि में कर्छि मुघार दुवा । मरण-ना  
 घारी टछो । दमी महीनै भर मांस म पदिबा रया ।

## [ २ ]

आमाओ-र परे बला-इ बांगरा हा । कुज हूय गाधरो परबा करता  
 हा । कुज दिवा त्रिनै-ता मावा मारिबो, लोरी बालिपा । टछिबा पछै  
 दिअैग-अ टिचकारी दे र घर-सू चारै शर नबना । तिम भर गाव  
 बरछी आभर करती फिरनो । पामहो-ना अ बहगवा भर मीम दुरगवा ।  
 बावहो अबाक त्रिबावर क-नै आर र कुल रो कैर् ?

अेक दिव बंयो लावइ में कम्म आप-र बिचारो में गरक हा ।  
 दल में अक ज्यै कवा—आ दगा बमी भाई ! बांरी बाध र बरछी ।  
 बमी हददहाय'र उदिवा । गाय र गछे में बाध बाधन-रो बहा करी बल  
 हाकर न्या'र बधिपा 'र अयेन दुवाधा । बंग दुवा ज्यै केर पागल दारु  
 बादिबा भर गाय र गछ -म बाध पात्र ही । हिरद-म भाषा रो बग  
 राकिब ई का रुकना हा बी ।

मा ! मा इहारी गामनी ! गाथा ! ननै नदी नदी  
 मा ! मा ! आ पाम नदी है मा ! इहारा कनूर । इबा बाबगा-न नगा  
 देनवा नम्य हो'र नृपे अरे माव बदिबा ।



[ पाषाण महाराज-रा घर । पाषाण महाराज-री मा और बाइल्ले-रा घोरा ]

हे तो बाइल्ले आमा होय । नही जे उदाय से धारी छकदिया ।

बाइल्ले मे जबापा हा । माजी ! बाइल्ले आमा बीबा भेऊ ?

रहमा आका रे का खागे मो । ह्वै कइ छाहा जबापा हो ?

पाषाण महाराज-मा भाई ! डाकरी भाग महाराज का खाछे मो । बाप छे छकदिया बाई ।

ह्वै-मू छाहा पाछो का बपे मो ।

डाकरी—अहे बप का ? कइ बाता । क दिवो मो आमा मे छे र माय द

बाप छे ।

ता बुझाय का बाप मे अहे कुल पाता कुल-केवा बेदा हे अछे छकदिया बजाय देखी ।

बाइल्ले आमा राजम गारा ह्वै छकदिया भेछी बरम आमा । हुनै गली-न आमा गलीवा बजा बजा'र माद मे रिपकाय हो । माद न हो आमा बन्ने'र माद बन्ने होर बन्ने'र छकदिया मांभे बाप बाप' देका मांभे । बाइल्ले आमा आमा हमा ।

माताजी ! बाराणा म जन्मा'र आमाता जिना देवी हो ।

'बवा केपू ! म्हारो डाकरो गारमिरी है हवै कवर म्हारो ओर का बाखै नो ।

डोकरी बोखी—नाखै कमी राउ-रा क्यू रीझर करै है ?

माखी ! करक बाखै है ।'

बाखै तो नाल नहीं तो बांध खै बाधा ।'

काहै-आखो खुखो हा'र बोखो—आखी बात तो कोनो । पल खैर माखी ! खो नलायो ।

बाधा नालीजको । डोकरी बईसा देवज जामी । हर्छै-ई में दो ककड़ियाँ ल्यारी पड़ी होसी । गरज'र बोखो—ये ककड़ियाँ को नाखैनी काई ?

'माखी ! रामो करज-बै दो ककड़ियाँ राखी हैं ।

'राखी है नाखै है कमी ! बखिबो बीबत-रो बोहो कजई तो समो को हुकै-बो । का कैं'र डोकरी ककड़ियाँ उझल खी । काहै-आखो आपरो सो मखो खै'र दुरल्लो ।

[ ४ ]

पो ककड़को । तवा कज्जलै मति-खु बहै-भीतरै । रत्ता-रोखो ल्यारी हुकयो । काहै-आखो जर बेरो बीरो काहो देवज साक कजई हवै चौक-में जर कजई बै चौक-में भरक । खोम चौक चौक-में घूना तयै । बीरा जूमी बिना उपज-आखै-नै बिगा बिगा'र केवै ।

भूगी बिना बीर तयै

बै-री मा गबैवा तयै ।

हर्छै-में काहै-आखो कयै जर मोसतिबो जर बीरा बतकर किरिबा—भूगी है ।





## ५-मतीरा-आळो

‘छंड बाकी है ?’

‘और के छोड़ काचो हूँ ।’

‘के मोख के ?’

‘म्हारै कयै निहको जालेला नप् है कबो, मोठी भाई !’

‘बाकबी है गंगू ।’

‘बीक बाक ।’

‘जेई के हो ।’

‘अन जसो है तूई बीक-बे ।’

‘येई कज मुजब के हो ।’

‘अरे ! रोखत जोड़ अउर ! जोसै-बी भावको-ई ।’

‘बात बेविबा !’

‘काव-रा ? कयै अंड बाकिबा है कभी नम् ।’

‘तो हुआ बहा धारै उठे हुआ हां के ।’

‘साका मुहबेरी करे है ? डेर तो ।’

बीठ सा जावा ‘अल-बे अल-बे कैर होइ मिठाव दिबी । गंगू बाकिबा—बीक-बीक बाकी नप् तो ।’

‘जेक-इ बात के हूँ ? कबै मोख-खोख तो को कयो नीक ?’

‘हो जेक-ई ।’

‘तो को जै साजी पीक है हो ।’



## ६-चेजारी

‘इजगार लोख छै, बाबा करीदा !’

‘इजगार जयै किता रचा है माजी ! बल्ल बछगी से देव जिहा भेई है बिपा ।’

ना बाबा ! जारे न कते जिज्जा न बाबाहे ।”

‘अब देवो छै खेजारी-रा ९ ) अर मजूर-रो १२) रा महीना हाप्पी ।

‘होसी बर्ब नही ! बईसा जाले भाजा-रै-इ बापै है बर्ब ?’

‘जाप-री खुसी-री बाप है माजी ! देल छी ।’

“अरे करीदा ! राम मायै राज है बेदा !’

कल जा-ईज है माजी ! बत्ता खेजो भई तो हराम है ।’

‘नैर है ता बत्तो-ई बाबा ! पय कर काम ।’

करीगर काम जागा । हुपारै रोटी-पाणी-री बेठा दुई । मै काम जोड़ै राती लायम बेडा । डोहरी गल-में सऊ बाबा-र बोखी-अर ! हाथ काथी कावणी ! काव-रा काम करो हा कारा कावण ! जागता हा ।

बापदा छर-पर रोटी कधी अर बिजम कलावुन लागा ।

डोहरी—अर ! भी काई है बाबा ?

“बिजम ता पीदा कभी माजी ।’

‘जई मने को पायालै जो बीजी जागा जोष छी ।’

बाबा नकल-मू बिजम पी-र काम में जागा म्हा । बू हुपारै-रो राती लावाही छर-मू उमछै-री दत ।”

एक मजूर ने निम सागी । बै कयो—मात्री ! पाखी पाखी नी ।

“अरे ! आ काई ! पैदा तो रोह बसीहिवा पक्ष बिजम बाखी धर  
अबै कैबै पाखी पाखी । मात्री सारो दिन भारै कयर ह्री बैडी रैबै ?  
कब ? बाछन जोगा ना ना आव काम करै ना मने करन रे । छै  
पापको-ई पी ।”

अबै पाखी धर दुई क भेक जयो मूतय डुरिवा । डाकरी आम्पिया  
पाह-पाह जोवा अर पोखी—करीहिवा । जो पारै कुन गयो है ?

मजूर मूतय गवा है ।

ना माई ! इयै काम मुन चाह विरै अने तो इवा को पामाखी मो ।

तो मात्री ! निमापा-मूतवा ता दखोअै-इ कोयनी ।”

बच्चे ! अर ये पक्षी-बखी पाखा पीमो और बखी-पक्षी मुनय  
आवा ।”

‘कनय्या है मात्री ! मायै लखी अवर अर रीरी है अवार आनी  
ह । निम ता आमीनी कई बाबै ।’

आमीनी कई बाबै ? मिई कैहिवा आर कुंइ रैवा नी मिमिय  
पाहिवा जोकही माय मर ही । काज-मूँ बारै पारे-गुन आग जवा ।”

बाखी धर बाह करीरै कवा-मात्री ! तमाह-रो दखो विरात्ता नी ।

अरे राह ता ! जो अर काबरा अलमा अगावा

‘हुच है मात्री ! काई ये-ई अेकवा बाह-ई रैवा हा । डाकरी  
बह-बह करतो दवा बगावा तिका सीवा मजूर-रै बिजाह में आवा ।  
मजूर मावा आग र पृथिवी-आह रे ।’

अर ने मिमिया आत्रै मरम्भो ।”

आगे अर बीर दुबै है । मात्री !

दुबै बल-मो ! मिमिया कावा र बलन गुमावनी ।

काम करता-करता बच बची । मजदूरी बात-बा सस्तर-पाटी सांझ  
सक किया । डोकरी मूँडा मचकीछठी बोली—ऊह ! हजै-ई ठारन  
छागन्वा ।

तो पवै कवै ? ऊपर-सूँ बच बचय बूकी है ।

‘ठारा हुपां छुड़ी मिकसी काम करो ।

‘रीस करो बाहे रकी बारै ओकछाँ-रै-ईम को जालां हां नी ।

अब बेगा ई जालां जर हैनगी पूरी गिजयो ?’

बच बची-रो तो मरो-ई पविपो है । जवै-ई केर बेगो रबी कहीं ?

‘पावला-पावला गया तो पहुँसा काट बूझी ।’

‘करीषो ककठ र बोझियो—नाक तो सी बार काट बिबो पज  
पाग बारा कहिबा कयै कोयनी ।

माझी ओर-सूँ ‘ऊह के’र हुग-हुग जोवूँती रबी अर मजूर  
बचा बलिया ।

## ७-पेट-रो पाप

भक्तान-में बाढ़-रा चूली नहीं । बाढ़ परें तो इसी क कथा  
चिता भाङ्ग-र रेत में सफ करो । पाठ कामी हाहाकार मचिपावो । सगळी  
रें मूँचे पर भय-निरासा हृत्प्योधी । आँखियाँ भक्तान सामी कामीही  
कहास भगवान् बचैह निवाजे गइयाँ रें माग रो बरमे कइयन बचैह  
हर रामा लुई ।

भक्त परवार जे में मिथल, मुगावाँ भर राखर में मिथार सल  
जग हा मारग बें रचा हा । कपर-सूँ राख बछै बीचै पग । सगळ  
परिया-बकिब-र मुखा भरै । माँचै लारीमिवा जकाँ-में पादा समाखर  
पर-बखो । मारग बैग-बाइमिवाँ-में बिगझिगाइया करता कैला हा—  
बाबूजी ! जालो भक्तान-रा मारा । मूँची हा बाबूजी ! हवा करो ।" पण  
बा-री बात-री मुची भक्तमुची कर-र लव-सूँ मोरर-भक्ता बाबूजी  
पंडितवा भाईजी विरहभजी सगळ भक्त भेक कर मरें हवी म् मिरक  
जाता । हा राखर बिका रें होख बर घामो लही माइती-रो हवाइयो  
हाव मोड-र बाबूजी ! जाला भक्तान रो बाबूजी ! किरा करा" कैला  
हा । बैद्यतोडा मोच-सं भाखर भेक जलै हवा कर-र राखरी नै हा  
पहमी-रा मुजिया दिगवा । राखर राखो हो र पाय जागा वग हल-ई  
भक्त बहिवा ।

"माऊ ! जामकी कथा ले चिवा हुँ मल्ल मम् हुँ ।"

रें बैरो ! मल्ल नै ।"

"ऊह ! भक्त हुँ मूँगी की रह माऊ नी काई ?"

रामका म-री मरुद दक-र रामकी-रा मुजिया लोमल जागो । भूरा-  
भास म कागद कार था र मुजिया हूटवा । रामकी रोटी-राजा बूह-में

छट'र पग पड़ाइय जागो । हासको कुई कर'ह मा-रै ससो जोरो-जोरो  
 भेक-भेक बुझको पूर माय् बुग-बुग'र बाप जागो ।

[ २ ]

बाबूजी ! अकार-रौ भयो ।

'बाबू बाबू रस्ते गए ।

'पंडितजी ! भयो ।

'धेरै रै माथ बसो कीरै ।"

सेठा ! जसो अकामे-रौ ।"

कनै-कनै मिराबी रौठ-रौ समरर बज्जन्तो ।"

'बाबूजी ! जसो ।'

'मज्झी करा भार् ।"

'मज्झी मिछी खोजी ।"

'ताकाका करो मेरी केव-सँ धेरै रानी है ।"

मोरर-बल्लभ जायबाला ! साग जीव मका है । कु ई मिरपा करा बा ।

'बुद्ध भाग जायो ।"

कनै-सु मंगठबाबू निकली'र किजी कथा—माओ-माओ धाम्-नै  
 जोक-सँ विषय बटै है ।

मारा कथा कथा-काथा माजिका वन जै हरा मित्तै विज  
 बटका बच हुकम्मा ।

भार् ! म्हाजै विषय मिराबी ।

बंद न्या हीव जायो काळ थापा ।"

भूक मरां हां भार् ! पोहा मिराव जो कुई ठो थापात ना बाप ।





रक रक भावना बारणा ! क्यों माना जगदी है ।

'हामी साक्षा द्विपतिवा नेतरपाक दे ।

जेक मै देखो तो सर बीजा रवार ।

'भर माया-रै अहे तो गयो रगदाई है पार ।'

सगळी-रो निजर बंधा'र रसोद्वै बोधी पूरी'र साग है र कया—

अबै भाग जाया ।'

बाबरा'र सुगाया रै पांडो-बजो बानै भूषे-रा डौक हुबम्भो पन  
रम्मछे-रै बाप-रै बापदे रै जाकिपा जाही मन्दाकी जाय रही ही, मन्-रै  
मारिबै मापी बूमतो हो जर मरीर हरो-हरो जलो हो । पय भा बात है  
कई-नै को बठापी भी । सगळी भ जेक जागा बैठा'र भाप बजार जानी  
हुविपो । रामछी धडी कर'र बोधी—'हुई बाळ-सू काका ! मर राड  
कै'र बिदे-नै साये छेछी । मारग-मे है काबारी-सू जले जले-नै छेयो—  
हो बिना-रो भूको हु बोधा काव-नै विरा हो ।

'बाळ बाळ रस्तो नाप ।'

'बाबूजी ! बिना विरा हो ।

भाग माय ।

महाराज ! जेक पइसे-रा बिजा ।

बी देख बडी-नै सैदा पासी जा ।

झिड़की'र अरुआर सैतो-सतो बापको बजार पुतिपा । मन्को बूम  
रयो हो—जाकिपा जाही रस जलो ही । डोड सूकता जाया हा । हम्भ  
देहास होव रहा हा । जेक हुकाबदार नै पुडियो—मिठाजी काई धान् ?  
दुकममळ'र बिदे-नै पांय रो बापू जाल'र कपिले-री डंस मर रै बइछे  
मवा सेर-रो भाव बतम्भो ।

'छो बा मिठाजी ।

किछो ।

जेक सर ।



## ८-धरम-री घेटी

कामसिखा काज'र मंडळी मस्त हा'र गुडघरां उदावण बागी ।  
 इत्तै-भी-में अक जना बोखियो काज'रो मागण काय म्यो कु म्यो मगाबी  
 अस्ताइ । कई जना मागेई बोख अडिया—बाजबी है म्ये तो काय हमै  
 केन बाखा बी हा । तो पछै मंगल्यो कनी कोई मुरत चुपलो है । भा  
 कै'र हाट ऐणीसी इस पयिबा-रो लोक खोर काज'र मोलीचन्ग बीसिये-रै  
 मामो कैक'र बोमिब-बडिबा-सूं बोखिया माख खाये पैसां पाव छिये ।  
 राह-रा । मज्द रै खोम में बै दिन दाई लबी बीब मज उदाय खाये ना ।

‘गुडघर’ कै'र बीसिया जल्य बागा । इत्तै-भी में चम्बाकाज बोखियो-  
 सिखा के छिये समझरां क ? मिन्दी में जल्य ।” सै सानिबो फाकिबो  
 चीजिये-ने उदरेक रवा हा । इत्तै-भी में जायस में बल-रा मिससिखा  
 मुच कुवा—

‘जात्र-काज मज बीन थावगी

काज कोई ता बंजना हो क अक जना भुजिया-रा बुरो में  
 बांजना हा अको मज खोल बिबा ।

“दावेबा कुल जाये चुदी है क माची ?”

अस्ताइ अवाट राज-ने त्रिबावर बिबा बाली है ?

“काज-रा बिद है रे ।

‘ये रामब-ने बाल्य हा बेर-रै यह बाजी दाव भावगी । बल्य  
 छिना अक म को र कबरावण खाता म्यो मज-री मज्द साम्य चेदो ।



अक ना बाहर बजार-मू चाखी ताखी चीज छापो जर  
 ता मोबा रामचन्द्रियै-री हार-री छप्ला भीन क्यों छापो-यो ?  
 नै री बुझान ता बीच हो बाबूजी !

‘आप पगारा-जी ता पूरा बजटावुर हा ?’

मै इस पढ़िवा जर मिठाजी काऊण जाना ।

चीज तो ओक छम्बर लावो ।

बाहरे भीमिया ।’

बेरो मन-मौजी है ।

‘पल करम-रा पावो है ।’

बाबूजी है-तमास्ती-री पगारजी बिसकावां हरि दिन ताकी हो ।’

मनै ता बाबूजी ! लाखी कड़ाकन्द ही दिवा ।

देखिबो’क ? बेरो किसी क जोखो बाबू है ।

बाबूजी ! आज तो मज बाकै-बाकै जावू है चम्पा बारा रात्रि  
 ता’र गाय बाँहा सोरो ।

बक्य है राँह-रा किसी सुगली बल उड़ाव जावा ।

क्यू लुसी-रो बल-जी बिहै भी मुहदा ।’

बल तो बावड़ साची-धी कपी है । हकी आपो माक उड़ाव  
 जर बा नै बाबूजी नै बिगाड़ू को मिछै नी ।

‘बाह रे उस्ताद बाबू ! जै ता आज बाहरै करम-रा फक है ।  
 कोई नी-रा करम बरक सखो हा ।’

‘पल जेर भी ”

( बीच-में-धी ) जर करमो-रा उस्ताद ! कय जेतसीजी ।’

‘देव मा सदा ।’

‘ये विरामयन् सदा कश्चिद् द्रुपदा ।’

‘मित्र-नै-की छाया-रो रीति है पर्यं सदा रै किम्बा टाकर कटके-ई’

‘ता सदाही । आया-नै की कुंई गरीबी-रो मदद करनी चापीजै ।’

‘आया-नै ता कोई संग करण छाडी अथ दुकहा नाक देसी ।

बहाय-र कुल राखै-में बनें ? अर साथी ता भा ई कै-कै-ईसी ।

कलैकी कोई समा-जाओ तो कलैकी काभी अन्तरमभाया । केरा पत्रगार

बाक राखियो ई ।’

ही कैव गवा-आवा देवी-देवता आवा अंतरपाछ ।

‘मित्रा मा करा सदा ! मित्र-अमारा बाधा ई ता कुंई पर

उपगार करणो ओपीजै ।

‘रामूजी ! ये उम्माद् किम्बा पीसना उठाव छावा । मभा किरकिरा

कर दिवो ! मरण हो-नी समझी संग-उबाव-नै किम्बा रमर मूनी द्रुप ई ?’

इत्ना रामूजी ! ये माभा-नी बाप्ता काम करे ई पुन बरम-ना ना

मिम ई ।’

अजै उठारे ता निहलजी भाओ बल दादा दाद बैरणी ।

‘किमी ?’

‘कर्यं सदा यमा दुबै अमं यद्व देवी आप-र समारति बय

आवयो । अउबार में ता नाथ बाव आवै । कदाप कुद् इण्ड बरै ता

बादो इ देवान-र पिन्हा पाडावै । बाकी समानाका आप-नी लांका

अ-र ओरो ।

‘इहै ता भा जी करी ही उम्माद् ! ये जानी कयबो ध ओ इहै

ता इपकहा है । हुँ ता बांघ-साव नखवा-नै बाव बूम-र गळै बाखिब

रागु ई ।’

अमं काम भी करणो बहका द्रुप जा ।’

काम करलिया माई रँ उरूआ-री बड़े कमी बाइ-भी है-बाइया  
मिन्नी कोयाचन बौरा आयां ता किबा नृतकन भर चाम म्हाता  
माइ ।

पण जिम्मवारी तो भजावति ऊपर भी रैबै है ।”

“हसी समा-रो सभावति कुछ बूझन बजै है ।

राम्मी ! हू तो कबू हू ये-भी ह म्हा बोवा माको मृतक  
जावै भी कोबनी कदै कु भी या कदै कु भी ।

“मायां-र तो भूच कमलकोर मिन्ना नै बां मावळा-में ताकविन  
उडावणी ।

“डीक है पण ता-भी कुई बोवा-बनो सुचार ” ( बीबने-ई  
बाय कायंर ) म्हाडी-में परकी भी जावड़ा सुचला-सुचारा-ने । बा-नै  
जा भावबाली बच किम क्षमाप ही ?”

“म्हारो सौमल बाने सगळा रगडा-उंठो मिन्नावा बहमा । भाया  
रँ तो बटे-ओ जावनींर ताकविन उडावणी ।”

“कुई रंग बो हू-ई जाय लो जोम पूरा काम करै कोनी । जामै  
जामै जिन्ने नै-ई मरनो पवै है ।”

“अद-भी तो कौबू हू पिछव ी कनै गुर मिन्तर क बोवा भर भिवां  
म सदा-नै कृपिवा बवाला ।

पण उरठाइ ! मय मावै कोबनी ।

“जवां मावै कोबनी ? मोवड़ी तो मा सुजावली है ।

“काम नू भायां-रँ तो सागी कुईजामा अवंगा मरु करो जिन्ना  
महानै मरु तो राम्मी नै सांती मिळै ।

“अर हूतो उरठाइ राम्मी ! बाने भी करवा पवैवा कोई समा  
बमा जाको जामै तो कै विवा—जवर तमिषत डीक को रैबै भी  
हावावर विमराम केवज-रो कबो है ।”

उस्ताद् ! कुछ बाझणा

( बीच म-द् ) अचै भिषा रंग ब भी मठ जमावा । बावक  
राधा हरिचंद मग बणा ।

“गर बाबा ! धिया-री जागा नु कुछ बाक छ-सु ।

अचै काक गठ-री ऊ-री बारी है ?”

‘अब छै श्रीगजस रामूनी-सू-भी हाल बा ।

‘नहीं उस्ताद् ! गोट-म काकतु रुचिवा

बाबा जी भै धिया-भी करता रहीं । ही काक भिया-सू जी  
मरुवात करा ।

“माछ कोइ ?

तब जावन से । ई काक रमाइये-में बुझाव र त कर अर्बुका ।

रमाइया पछे भी खम्बर जाबोज । चार्न रुचिवा पांच-जी छरी ।

पल हूये पछानू लरच करण-सू ता तब काक र मोक पर गरीबो  
रो महात्मता करणी घनी बाड़ी ।

कर छै भापा गजामी-वा लटको ! हूण गरीबो रो मदद कर है ?  
मन छपरखी दुष-नुषी बजाव है । नहीं बण सेठ माठीकाछाओ कर  
चदूसाछाओ दाभा जणा कोई दम जाग-भै जान का बलाय सकनी ?  
जाग हैलतै री भोड़ी बारयो बिज-री मंगाव भी है भर बिना  
बोर है ।”

“म बी है ! जाला मै ता भिना-भीज करवा जाबीज क कोइ  
दपुटेसन बपुटेसन भाव जाव ता ११) २१) २३) घनै सू घना दब हैला ।”

“ब-ई बबो वग ?”

नहीं अलर बुजिवा-में रवा दो ता बाड़ी मावा री जगल है ।  
कइ दार म



सैदा ! कजे तो बां चिंठवजी कजै-सू भासा के छिया हीसै दे ।  
 'जै पका पीर है ।

"नहीं उस्ताद ! पीर नहीं कीर ( कजूस )" सगळी ईत पमिया  
 रण-रण-रण १२ रा हलकसा भुज'र सगळा बाकिनी काह कर ।  
 बड़ी-रै सामो ओपी म'र पीरे पीरे कितकन कामा ।

[ २ ]

प्रामोक्षिक-री बूझी बाज रही ही—'आमि बुझिया-में है हम तो  
 उबाले के छिजे खेबले-हुदने और बत मबाये के छिजे, रोमपी सुां  
 रोनी ही रहैगी हरबम हमने तो पत्ता कबम हुसले-हुसाले के छिजे  
 इसी-री किछोऊ-रा पुंगसा हूर रहा हा । बाजू-में बारजे पाठकी बाज  
 हल १२-१ कजै-री डोछी काह जूभी । बाहर केज कागा—

भूला हां कुंर म्हा भी दराओ ।"

'बाज बाज ।"

बाजक मूण्ड है ।"

'के दिवा हस्ता बाप ।"

मुज है ने नार्इबा ।"

मम् बक है ।"

काह काह साधं मे । काई बीज डोक से जाम्नी ।

कई सू रग-स मग करण जाव बमिबा ।

'जमे काग हा

ओलमीओ ! के कब् शाबनिचै ने कुन देवो हा ।"

( सुनी भजमुनी कर जाये कपूर ) कहा है कजै-रा राज  
 जवाभी है बागे पुर्ज कागो ।

बालक भूषा ह ।”

ता रहे कोह करो ? कोको जाली आर सोपा । काह भइ-ना-दे  
ग्या है क है ?”

विजया बहना । त ना जाली कामा । हाह दिवाज बिना रह ना  
ता है बब रता । कह बालक की है बिबा कर हा ।”

हो, रहे ना कोमिवा हो कावनी र बिबा म पैछा दुराव हा ।”  
तत हागे गुम ह हा जका कर बाग बाबा घर बा जया—जया  
। । भाई ? कय माया जयाउ हा

“ ना बालक है हाग बहना कर जया ।”

नाह म बालक मू य बला हा, जका धो-न पैछा कामाव हो ?  
है क बा हा बालका । हा ना गरीब हा दया ? क है  
हो ? भी । अर कयो हा बब बाज ना गमती र य गवा कर क  
र कोई ।”

“अह है अह बरत, जालज अह बिन घर दिवा

“बिबा मय बरा । गीब है म हा बागहा । बहाव देवा

ब ना गमती र म हा हा । भी । हवी म ना दिस-म माकका

मा आँखियाँ भरती-भरती बालक-नै गोड़ी छे छिया अर मगछी रर  
बासियो । बालक-री मूली-र हरिबाड़ी आँखियाँ रामू रै हिरै में लुल  
री अर दो कण्ठमणो हुन गयो ।

X

X

X

X

‘माध ! मूल मरू हूँ ।’

‘दोव रुबियाँ सादी-रुँ ही की बेरा ?’

‘रुँ-रुँ ! मूल मरू हूँ ।’

‘बापदा वो कियो मकरा मायन दा मैमछी री मा ।’

पस बीजा आदिमा-आदिमा-की मोकछा बकछा दा । बार रुबि  
है छहराँ ठाँही धुल-सूँ को बैच होमी । आठ आठो-री भा बछा हुनती  
मगछी-री मा ! कियो आँखियाँ देनती दालर मूलाँ मरै ।

‘रायाँ कर्तुँ आर बरै ? राम भयन गयो ।’

[ ३ ]

कुरी झरती मरती । भऊ कुरी बरैर चील मारी छरीर सोव-सोव  
हुन ग्या । आँखियाँ-सूँ माँसू पदन बागा । बड़ी टन-टन कर ७ बज्याँ  
रामजी-री आँख लुकी । लपन-री बरना सिमेमा-री शुधळी रीज-नी  
दाभी छेक बार आँखियाँ-रै जागे कुरती-सूँ घूमयो । मायो मर-मर  
काय बागा । आँखियाँ बयन बाभी । मरीर मरती हुन ग्या । आ बा  
मायन बागा—गरीब बालक माया भूमा रोटी-रै हुकड़े-तै तरमै अर भै  
बुझै बिगाव र माक अडायाँ । हिरै री कित्ती तिरावड अर लमाण-ना  
छिया हुकसव है । बापदा दादी ‘बिर-री हरिबाड़ी आँख भरी  
आँखियाँ

मायना-मायना मायी आर न बरीदा मारन बागा अर आँखियाँ  
मू गंभी ओज नी ।

रामूजी भीड़-नै माय-रै हाथ-सूं घाल'र कपड़ा बाँट रया हा । पल  
बिचां-री आँखियां भीड़-में कभी नै बूढ़ रही ह्यी । बज्जलरी भीड़ रै  
निचर जाय रै बालू भेकाभक बिचै-री निजर कभी अपूर पड़ी । अपट'र  
भागो मायो घर जेक पाँच बरसों-री खोरो-नै गाड़ी में उदाप'र  
पूछिबो—

‘बेटी ! मिठाईं पाप्पी !’

‘नहीं कोली लालू ।’

‘नहीं मिठाधी ला बेटी ।’

‘भू भू ! छाली ।’

‘नहीं मिठाईं लालू ।’

‘नहीं कुत्तो लालू क जालै बिबै दिन पूछी लोच छी ह्यी कनी ?’  
झारी घर र देलख जागो कुत्ती कटै भी माचै-ईं तो नहीं लालू है ।

( माचै हाथ देर'र ) ‘छाहू लाली मैछी ।’

लालू

झारी घर बिन रै घर भासां-नै माय-र घर में छे जाय जागा ।  
जिसे भी में कारे-स काई बडहा उडावता बाँझियो—

घरम-री बेटी बज्जल बिबा, घरम-री । ? घैस-रै आँखियां भूं  
भरी आँखियां-स झारी-रै मामा बाब'र रामूजी बीबिबा—हां घरम री  
बरी बजा-मू अह-भी गाइबाक पाप-रा पराछोन होबैका ।

## ६—सिखमी पूजन

{ १ }

'मा हुई नूरा कववा पैरम् ।'

'परासा बेरी !

'क्यों ! जद भा बकली-ई पैरमो कइं ? हु-ई पैरम् ।

'पू-ई पैर बेरा !

मा ! म्हाभि-ई बराका दिरा ।

'मा बेरा ! कक जाव । तें देखिबो को हो नी बापा-री होव  
कानै-री बेरी बकमी हो ।

ऊ ऊ नहीं । जद रचामछै-री मा बराका कबो दिरावा ।

तैका ! छेई-री देकादेली नहीं करवी ।'

जे मा ! बराका नहीं तो पै सरप-बाखी बिकविबो-ई दिराव दे ।'

हा बेरी ! हू जिन पर-में सरप-रा सुगम हुव करे ।'

हीक पर-में बकिबो पय अदाम मन-सू । बाबर बाप-मै घेर'र पकाका  
माधन कागा । पय मा बाबा ऊमी-ई जांगली करी कडे-मै देकर  
तै-रा-तै पुन हुव खा भर हाकै-होयै भक-बोझै-मै तैग-सू केबो—  
मा केबो ई पका मा देव ई भया ।

{ २ }

सिखमी घर-में होवा सजोवा । पूजन साक बापूक कूँकू कादिवा ।  
भीर को घामन कमे हाँई कइं ? इरी-में हो हीक बाबो । सिखमी  
कबो—पूजन-री सामगरी लग्न है ।

दे-रो पूजन ।'

खिलमीचीनो ।

‘बारै-स बत्ती खिलमी और कृष्ण कुम्भी ? पण तं मापण ।

‘मा ! मा ! कुम्भी दिव ताकाय मण होवा । मैला ! असा-रै घर-में काव-रो कमी है । मिय पर बाळा उल भर काव-रा वृष्टका ।

‘तू किती-हू बल-मै हाव । तिरहे-में भेक हूक उठै है । काई दावरिया बिबल्वा मंडा किये पूर पैरिया बैठा है ।

‘ता बीमै पांच-पचास बारै मावळै मगल बावू कमें जब खेला हा । प-मी ता कबो हो कै बा म्हातो पका भावका है ।

‘म्हातो तां है पण हू हावद व-रा कोबो । तू मोकी है । मगल-रै भांण्यां कायमी ? बे-तू म्हाती हावळ कुली है । जाल दे तैर ।

गोबळूक वेला कुम्भी । होक खिलमीची-रा पूजन करण बैठो । कपो—मा मा ! तू मा हो-र पकरात किचा करण खागमी ? कटै-ई सममगरी-न। हाठ जर कटै-ई मायो तिराळ ? मा ! आज किताक भारी माफी पूजा करसी ? कोई कमी-मै हाव र पूजा-रो हाठ जचासी तो कोई वृम-र काळै बजार-रो कमाजी-रै पईछा-री सामगरी खापी ! कोई हाठ-होव-रा व्याज उपजावळमाळी पूजी-मै जांयो बावसी ! तो कोणी घरज-मरजावळो बारै कुर्जा-रो हाव बछमी । पण हू ! हू ! कोरी सचाजी-ने बारै । कैठा-कैठा को पीप पदबो । जव तै मचै मचाप सचाजी-रै और की दिणो ही कायमी तो हू-ई बारै भाईक बडामू । वव जर मन-रा कळ भांण्या-रै पापी मूं कोव र बारै चरण-में बडामू । मा ! कवा तू म्हाती का घेद जंगीकस नहीं करैका ?

[ ३ ]

बीजे दिन होक दुपारै दिन-बदिनै ठांवी निवाल्क-में पकिचो रपो । खिलमी समझाव-दुष्टव-र सितल-मोजन करावो । पण बा

पाखा भी जाय र बिहान-जो-में पड़ गया । छिन्नी पड़िया—ये कैसी तो  
हूँ दो-चार जागा पगे पड़न साक जाय भाजू ? हेर तो जायगी ? बाँ  
जाय तो बहा-बूहा और ठरे मानसी । हीर कबो-तू ठामे  
कहर बखी या मायै अब भी थोछ छियै । म्हातो बित्त म्हाय हूर  
रयो है । हूँ मूँहो जिबा पड़िया हूँ । छिन्नी डुरगी । होर बोझो हेर  
कु भी छोचयो रयो । जाँच म्हाय जागो भर बीर कपर कर छिन्नी ।  
ये देखियो—घर-में दूध बालगो होय रयो है । रविपा-री बिरला दुप  
रयो है । या घर छिन्नी बल-नै मेळो करण म जाग रयो है । जोयन-  
में रविपा-रो भेक चौलो-बीछा जिगो दुप न्यो है । ये दाम् दुप  
रविपा बजायै है घर हंमै है । छिन्नी बोझी—अबै आपो-री कलठ  
सुचरी ! वो बोझिया—अबै आपो-नै कुन होन समझ सके है ? अबै  
जिन्नी-नू कमली को रैवा वो । मगन कहे-अबै आपो-नै बोझो होन  
ममझन लागै है । बेतै देखाव देसा के न्ये पजीरो-नू हीन हाँ मगन-नू  
नहीं । हला दिव पड़्यो जिना दुप बायडी ही । छिन्नी बाँच बखी  
म्या । हीर-नै और-ना ताव बह रयो हो । छिन्नी मगन-न  
बुझाया । वो बेद-नै केर दौड़यो म्या । हीर बुलार र और-नू  
बेखर बह रयो हो—अबै आपो जिन्नी-नू कमली को रैवा वो अबै  
आपो जिन्नी-नू कमली को रैवा वो ।

मगन दिन ताँद बुलार बराबर बलिया रयो । छिन्नी बायडी  
बबरायगी । मगन दिन-म राज हीर कर्म बेदा रैतो । रात-न जो-भी  
बो जला बरा । या मामगन रात भर भा भकखी छिन्नी । कलै-भी  
बायडी पग बावती ता कलै-भी मरीर जलनी के ताव जिना क है ।  
कलै-भी मुदा मामा ज । र दुप-दुप भाँसू बावती । कलै को-भी  
बीजा पीरन बंजान्जिया-भी का हानी । हाथ बलबल-रै काँदा जागे  
माय करै म-काभी मिरधिया हंगर-नू गुदग्या मार न बह बोझी ।

मानवें चित्त डाकिये बार-सू हलौ पादिया—बारै आलो । निजमा  
 बारै गई । डाकिये कैको—बारु ! बाबूजी-नै मेर बांरा दयकल होमी ।  
 हीरू खिलमो-रौ हाथ झाल'र बार आलो । काँयदे ९ डक फल होर  
 डाकिये नै पूछियो—काँई ई ? कोई रमिस्सरी कोरस ई ? नहीं  
 बाबूजी ! यशमी दराओ घर बाहर गियो । काँयरां भाइ ? डरबी-रौ  
 कोररी भगी ई । खिलमो-बी तुडा ह । हीरू माया झाल'र मोचल  
 कागो । कै-ने पाइ आलो कै कै बल्लर भायां बेछिया-रै दयाद-सू  
 दपिया आबार बार रिगट छिया हो । को बाहर गिल्लम झाला कै-रा  
 हाथ बूझल कागो । काँयरां भाइ निरियाकां भायो । माया धूमियो भ'र  
 को बम-सू चिल गिर पड़ियो । डाकिया यशराव'र बुझियो—का ! बाबू  
 जी-रै काँई हुपम्मा-ने देखो देखो काँई हुपम्मा रे ! मगल मन्त-री दैस  
 भाया भ'र भा रचना दल र पायां पगां बैदजी नै बुझावल नाडा ।  
 खिलमो सैगर्मग हुयोहो हुग-हुग जोप रही-ही अर चियै-री जाँचा  
 माँव-सू झर झर र मोची रा दया अकल पति-रै बगां में पड रया हा ।

---



# पलमे-रो माल

[ १ ]

गरबी दार। दमी तुगा। १। जीव भर चौक-में वारा-वहा सगर्म-न  
मन बदलापुथा-रा कमनिवा दा। इवां गम माक्यी दी वन कमेई  
कमेई ना तुहने दा कनहा गु बार भाव जाग। मने कानो-रे भां  
धु हो गला भा-मारावक-री देह। वन माईती-री जमी माक्यी दा  
जिई करर मए नव लख भावना दा। गुगत-नीकद पर वा दारो लभई  
मक मग पैम मागल माह दाह-गाह स्वाह हो बल्लो। कमेई-री मा  
दिवाक दिन गुहाज मबल्लो। भागर दूहे-मे दारै दाव घाम-ई जिबो।  
मावर-मीमई-ना काम बहिबो। दारै दाह भोझाओ-न गुलाव र दोष सी  
गजर दूहई करर नहिवा कदाव र काम नीवुव चलिबो। कनिवा मु ई  
मावरै-में भर मु ई पर-नयक-में भेगै खाना।

वा बाव तो को हो मो कै दारै-रे जमी-बार कोई को हो को।  
रामओ-रो दोष दा। मक केरी जिई-रा मोद गोपल्ल सीक-बार बोना  
अर मक भीजै कैटे-री निववा बहू। वन जिमी-धु-बीक-बारम-ई को  
मिळती हो मो।

बोही-बोही करर पांच सी गज ममी मदासे मेधोजती उह पर  
वसम-ने पीती लामो अर मातर मक दिव केई दिमल करर दे-ई  
दिवो-कनो बाघे मक्ये जमी गुलावा हो। कुई साध र ो काम  
किवा करा।

हा। ते किली-ई मदिसे में मकक कीच मो। भावो बमो-ई  
ममक-बार-री पूछती।

‘हूँ किया धाँगी मना करूँ हूँ । हूँ तो कैयूँ हूँ ये भे कबाड़ा करा  
हूँ न क्यों हो ? राम-राम करा र बाछ-रोरी घर-में छुई जिमी ब्यादा ।

‘काई बूढ़ उठे हे बार ! मनी पूछो-ई हो’क मऊ हूँ क मोछू हूँ ?’

‘बाँ-मै छिप्पी-ई बार कबा कै म्बारा बूयो-कू का मल करा । पण  
थ सुजार्ई ही का करानी ।

बारि कबो-मू कोरे बरे ? तल बूज पूछै ई ? घर-म तो तुगाबो  
ही राम ई ।

‘यो मुपार्वा-मू कोई मगलब ई, म्बारे मामा जोषा ।

तू कय-कय घर म रैबै ई । ला रे माई ! भारे न करो छिश्ता  
न बाधेरे । आपो-रा निजाब पारी बहू जागे को बुझै भी ।

देखो काकाजी ! मामा जायो । आगाँ-में हंसव मल करतया ।

कापि-नी हंसव ! ‘कबा बह-बह तम्हा घर-घर ओ-ईं येवो ।

तो बई तरे मालो-ई । काकाजी ! को हूँ पारै पगी-रे हाथ  
बगाळ हूँ ।

‘अपना-मै तो म्बारा बाँच करिबाँ-रा महीमा दे दिया कर ।’

हमी म्बारी कबी क्षीरम्व कोष नी ये जावो-ईं हो । जागे जाय’र  
मने मिछै तो लार्की पहरै कपड़ो ही ई । बागी क्या थोपै कबा  
निचायै ?

‘तो बपु मने बडे-मै भाव र कबा संताबो हो ? अर पारै देख-  
बेवक-मै काही-ई कोष नी तो हूँ म्बारे जवै जिबा करमू ।

काका ! पहरै करिबाँ में भजा तो बारा-मारो निजाब कर छिया ।  
देखो मामा जायो ।

ला रे माई ! मादा कोष-रे नीचै हारी का प्यास भी । ये जारै  
भर उठे म्हा’

और धीरी मरजी और का बाबू ली । पल में एक जगहों । बा  
करे गोपाळ होरै मन-सु उठ'र बीर हूथो ।'

[ २ ]

गोपाळ बेकसी बेडो बड़े-भांगै है । दूधवाळै-रा मांझर दाम बहना  
सुवावना है । बेसी जगहों । पल भरे हा । बाबूवाळै-ने कोई कसा ?  
म्याङ्गवाळै-ने तो साफ-साफ कै हैसा कै रकम बाबी-गली कर लेयो ।  
बाबूवाळै-ने बेक-मक कर र सारा गया हाव ! डाकुरजो-री  
मरजी ।

कई बकली-जोकर-रा पईसा रामसा पसारी-रा है । कपियो बरा'र  
है हैसा । पल कपियो-रा तो क क-ई सूक ग्या ।

गोमधी आरै-में बहली-बी पल बाता सुवाव जातगी । बाबियो  
मांघ कोई बीजो मिमल दुरैका । कियो-बी-री सेरी मांघ-सु ओरै वा  
भांगै कोई-न-कोई । गोपाळ बेक बारोहै ठकिने-रे सावरै बेकापार  
भीत सामो जोव रयो है । बा बोली—किन्-सु बाता कर रवा हो ?

तहीं तो क्य ?

दूधवाळ रा म्याङ्गवाळै-रा कई कै तो रवा हा ?

नहीं जी-री मरमवा है ।

'जानै किसी बात कपो कै बे सोच-किकर मठ किया करो । पल मे  
किसा मान जायो । मन-ई-मन बाता करता-करवा गैका हो जगहोका ।

'नहीं बाबूने करा हा ?'

भात्र मूहा कठरिबोका किया है ? बाबूवाँ-र रोवाङ्गी बात  
हीने है ।

अमुने द-काळजो पंरीज है । मक-में कई-रा-कई योव

काल बेमोहनी-रै गयी-ही । हावा जाही करण-म्ह मान ग्या भर  
क दिपो कै सामान हुं लोक हेम् । बरिपा होकै-मुम्है ह्य दिपा ।

'तू मोकी है पत्ते मात्रवा निकळैछा । हुं जानू हुं रामदा-मै  
किताक पाणी है ।

[ ३ ]

बीक-मै रुकही बैठी प्यावा-री रीति-रिवाज पर खर्चा कर रही-ही ।

'मेहन-बल है मीच तो सगळ-हुं सीद्दायै है ।

ता आ गाटा गुदकसी कीकर ?

'आहार मिळसी जिसै ता ह्वा-हुं गुदकयो रैनी ।

'पण ओपार ऐसा कुण ?

'डाह-बोव रा प्याज कमावजिवा कमातू है जक ।

'पाक्का बम्बूकी ?

'घर-दापरा-म्ह ।'

'जब घर मोहवा काई गुमावली हुआ ।

लाको जला-हुं बपारा ही कहुं करा हुं नी ।

कहुं करो ? आपनै समाज म धनिया-अधमनिया सगळो-म अहक  
रा बजीर्ण हुयोवा है ।

कहुं करो र उस्तादा ! सारतैक भावना मीच र अकारो किता तो  
गन हैदा रैनी ।

'ये ता त्वाह हा'क ?

भी हो ! भां तो सगळा जगसह्या चर दाक्या ह्या-न-ईच बेंच  
ही । हसी झ हुती तो हू पर्यसा माथै क्यो करची ? हसी कै'र मोम्यो  
दाबरां सामी भाक्यां काही । गोपाळ बाबैसोक सैव करी हसी-ई-मे वा  
सगळ ही जग्य ।

छिळमी दूबदाळी दूब देव'र चुकिचो—सिज्या-नै दूब केवोळा  
काई ?

केसां बाई ! पावमर दूब दे जावा कर-गोमची क्यो । गोपाळ  
पावमची समो मोव र बोळिया—पण ?

पण काई ! भां-नै कौ दिवा ना क ये वा भां-री मरीर-री किंता राक्यो  
धीळी वाट-रो फिरर बोड हो ।

छिळमी-रा वाव काव-ई दूब-रो केळो करण-रा बेंचो हो ।

'तो कर देस' ।

'कटे-सु ? पारै नव किसी जाल है ?

'बाबै काई ? हू म्हारै कवळी ऊपर कविवा कवाव लागू ।'

'बस कवळा मर कोरिचो जै-ई सुबला-रा होव जाला माळो  
बकिवा है । रामाजी-री मरजी ।

काई दूबदाळी-नै दे देगां कड चर-री विस्तारक-मे लाग जाल्यो ।

'अे काळ बाईपै बाळा क्यो मेळा हुवा हा ?

'सावा भायब-नै ।

कडरा बाविवा

माव सुदी-रा

जवै तो खांच जाला-ई । वज भावां काड करसां ?'

'सगळ करमी जिवो-ई जालां करसां ।

तान-ई ?

काल बेनाई-बी-रै गयी-ही । हाथा आड़ी करण-गू मान ग्या भर  
५ रिचो के सामान हूँ ठाऊँ देसूँ । खिया हाऊ मुम्तै देव रिवा ।

तू म्येकी है पड़े मानवा निक्कल घा । हूँ जामू हूँ राममान-मैं  
किताक पायो है ।

[ १ ]

बीक में रुकती रुकी ध्यानी-रो रीति रिवाज पर खर्चा कर रही-ही ।

‘अहा-बाबू है मोथ ठा सगळ-रूँ सीदाबै है ।

ता आ गागा गुडकसी कीबर ?

‘आपार निक्कसी गिरी ठा इधो-रूँ गुडकना रमी ।

पथ आपार इसा कुल ?

हार-दोष रा ध्यात्र कमलजिवा कपारूँ है बक ।

बाहो बगुछा ?

‘घर-दावरी-सूँ ।’

‘अनै बर माइया कपारूँ गुमानयो हुआ ।

जाली बली-रूँ बचारा हा कपूरूँ करत-रूँ नी ।

कपूरूँ करो ? आपनै समान म भजिया-बलभजिया सगळ-न अहल  
रा अजीर्ण हुआहा है ।

कपूरूँ करो र उन्तादा ! मोपरतैक जोकवा मीच र अपारा किथां ता  
मन बेहा रैवा ।

ये ता त्थार हाक ?

इधे-अै बीयो-रूँ कपूरूँ है ?

‘ब अमनजी ।

‘मैं पड़े किता था मू ज्वारा रैसा ।

‘आ नहीं हूँ मैं पछी जिरी बन्नाच देवा ।’

भूज । अठे रंग मञ्जीरिया ईश्वर है ।

ता पैसा ‘भारत उदाला ।

‘हां है ता टीक । आ-ई काई लूट है अफो सगी-र बर-भू पत्त-  
सत्त पैरा नारेख बालवा ।

‘अफी-ई भैर बाबा ! पन बटै ता गूंगो बाकी ह ।

‘अरे मक्का मायसा ! सोच-सोच’र आ-ईअ काई साची ?

अरे ! ‘बरी बाझी करो बरी ।’

नहीं उदाला ! ‘बरी बाझो तो रंगको हूब बाचैवा । पार का  
पडका भी ।

‘तो कचे पार ‘जाग’ उदाल’र जेक-ई राख रो ।

जिता-पूरबी बाळ है । बाळक तो-

किया कलाला करो हो ? अतो मज्जो-रा करवा जो दाई उदाला  
अरे हा भी पार का ही हूची बभो मांगीबाधा हो । कैवत-मै-ई कैवे है—  
बल्लत ऐक’र गही निममे अचम बाभिको मीवार ।

‘बरालो-बरावो जेक-ईअ डीक है ।

जावक हूवा मठ करो, दा तो राखो-ही ।

‘ये तो मुकदे-रा कम कोम’र पैवै हीका करवो चाला हो । अरे !  
हू कैवू है ‘बरी’ बाझा नहीं करसा जिरी समाज रसलक-में पूजल भू  
का बचैवा भी ?’

बल तो सोचो कबो हो । पन टकावला कियो मालमी ?

बार पड जाली कै गही बला आ सोचा ।

‘बार पालक-री नीमल हुमी अमे ता पद-इ जाली । फुलवा  
अडागे म ता काम को बाझा भी ।

‘तो घाँरी समझ में बरी कितै-री हुजो जोईनै ?’

‘घाँई कोई ह २ ) री ।’

‘बपी है ।

कपड़ा-कपड़ा समझ ।’

‘अब ता कई बपी कोब नी ।’

‘बपी कोपनी, यारै केवा-मू हू ? गरबा हो आवेजा । बरी ह  
) ३ ) रै माँव रालो ।

‘पम उस्ताह ! कोक मावपी कीकर ?’

‘समझा-सा ।’

समझासा आई ? पैसा या रीत धायाँ रै घरा मू बजाली पवैला ।

ता रे उस्ताह ! जाग सत्य को बरैबी । पवै ‘हुजब-हुजब-री  
सावब बैबी बाप्पी बात हुब जावै ।

बाजनी ह । पाँच-पचास आवसियाँ-री गुह हुब अब काम बाछ ।

‘अब पार बजनी धावपी है । उहीकतै उहीकतै काकाँ रा बाका  
ता हुब ग्या ।’

‘सापी बात है । उहीकियाँ ता काम का बावैबी ।

अबै धायाँ-री ता जेकको-री हिस्मम कावनी ।’

‘बस ! जीगबेल-म ईज चूक निकलपी ?’

‘ता ये ई जवका बच-री ठेरह कर जिबा हू बहा हैमू ।’

‘अके-म कोह कारक पवै है । मावै पर पावपी घर मू है कपर मूदी  
रालो हो ! मूक’र का बाप्पी नी । अठे बीजाँ-रा घर ऊवै पावपी-मू को  
बाजिया है नी ।’

‘रग है ! रग है !’



‘देखो काक ओक आगा मेला हो’र सारी बत्ता-री बिकान-पड़ी कर  
लेणा । कर्क-रै पर में खाव हुनै बानै मै-र-सै समसावव बावता ।’  
पच पंच आवा बरैका ।”

‘हो तो बाको क्यू बिकर करो हा । कम्ब हकमानबी-री  
बरोधी में बाव बड़ी सिम्बा-नै सै मेला हो जाता ।

‘डीक है । डीक है !”

[ ४ ]

ओ तो अडीनै बिसमिबा कर बडीनै चौबटै जावता दो-तीन पंच-नै  
खोगा पूछिया—सुनी क बड़ी ? सुबमक खोग मर्यादा-री पुरानी  
परमावका छोड़ै है ?

‘तुम ?’

‘आपा-नै-ई मावका ।’

“सुबको करो परमपर-री खोक करै-ई मिरी है ? हा दिन बाहरवा  
बचार है जाती । पछै लागी बांठा कर सागी दुपहा ।”

“रोस मल बिना, बाव तो नै डीक-ई केवै है ।”

‘कई केवै है बरो-रा गुरुका ? मर्याद धूरक हा कई ? हवा  
हरपूबिया-मै-ईव मावका बनी ?’

सबाम-अबाव हाते देख’र मोकका कम्ब येका हुम हवा कर आपरै  
अपी बिसी-ई सुबकी केकम कागा । पंच सागा-नै आप-नै रग-में  
रंग-री केसदा करता रहा । बत्ता पैर सक हुनी—

बावपी है बाकर ओ दला हा । बां बनी देखी है ।”

“मकाई कई कबो, कुबोतो तो बनी बालगी ।’

“कई है कुरोठी ? मिठा-पूरवी रीठ पर बावको कई कुरोठी है ?



‘पक्ष के बोझो-ईक कोयली का नहीं बने माइया है ईशो-तो !  
 बाल का पक्षाघात दो भी ? केदा घरम-री शोष-वृद्ध तो जानै-ई कोरने  
 रज वैदा सुचारक—बीगलिया पक्ष ।’

‘आली कौनो हो आलाखी ! के दो-चार बीछी दादीबाल्य हो  
 जिली ई के दखिया बैठा है नहीं अबे के तो गाय छे ।’

‘आपी तो मर्छेण-री बरवाकक करै-ई को छोडा नी ।

‘बोडसी बका गरक में जाती केदा ! म्हातो तो भी ईक केयो है  
 के सलातम बर्म इबनो नहीं आलीये । आली-ई ककलुग-में बरत-रा  
 ठीक बरत तो दूख ग्या है अक बाक-ई बाकी रबो है ।

बोझो सलातम बर्म-री अब ।’

( सलाक बोरे-म् ) सलातम बर्म-रा अब ।’

[ ५ ]

‘आ कर्छु करो ही ! के-ईक इबमालजी-री कोचीबाजी छिन्ना-बही  
 न तोड़-र छपा बाकक बाल ग्या ।’

‘कर्छु करो आकसी है । बर-में केके है—चार बाकं नहीं देवो  
 तो कुनै-में बड़-र मर बाक ।

‘और पक्ष के तो बहा रहा मयकजी !

‘कर्छु केवा नर्छ । आलाखी करै है—किया-दरबी रीत कोके तो  
 है अमक गाय-र मर बाकै बा ।’

‘के सुलजा ।’

‘‘महारी-ई मा करै है—तू ता पूर उहावकी बाकै है रज म्हाते  
 बीबरी को उहावज दू भी । के नही माके ता बर बोड-र मोमर बाक ।’

‘‘अबे आता बही करो बही ।’



काम कर'र दो दिवो-अबे म्हारै कराल को दे नी । गीमती जागीरी  
सू बेवो-बोका लो ओर डहर बावो ।

धन-ई डहर म्या ।

'पल हविवा-रो काम लो हविवा-सू-ईअ बचवा'क । अंता  
किवा कोई बटे ।

'को अब मालिवा बोल म्या अब धारै हाक अताबक-ई रवी  
'काम सरवा चुक बीसरवा बेरी चुक म्या बैव ।'

'तो न्ही किवा कोरा हविवा रत्ता ईअ गर गुक सूका ईअ ? हवि  
चुच कोक'र ऐसी बच'

पल-पल धनै बचै नही-साजन जसा कीजिधे को बचुवे दे  
बजाव । पछे ई अकलिचोवो बावो अकालको-ई होम का ।

( हिकको-रे हाक अगाव'र ) 'कई तरै-ई माव जालो रामसा  
ऐको पचमो मल गुमावो वा ? के कोई कोक को हो नी ?

'पल-सीवा तेरी बुझाक क मेरी ?'

'तो बे-ई बलाभी कोई

( बीच-में-ई बात कअ र ) समझ म्या ! वा ता सारवक होकत  
ई-नी । जाज मजार्ह-री रांड बकत-ई को रपी नी ।

लोबक-ई अक ता नोकरा नही बीवो डैव मावो । घर-में क वा  
बिजवा करे । बेवाच म्हावा बचवा-सू लावै । जाल ऊपर कई घर-न  
मरम्मत करालो हो बेरे दामा-बै-ई कसीगर मजर कर बूने-बाकीबाव  
रोवा फिरै ।

जेक दिन गोबक डरजो-डरजो घर-में बचिको । धमो ऐकै हो लो  
चम मजर घरको दिवै बैठा ई । हरी-ई-में ईअबक-रो आदमी धाव  
कको हचै-रो माजको कर म्यो । बम-सू बाजियै ऐको पाव'र जे

सिक्खरी छिपाती दिवा । गोपाळ बूझतै हाथो आकिया-रामसा-रो  
छोटस । हाथा ओढ़ी कर र पगाड़गोरो-नै वा यछिवा । जी करान  
हुब न्यो । जेय हो हल्लत न्यारी करान । काहूँ बेद होसी नाठियो ।  
नाक देख र बाळ-में सळ बाठ'र बैद कैयो—साबनेठ रवा रात बिकळयो  
होरी है ।

‘गोपाळ बहरापर मोवनी री मा-नै केवा—अबै कोई हुसी ?’

ठाकुरजी करसी बळी ।

मनै बाक कोनो भंवारो हूँ-अबसा होसे है । तू कन्हूँ कर रही है ?

‘ठावर-नै बास्ता पाहोस्वा-सूँ भानो मांय र छापी हूँ भर रोय्या  
कर रही हूँ । छप्पी-ठबी रोसी के-हूँ कायबो नी ?’

‘कायबो ! हूँ करसूँ-ई कोई लमै तो ताबै-रौ पईसा-ई कावमी ।  
जेय-नो बल्लत हूँ कोकर होसी ? हा देख ना अल्लकाल-रा सोघो हूँ  
जीपीजै जा । पो-गुळ तो घर म नीब-नै होबैका ?’

मोवनी-री मां अतर में आक्या पू छज जागी । गोपाळ बीछियो  
तू बावची काहूँ करै । प्रानवत छिन्मी ही । पज म्भारै करै आप र  
काहूँ सुन को ऐलियो नी । छिन्मी पीरज बंवावती बोको—हिम्मत  
मय हारो । गोपाळ बोचो-रै छिन्मे-सू आक्या पुंसय जामो भर  
आकियो—हिम्मत ! भर किसे भर-री हिम्मत राजू ?

मोवनी-री मांनै एक बात उकली ! पय सासै-ई के-रो मू को बीकी  
हुब न्यो । जी करको कर र जोरै म गधी बूझतै हाथो पैटी मांय-सू  
एक सोमै-नो कडो काठिया भर पाहोवज-नै छछाप'र २ ) कपिया  
के आपी ।

जेय इकका कावय जागो । बीछाजी मावा । पीता गुसाहूँ बल्लत  
खी । मूँदे-म तुळसी-बराभाष्ट दिवा । छिन्मी अल्लकाल-रो नीपो  
अल्लत हीको । गोपाळ जार-सू ऐकी मारियो—काकाजी !’ जेय

धमिली कोकी भर पाकी-ई मदा-री वास्ता भीच-की । घर-में रात-हुई  
मज न्यो ।

[ \* ]

आमां आमां बातां हुन रही ही—बापई गोपाक कने कई हो ?  
देव-ई था का दूही भी के तू कटे-सू सुनारा करसी ।

कोचदा-ई उतां ने पीचदा लावण-ई-ई मुतकन ।

‘कई बात महीना-सू निकमो बैठो घर-में बाहर-डोकी कर’  
२ ६ जीव लावणवाडा ।

इत्याद [ बां-ने कोचदा जीमते दूधा को लायी थी ?

पकी-ई लायी भाई ! पल जोर कई चाखे । देहा-बाक राकन-री  
कई-री होमय कोचनी ।

‘रिम मरी करिबा, जी माया-री नहीं कमाया-रो कम है ।

किताक दपिवा जाना हुनी ?’

ये-ई कछु चम सौ-पाच मी ।

‘पच दाम पिपरा मेका कर बारह महीना-रा डीमल तो बाकी-ई  
बहिषा है ।

ता बापदा मर देसी—‘बांकी मिरलनी भर दूधकी भर लायी ।

‘बां-ने सोचना ता मावीन कई बजार कमायी कटे-सू ?’

‘बर नदाल मारीछा ।

जी बादा ता दूध मिरल र-दू गयो है ?’

‘बर-न दामा-दामा कीदा है निकमा म्वाता बैठी है । ये कोचदा  
कई जीमता है मायी दूधा ता गाय-र मूँदे मायका बास काह’र  
लावना है ।

‘इसमें कोई फायदा है। माथे-रु भालों-की मेहरबानी-में बाप-की  
कमर टूट जायेगा।

‘यस इतना कामी करै-मु ?’

( निमग्नता मात्र ) हाथ-की जाँच ।

भाऊस नहीं जा कोई रोज बाप पड़ो ? भक्त ना बन-की जीव  
जाये बीबी करके-सु रत्नर पालनी-में कुटीले । मरदा बकिरा बुद्ध  
इचन-में जागो को रेबेबी । बी कोई बाम है बका मरिवा धार  
जीवता-में है जोम जलजो ।

करो बी भापड़ी इस कुली-न बंध ।

इस आचक ऊ पालका मग बग । भाई मर दाव दिवार  
काम करा ।

तू तो बाप-पड़ो पादे है । कागे बिक-ने बली है ।

मैं तो बीबी तरे सु बिचार कर दिया । दाता निमग्न-मु बक्त  
तैबीगत करली ! जा रीत इस कम-में बी-हुँ काली ।

है माथे-रु ?

हां ! कोई-रु घर-में मरली हुनी-मु बैरा बाप-पड़ो, बी दाता  
बाऊ-में बाप कम-कर-र बी बही ब्याप कर बेंदे मरदा निमग्न बुद्ध  
नहीं जाये इस बास्त बैने लेकली कम दुर-रा मर ।  
इस कावका राल-में-हुँ घर-सु पारे बाकी मरदा रद दुर है  
घर र मरदा मरदे मुदे है ।

ता इस सु कोई हुपा ?

‘भायो मुपा ! जइ सारा जना मेका-रु है  
बाता । भापगे इस-में बाजरी-वा-हुँ पाल हा  
मिछनी ही । जइ बाजरी-वा मीचका ह



'बूढ़ी'र साग ?'

'पड़िया कटे हा ? बीबड़े-में ई लून को बाकया हा बी ।

'जमे तो जम रो डकाडो-ई होवती ही ।'

'अरे ! बिछै-रा दिन कायना हा स्वादिवा बीड़े-ई माँवता हा ।'

'मैं तो सुजी कै किछको ई देवा हा ।'

बूढ़ै-बड़े-बै । लको-ई ककया-ककया ।'

जगावण ?'

'गल्ली-में घर-घर बिछाया हुआ हा । कोरे कड़ी-रो तबको बाक देता  
हुवेका सनै पूरी हा कोवनी ।'

'ता लगी बाघो-नी कु बाघो तोवानो आवही या कुरीत ।

जावक बहो । दारै-रै पैडवाळ ताई जीमा-जोमाजी ।

'ई तो बी-ई मौन-रो जागो ताव होकारना । वन नेर यमी पुराई  
तो दण बायी ।

'जमे के मगको हवे होम-बै ठोडण-बै ता स्वार हा क ?'

बराबर ।

'बन डगाडक मन करी । ईताबया सो बागका । परम् सुगर्भ  
काहे-र यो लमळ भेका होष र भाखी परद मीब'र से कहली ।' 'ठीक है  
-ठीक है क र सम्रा जय जय-आदरे धरे जागा ।

[ ८ ]

गलाक गलाक बार बीबत-मीवने-री या ! धरे बिजाय हुन्ने  
पारा है । या पीडन बंजलनी बाडी-दुषा बहरावा बाज बाये है ।

ठीक नही पवाराई ? बिजगो आइ डलतो जाग पडका गावे  
है अर जावने-वा गान डका कर देरे है ।'

मगवान सगळी भाङ्गी करमी :

“करैछा। एव हा बही मै-ईं कछै मगवान-रो कोरी बिबो है  
अको म्हादै-ईं माथे ऊपर दुख-रो दुगर काप परकिबो है। जाकर  
काम्मबो है भाडो तो कोपनी।”

‘बिबो कोई उषाम करमी।’

करमी कठै-सू ? जापरा बरापा दुख रहा है। कोई पक्को-ईं को  
धीपै है नी”

‘बही इत्ता दुखी मत हुबो। बोरी लौकरी छ ग जाम्नी।

अदीनै जोरा सन जाम्नी। गवाडो रक्क-रैली-मी खँची भाप जाम्नी।”

“(जिसाम्मा बाबू) बाबूगो ठँचा ? अथकछ तो खदिबाहै छँड  
ऊार छेकड़को तिराबोई-सममे ”

‘तो कछै करी ?’

‘अक तो मन-में इसी आवै है कै धानै बिना कवा सुनिवां अेक  
दिन अठै-सू काको मूडो कर जाम्म ”

(रोवतो-रोवती) ‘ना-ना, धारै वगाँ-रै हल्ल कगाऊँ हूँ। बोरा-  
मारा मेकाई दुख-सुख काट बेयाँ। एव मनै खेकड़ी मै जोहँर ना जाला  
परा। हूँ मुन-मुनँर मर जाठँचा। कारै जोडा-झोडा कीबा है हूँ  
सुगर्ज-रो जाबज हूँ। जारा कवा थिललै रो-ईं साबरो को है नी।

‘बस जो मोह-ईंज तो मारै है। अवे मँ-सू जपमाव सपीज  
कोनी। बाहरे संसार ! ना जापै हवे-में लगाऊ निर्धनी अर कबार ई  
मरिबा बदिबा है। हूँ ककै बाबै मामै भूषा सगाऊँ-रै अठै नाक  
राग अाबो बय काई इस सू मय को हुबो नी। सारा बख्ताव-रा दुख  
म्या। किबो बिबो-ईं तो लाली मोडो ऊपर। जवै ता माई बजर दुख  
ब्याबज आवा हा. अवे पक-ईं कोबबो मरो हो अ नीबो।”

आपनी-से भगवान पर डेरा रोजगार ओधी-से ।”

भगवान-री बचा-मू तो काला कही-ई हूँ । अने तो सबे सिक्का  
रे आने-मू दर कागज काता ओ है । देखे तू-तो म्हारी-ई रैबैकफ ।

(आमू पूछते-पूछते) धी-ई इपां कैयल जाग गया ।”

आ म्हातो नूछ है । ते बारही मं भाव-कूरो-से पत्नी-रे बारे  
आम ” गोपाळ कीस पचयो ।

गोपाळ रै बेहरे कर आंक्या-री रंगत देपर मादनी-री मां घूज  
उठी । वन बचरात रै अचारे में कई बाव डेरे माते में बीजकी री  
सकप्योदिवा मारगी । डे-रा मूँडो बोधी बोधी डेरो-मू बीजो बीजो  
अर काखो हा र शरीर ओका ओष हुच लो । ओरै-ओरै डकभी लहाई  
अर सपचापना पापु-ई उविचारै ऊपर माया । ना छट ओरै में गयी ।  
किबाह डकिबा अर कई बीज पेरो मोक-मू काह र लावा-लावा पय  
बचनी कुम आखे कटे परी गयी ।

[ ६ ]

गोपाळ-रै घर आगे आज मौसी भीड़ जाग रही हो । चियै-री बेदी  
रै स-मरेवाळा बरयो दे'र बैठा हा । ओइ कई कला हो तो ओइ कई ।  
अिता मूँडा उछी-ई बाला ।

गोपाळ-रा पल डेर अक उनी बोम्बपां — ‘माळका । कैई रो  
बलमा नही गुमावना आबो-से । बानी-में से नगा रबै है ।’

जाव-रो गुमा'र पराबै-रो बचनो की रल्पी-से भी सरदार ।’

‘बरायो पूज ? मगो मयेरी अइ हुबै है ।’

‘अइ-ई ता मोकका बरमा-मू मइ में मू ग बालिब बैठा हा । वन  
अने म्हारे न्यायन कावलो । आकर बाई मचापकी ”

( बीच धरुँ बीजा जग बान दार — 'मूँहें मोचम भोयी बान  
मही बाजनी आयोज । काहें लाव'र को मरिवा है नी । दान्य मरिँ बा  
बाना हा बदा है

भीर वसै कीकर गान ? दान्यो-ना मुबान बाह-बरी । गीत  
बदर-हैं बरिवा हा काह ?

मोना जग हीम गाव र) — य आगवान घना जह-मू गावना ।

"जै उद ना बगाव हा बज बाह बेरी र गीत-म दान्य को बाजिवा  
ना ? जै धवा धीन हूँ बाजना । अह ना गीत बकार ग्या उदर मू  
बदा है गारा गरी गुन को ना ।

गज दान्यो गावनी — य काहें पृती म दारहें बदा हा । य ना  
दान्य बा

हा गी दान्युँ ना हुबना विरहाज — उद-हैं हुमी-य दान्यो बरिवा ।

दक हूँ र ना-यवा — बाबा बरज जै दान्यो बदाव दिवा

दना जवान मभाज र बाबा — अह काहें पृती बर का धारना  
है ना ।

गुन । कथा बाबा जगन है — य ना 'दमय अदा दमय बदा  
बा र — य बाबा बजे — हूँ य गुनाव को ना । गजगुन

# नरमेध

## या

### समाज-रात्नीरो

[ १ ]

‘ज्याण करसो समीची ! हू तो पारो गुण बीवठी-हू को मूळ बी’  
 ‘वहीं माळका ! म्हाई इसी काई बाण है ये तो सोरा सिरदार हो  
 ‘मोरा तो ये करसो जह हुसां हनें तो ( निमासा नाकर ) पर  
 सुई हलका जहर बूझ-सुई हीन हो ।’

‘गुण बीवे है ? जे जिम्मा कावक सिरदार जियाक है ?’

‘आ बारी कावकी है । बाकी कनेई म्हाई चौक बीसिया पवारो  
 पक्षे देखो म्हाया भाई काई बीवे है ? पावरो कने है—वेरें-मैं कलक-रो-  
 कलक कर बिचो है बीरा कूरा है जिको हनें-मैं बेरी रूचै ।’

‘हाक ठाई कबरजो-री इसी कमाई काई है ? है तो जाली पाव र  
 पवदे-ई बरसा-रा क ?’

‘काई करा ? हमनें मात्र मारीज प्यो वही जनें म्हायो जगबिचो  
 आठ-बरती-री समन्वित नव-रो जह सुगमिचो तो बूझ-री-ईज  
 परजीविचो हो ।’

‘जबके बडे जालां बडे-ई भाजक जाली है । हू तो बीचूं हू म्हाया  
 करजवाळां रो काळा मूळां घर बीजा पग कुचै ।’

‘सिरदार ! कनो बरो हो ? डाकुरजी साम बोली करसी ।’

‘म्हाई तो ये-ईज डाकुरजी हो माळकां पारत-ई पग पकड़ां हो ।’

बारै आगे-ई लोको बिज्जावां हूं । आज डाकुरजी रै मंगलवार ह ।  
 'मंगल मुली मदा मुली । धर तिय लीज हूँ । बिन दूखवा मूरत मका  
 वा लेस वा लीज । आज-ई सीरो कराम हूँ । बबान लोह दो । छंकी  
 मकाइ मरजी जाये अइ किया । मेह म्हारा हाथ पग ता सोम केवा ।"

( हुसतै-हुसतै जर अइजासां रेवतै ) म्हासी घूइकी लो छोरवां आगे  
 कई ई के घना-गैवा बाळ -ने-इज परबीजीस । हमे एका मीजी !  
 कदाय मे घना गैवा बाळसा लो आगछो बारै धरै जाव जासी । नहीं  
 जल क्या घूइकी ?

घूइकी अब बरसा-रो छोरी काई कमस ? 'हूँ' केर बारै नाइगी ।

अबे सगीजी घोड़ा आर बैठा मिथर सुखनार्ह-ए बेदी-री मां-ने  
 बबो— बीनजा-ने बरी इसी बदायां जिन्हा घना भाई दलमी । म्हासी  
 बेव लान टैवइ कर राखी हूँ—सो पीगइ रो-बीगइ तिमजिया मे  
 बबइवां-बबइयां बभइवां जर अकाऊ सुरक्षिया-वत्तावाळी मारमीह्यां ।  
 बेव्य के कैई री हाथ ता हुमे कायको मिराह ! पल म्हारो बाज मे  
 लो कैइ-मू-काइ पाइ का रवा बी । धारी-रो मां राखो होइ बाळी—  
 बाबो डाकुरजी ! मकां बारै गन्ध-री काई कमी हूँ मोतीबासजी-रो  
 धर हूँ माराज ।

धारी-रो आमा आगे मिरकर बाळी—नहीं हुला-मूइ काम का  
 बाळीगी । म्हासी घूइकी मे लो काईबिधा जना सुबाये हूँ । दलमन-रो  
 काईबिधा दग'र कवा करे हूँ—म्हाल लो काईबिधा बाबो सातरा  
 काये मासी !

'दलमन दल ?'

हूँ बाबजी म्हारै मापू काई-री बेदी । आगे दलमनदल रै  
 बबइजी मे बरनार्ह हूँ बी । सगीजी ! कवा जनाऊ ? 'जा पीगइ-रा  
 पीगइ जर मूँदे मू बाळ जिया हूँ ।"

“याही है वही मित्रर कमाव क्यों है ? म्याँव-मगाईं जोमर-  
मोसर रीन-रफावा जे हूँ तो नामा-कमा करम मे । म्हासी जगरी बैन  
जेने है जे म्हारे तो जे-ईज सुकदवा म्याँव है ।

‘जारा बैन बड़ा जावक है जारै मित्रा कियोक हुमी ?’

पल से तो म्हासी बैन अर बैन ही बूही सामू-रा मारा कराव हो  
म्हारे जावा-री माल राखा जवाम साव हो । ( जाला बच'र बच  
पकरी है )

इथां मय करो । को जा जवान साही कधी मय किया ना ।

गाम्मती हरबाँवती कही अर गाम्म-जावा पगाँ-मू बर काली डूरी ।  
रस्ते-मे जै-नै सगीजी-री पाओसज हीरकीजी मिळी । जिधे-नै समी  
हकीगत कही । ‘सूँ-रौ काम दे’र सगीजी-नै हब-में राखज-री  
मोखावम ही । वा बोली—इमे हबे-में कोई करक पड़े है ? करकारै  
कोज्ज मराम देऊँगी ।

[ ६ ]

हसरै हिम हीरकीजी-नै कामैसीक सूँ-रिरीजी । पाछाजी-री  
मुट्टी परम करायी । अबे क दोष्ट जना बटी-र बरबाज्य है दवावक  
कामा । जोरी-री मात्तो पूझिया—कबरजी कौई मल है ? जोझाजी  
क्या जगज-री लीजी पोबी पूरी कीबी है इमे चौपी जेसो । हीरकी  
जोर दे र कवा-ज्ये पक्षे काई हुमिहार हुबो-ई समये । जोरी-री मात्ती  
हसर कबो पल कबरजी-रो कामको जोझो है अर जोरी दोखरै हाव है ।  
कईई । बोक-म-ई बाव काम'र हीरकी बोली—जो-हो-हो !  
जिम्मी बाव करे है । जो-रै बरबाज्य सगका-रा जवाम जोझै कामबे-रा  
हूँ है । कबरजी-री दाबी वा बकसा-री बकमा है पल बाहोजी है  
जेनगड्डु हाई ।

जो-ई ११

कागरी ना-ईं खगाईं है । हवा बस दूब ना ह काई ? बड़ो बड़  
 बड़ा भाग दारा खाइ पया गुवाग

भार भर अ साकोन अचरी ना ?

हाइ हाइ । अठमावठ ? उदा । ना दणा ह भी बान बूक है  
 मन । दारा गण पना दख ह भर अगरी ही तीका किलाव-से भय  
 ह । अछे बवा बाबीअ ?

हा दिना म गव दणा मारा दूब अछे दूब ना गरी माकका  
 बलाइ दूबो भर पदका-नी मन हा रछी प गयी ।

भाग दूबव बाक गुल ही दूदरी बल भूबडा लमवा भूबका-ना  
 भी हा भा बी भाग मदगी बा बाको-हाल नाइ ना बार बायी-द  
 बबवा भुव । हीम है भग लमकर भाका भी बान बलगी देल-ह  
 बागिबा भर बन हा बिका भागका-ई भाग-ना हाप-नम माये ।  
 भाद बरमा-ना गुम भ बा है उदा । माग ली हाबन ई बरका । अहाम  
 होर । बवा उदा । मागव है बन कागदे बवाई-बवाई है भर  
 अ साको भ बवा ल का द-ईं बागीका बागी-ना मा भर भायी  
 अक बीअ ह भाका बावा भर बवा हली बल है ना भाग दारी ही  
 ब ल हा बवाई-बवाई ।



बोझ है मैं तो हरिचो कोबची कोई सुन सेसी । मैं तो म्हांरी छिरी सिरान  
हैं पत्नी छपर धर अप्पचां हां । बारी बैर-ही सोऊछ संगान रेमां ।

दिव कोबचा किमी बार जानै ? सत्ता बैरों जानो । रामछै-  
मा बार दाही-री भीड़ बडधी । सगळे-रै मम्मनै झोगा तो बाल जाना  
जानै तो नौ नारायण-री देह करै तो कोई करै ।

मोलीकाबजी सगळा-रै दिखवचा-रै हाथ जगता छिरै पण कमि  
कुण साजै । सपाई-सूं पैछां तो जाले निबेबम्हा कैठा हा म्हांसूं कल्ल  
कल्ले में मैं किछा ल्वाहा हां । पण मोछे छपर सगळ माछे कळ जा  
बची-बची कासिस करनै पर पर रै मानै हरिबा मिथिबा । मांज क  
काने कै कदास घगा-नै हा नहीं बड जानै ।

सोबी बी जाना । उछरचां गैना बडालन-री सजा हैरी । कं  
हरिबा रोक दिबा कर बाची-रो हिसाब सबै कर बैरन-रो कनो  
तोळ-रा लंबू कान्निपोडा हा । छपर-सूं दही बैकान राखी ही जान  
कनो-ई कान्नी कोबची । पण जमळ-में कनै मभूता-रा गोला हा ।  
बडली-रो मांज माही हो ।

हाथ-काम केरीजिबा । हरिबा जर-बेक कर'र कच होबड जाना  
ध्यांर कै सनै मांड कोब पर कै सनै कोळ कोब । बरी-री मोरो बर  
कोबी पूजी-कपी बीनो मूं हूरे तो बीकर हूरे ।

जाकर बरी-रो दिव नैको जानो । परसूं बरी है । कनै कोई करसां ।  
मूरे जाडी फैलां आबगी । तावडतोड जागी । जाकर रामछै-री मा  
माली पर मामी पचावड कर'र जळ ओ सुकसाओ । छिमछिमो बोरिबां  
पर बाही-रा गैना तो सीबार बड जानो । बाली मोरमोडबा पर  
कल्लपां मामीजी बागुबम्भ भूषाओ कर कांडखिचो मामीजी  
साधिवो । रामछै-री मा कचो-व्यांर-रै पछै सगां नै बैबाप देछा कै  
गैना लेबास बड'र जाना को दोनो छिम-सूं बीनो-रा मांज लोब र



## [ ५ ]

रामछ री जो घर बाहो पंजाम्बी-में जावला । अडीसै लाख बडीसै  
करो । रामछै-रा सातरै-बल्ल गला बैसल-सु सुकर ला । सखु कैवल  
दिपौ-सोनार गहा घड़'र कानै जका है जावा लर बुरी-में चाविला जका  
है जावा ।

कडीसै रामछै-री मापी सूबा भर मापी प्रकृत बगाही करै । बल  
साथी ही होय-वीन महीना-रा कबो हो जको चार बरस बोलला  
लखलख करै तो कब ताई बरै ।

बीरै बीरै घंघो पूछल जागो । मापीजी, धूमाजी भर मापीजी-रै  
बरबाळ-न हा पड़यो । कबै क्या हो ? कछै-रो बीर बरखो ।

बर-री कछै-सु माफी-नाक जावर सूबाओ रामछै-री मा-न  
मूँहा-मूँहा कौन जाली-अबै कस को चकै भी चार-बोख दिवा-में महीना  
उबझी कर है । इहाँ रीना कोई जावका-ई तो दिवा को बानी ।

‘जका क्या बोला हो ? जावका-री कछै बात है ?’

‘हो बहै कितक बहरा ? महीना-रो कबो हो बरस बीत ला ।  
बोत-नी मा-न कोडी-में मूँहा बाबी बल हुबानी’ ।

‘जावा हो । वल म्हाते बगु तो बल कलबी ?’

‘जबै रोय-बीकर बैठ जावा ? ना मौजई ? सखलखी-रै बहूना-री  
बाल बल रात ?’

‘हो ला सखलखी-ना बहूना रवा'र दिखित हा ।’

‘अह म्हा काम करिहा जको लोछ कियो ? दुनिया म बजाई तो  
रबी-ई कोयको । जल दिवा जका ला देतिवा ।’

‘अन-रा अमासिओ’ पहाप हैसु । मितल मितल-रै कस  
का जावला दारिदा नी ? म्हा-ई करे ई ला काम जावा हुमा ?

—कम आवा म्हाता बाप । भारी लसम-री कमार्ह-रो रक-ई का  
बिप्यो गो ।”

‘ता बत्तरे घरवाछी-रा कज्रीववाहा तो मग करो ।”

‘तमे पूय खेला-हुत्ता भारी काज के भारी बगो-री काज ।  
घरे भावां तो घरवाछा कबकी-म्हू कावे अडे मूंडो खेवर भावां तो तुं  
रिक्क का ऐपे गो ।

रामल-रो मूवा हुक्क-हुक्क आम्हू नलग्न छागी । हरी-ई मे रामके  
री मम्मी भारी अर बुद्धिबो-मगोत्री । आज क्यों बिरात्री हुबो हो ?  
आम्हू पूवर्णा-पूवनी मूवात्री कपा-पांरी देन ममे गो लावगी । रामछी-री  
मा बिग'र बोखी हो । हु तो डाकज-ईव हु । हु ता मिमली-म-ईव  
लाव हु ।

देगाबिबा क ? अकूध बार कटवाम्म-मे दहे ।”

मम्मी बोम्मी । होय मा किबे बाई ! हु तो बार उबडो करज-मे-ईव  
भावां हु । रामछी-री मा कबो अक उबडो म्हाता भी अर अक न तोहछी  
हूया अजनी कबो बोखी हो येव । आज काज करत बार वरम  
तो हुब गया ।

‘म्हाता गारो हो ।

मही बाई कमूर का म्हाता-ई हो ।”

हु ता कबू हु बीजवे जो मय्याव म्हाते त्रिबमिबा । म्हाता-म्हू  
म्हाता-म्हाता बलाप हो । आज काने-री काई हीन भाव म फिरकही  
परैना कहा हो ।

बैल ! पारी नागार्हू इत है । मार'र रोबन'रू को देखेगी ।

“रीम ला इसी जाले के बागी पड़े बीरू देखा ना सगाई-रा  
तेजा पावा बगाव हैक ।

“जो हो ! इसी नाक-री पलिवली हुवे अकी लो क वे जार्ह  
कर देखावे ।

‘मे अही कर देखाऊ ली म्दारे नौरे-ने बाक । रांझा येही होय  
कायगी ।’

मुन्नाजी बोली-हालो भी गोमती जी ! कुछ सोरी सौजन्य करना-मु  
सुनो । बां-रो राम करे लो रिपा नहीं अबै थे-इ जालो-पीलो ।

[ ५ ]

मर्बे रामनै-री मामी-री बारी जाली । बेरै बणी पृथिवी से लो कर्ह  
रकम बाई-रै रमई-दरे-मे कसार्ह का है नी क ?

‘क्यों ?’

‘क्यों कर्ह ? कभीतबाबा हुवे है । बाई-री नयन आल-जाग  
भांखती छि है । केव है बाई सबासयो-रै मैना ऊपर बेरै-रो प्वांन  
छिचो । बा बारो-ई बांन लेवे है ।’

“हेमी ला नरो । बां-रो बैन हो-लीन महीना-रो कबो हो अको  
बरम बीत ग्या ।

‘नय, से लो भारी कमालो को देवीके ?’

“कई लो कसाला-ई है ।

“ममे बिना पृथिवी-ई ।’

अको बिमो म्दारे पारे बाकाले के क म्दारी ।’

कंडखिचो ।

‘हुबोय दिवा कम्मीपार । मूंडो बखिचै-मै पूक-ई को जामैनी ।  
हू तो बीकर-ई म्हारी विरी विराक हू भर लनै जामो रोपसी क्यों  
जातो है ।’

‘तो कोई हू लावगी ? क्यप-ना हुनहुनाओ जमाओ है ?’

‘जगाव खिवा कारै बीमिया ! मने तो ९ ) रै नीचै देव  
दिबो’क-

( बीच में-ई बाज कट्ट’र )— ‘घात्र बेनां-बै तो दुखाल जावो ।’

हां बस जो-ईज काम बाकी है । तू-ई क्यों जायै परी भी ?

‘धोरी जोरोडी बाईसा-ईज करमावा है कै का तो हू-ईज भाईजा  
जर का बड़ी बार्ह-ईज भावैका ।’

‘पण क्यों ?’

‘काज बेनां-बेनां बिदमिद खिवा ।’

किसमूडी-ना कम-ईज इमा-ई कजै है—घा कै’र खिचो  
कबवा पेर र बार निकखिचो । बार्ह-रै खिलत-खिलत पयां-रो पानी  
मिळ्ळ रवो बर कही-ई बभी गरज-बुसाम्मद-रै बाव जोरोडा  
बाईसा मनिवा ।

राम्मछै री मा जाँक्या भरती बोकी—किसमूडी ! मं काई मिनख  
का मारियो है भी जको तैं कयो कै बड़ी बार्ह आवै ता हू का भाईनी ।

‘कोई करो ? राव-सूं बाव मखी—किसमूडी कठर दिया ।

‘हू राव कक हू ?’

‘म्हारी तो मामो कपलक-री बम्मांग बीप भी । हू काँवत-काँवा  
बाव जोहू हू ।’

ओहो बर्त ! केर कर ओहमा ? नगर हल ओह दिवा हूँ  
ओहै-ई है । हमै रबी मीझाई जको केर दाब जाइ हो । कोई कर  
महारी रीह ही कूट कोबनी दे ता सगळ नाकी-बाक जाम म्या ।

महामो नाम बोच ह-ई कबो केबो हो बार्हो ? रीम-री ह-मै  
कोई बल है, आप री बिलस हो पावो मोग सी-ही ।

‘हूँ किसी बात’र मरगी ? महारी हलै दिव-वका हसीअ है । पर  
मै बाही माही कनै तने-रो बहमो कोबनी । पुत नीबहमो । बपनै  
देज ऊपर सै बाझा बाझै है । ओक काली ब्याज बाछा पत्तो काचे है  
तो बीजै पानी दे बरबाझा ओमका ऐबो हा ।”

गोमरी कील पड़ी अर बसका मरती बानी—हुल अववावत-रो  
हूँअ जावै है । ओजर्त ! किसी रीज सुज’र ऊपर दीकिबो अर जाड  
मारी जलही-मै भुक्की झाड लो । कारै-सू रामको धाचो । नारी ऐबे  
है तो आत्ममारी तुक्की । राम मिछमो । कडीनै-कडीन ऐल’र र । रा  
ओह अर बाबछा-री कोही-नै कोती-री बांग मै तुकोब’र बम-बम ऊपर  
बलिचो । मामी कवा-जीमले बवा ! ‘दिसा-अगम-सू विपड’र जामू-  
आ है र रामका ठा तितो-जेका मवाज लो ।

[       ]

“कल रीह गैवा ।”

“गैवा म्हार कनै है कोई ?”

पा-री मा रीह लनै-सू मांगवा । नही अर ऐलै है’क सीरो ।”

विठ-री कांथ-री रीसर । ओक दिन मार मूर’र विड कोडाचो ।”

“ओ रीह मामी बाबे र बिसरमी ! लेख काड छेवती जावै,  
नही जने जी काड नाबूका मने बाबे है’क ।”

“कई कवा गैज का मिसौमी ।”

को सिखैनी क्यों ? चारै बाप-रा है ?

गैबा खैसा-ई हा ता परजोबिया क्यों हा ?

‘सक मसम-नै बां उहदाबैसिधा-नै लुवावज-नै ।’

‘आ पारै-ई घर री रीठ है । म्बारी मा भेक भक सुई तक सीम’र  
बानवानै-अै घर रानी है ।

राठ ! लहूया मनै-ई मैजा । खे पारी -कै’र रामखे  
बूंदी-रै मसै-मै भेक साठ जमाज सिबो घर गुदको पकड़ र बीसठे  
बीमनै बोरी मणचै-म् चारै काठ ही । जक बीक बिकळी-बीबो मारै  
रे ! कोम बाग रत्नारान भेका हुब रवा । रामनै-री मा सरम-म् बमी  
मै गवगी । दाही माथे पबी धामू नाकली-आलली बाखी—दैर  
परमायमा ! मनै बगो उहलखे ।

[ म ]

रामखे री मा अयास बेठी घर-री इसा ऊपर बिचार का लयी ही ।  
भांक्कां झर रही ही । रामखा कटै-ई मरकल-नै गया हो । दाही-नै  
ठाव भावझामू । बेह-नै काबै ता कूल ? पावो-पावोसी कोई पक्को ई  
नहीं बीप । कभै कुरी कौडा-री ठगाव नहीं ।

पावोस-मै रबीबाला नारायणजी-रो बैयो-हरी रातवाक रामखे-रै  
रातली करम-रा जाकमा देवज-नै रामनै-री मा कभै जावा पज रंग  
रंग देव’र कई कल-री दिम्मत को हुबी नी । रुबिबो-माबी । आज  
इत्ता हुकी क्यों हुब रवा हो ? रामको घर में कोयनी कोई ?

रामखे लो काळखो सिबोव सिप्यो ।

‘जहरे कावक काम मनै मोळावो हु जाबी रात-रा हाबर हु ।

‘आ बेरा ! गळी-गुवाज घर सप्परे-वीरैबाला सगळ-ई मूळी



तुम्हारा फिर है पैसे में तबे हाथ नै कोही क्या बाबू ? बरबाद-ई  
मात्र को छेनै नी तो छोड़

( बीच-में-ई )— काकी जी ! ये मने छोड़ समझो हो ! ई तो  
भार रामक जितो हूँ ।”

समझयो कोहीनै तो नहीं । भारे बाबू भर रामछै-रै बाबू से  
भरमेको हो । तू तो हाथ हो । ये दोन्हीं संसार-में कोही जने-  
ई-

रामछै-रो मां मांस पूछन जागी ।

मां छोड़ो मग करो काकीजी ! जने तो डाकुरजी-ई मने भारी  
बेदा बजाव दिखो ।”

‘हूँ तो घसी-ई बेदा बजाव नै त्वार हूँ पल में निरमात्म-रो  
बेदा बनी पूज ।’

‘हूँ बच-सू ! गहारै मा कोहीनी । ये गहारी मा ।’

जा कैर जिसे काकीजी-रा बग पकड़ जिवा भर दोहर कपली  
जल्पजाह-सू बैद-नै मुकत जावो । बैद कबो-बरो मघी डीक हुज  
जाखी । हरी बैदजी-रै सगै बाप-र बचाई छे जापो ।

बाकिनै हेको बाकिनो—रामजाह-री चीटी है ।

हरी चीटी कैर काकीजी-नै दिव दा । काकीजी चीटी पाखी देवता  
कोखिया—बांछ बेदा ! तू ता जने रामक-सू-ई बत्तो है ते सू जितो  
पदको ई ।

हरी चीटी कोही बाबेजी-रो हो । जितिया हो— १२ दिवा-सू  
जोर-रो भीरोदाह दाव बह है । सरवा दहगी है । चीटी दोरी-झारी  
जिनी है । डाकुरजी कोली करसी । रामछै-री बाबू समचार बाप-र  
जी बाप-र बदाव हुको । डाकुरजी कीकर बार जंगामी ।

हरी फिर जावत ही कैर उठियो तो बैर कूजे मां-सू कर्त चीत्र  
पही । काकीजी कबो—बेदा ! क्या परक दिवो ?

भी तो दुकमा है ।

कौन रा ?

“समा-समाज-रो ।”

‘क्यों हुआ बोधे जह्जुआहों में पड़े ह ? नारै बाप’र काँधे बोधी  
सैन्य करी ही ? जूया कसिबा मालम दिया । वन टंकार ई का  
सबो नी ।”

‘नारै कने कसैची-रा कागज-बत्तर हावसा ?’

‘घणो-ई कूटो है ।”

का कैर काकीजी कक मैडो पुरणा बसयो नारै माँव सँ नार  
हरी-मै देती बोधी ना बच-माया त् संभाक । हरी बोखियो—मा !  
पावै डा कोन नी आ साथै-ई घन माया-ई ह ।

बेडा ! तँ म्हारी बाल मान हुआ तुला में मन पड । माया रा  
समाज मलीरा-रा भारो ई पार बहेका नहीं ।

ना मा ! ककै समाज-म माताया आम्हू नासै डाकरया आम्हद  
विना तइकै, ओसर-जुकता-री मयंकर करचीखी रीत-रै पट्ट-में  
जीबण पीसीजै पंच जाण-बूझ’र अणुजाण वख’र पछया घर छने  
पाणी-म्हू बाझै बिपै समाज रै युपका-नै काई हाथ-पर हाथ परिये  
बैछ रैया जायीजै ? जब ती नारै बिना मूरख भर करम हीन समाज में  
बीका को भिऊँवा मो । ( बितासा बाब’र ) रोम कझ रमा हो जणै  
मीरो सारंगी वजाय रवा हो ।

बेडा ! कई के जानर पंच पच-ईंज हुबै है । नारी मानवा  
बा-री कुछ सावसी ?

“हे पंच काँवरा है पंच हुबै जका तो समाज-ने काँधे रस्ते चलावै ।  
ओ पंच तो समाज-री गरौबी भर जलरवा ऊपर धाल भई हैवै

मरने-परने चुकते-राकड़े पर साँची-नै चर चर छोभारी-आमना-मे  
 चसा'र बिचारी धोबी-मर्खवाँ रै चर-बापरा-बैबेच'र भजवा चडले  
 मार'र जोधार जाणाही पूँजी-बै-कहावाँ-मे राँय बाक है । मरबाछाँ-र  
 चारै जीबना-बै-ई मार गाले है । जे पंच नहीं समाज रा 'नीरो' है  
 'नीरो' । जेवाँ जेवाँ हरो-रो मूँको ताँवै बरना दुख ज्यो भर होइ  
 पड़क्य जागया । बी बेग-में घर-सूँ चारै निकळ ज्यो ।

[ ४ ]

बोखो हूँ हिम्मत होवै तो जलो जालो ।

'सोच'र जबाब देताँ ?'

हमक ताँई सोचजो बाकी-ई है ? मरिषा पड़े जानवर-नै  
 चुकास्यै-सूँ कोई जान ?

( मरूह-री जबाब )— साची है साची है ।

साची साची-सूँ काम को चलेनी । भात्र सा-रै दुष-री काम  
 राख्यो है बड़े भारी गालसी मरमेव भिग में होमोज्ये वृषिबै  
 दाँताबाजा टायरां मुपकाँ भर अपजाबाँ-रीगिया करनी है । बोखो  
 दल त्वाह है ?

भीर-बै चीटर माक्या बीर जागै जावा अर सयकाँ स्वर्न-सेवकाँ  
 -रो लूची-म बाँच जियावा । जेक जोर-री गरजवा हुई-योको 'सचा  
 समाज-री पय 'हरीरीक-री जय' । रामबा-ई बिठारम-रा हुबोही  
 हल रबो बो । जवे बेरै हिरई-में तंदे-मैबै बिचारा-री सदिबाही काह  
 रै कपर भात्र समाज-यरा-रा बीज कर ज्यो ।

[ ५ ]

भीड़ हूँदिया । मूँदवा दिखलियो । जघा जाला । अर बकरतै जेक

मारो दिखल हूय ग्या । अबै ता रामछो जक मिच्छ-ई हरी-मै नहीं  
 दाहै । बहुत-मै खिलसी दाह समझै । बडीये स्वयंसंभवा-रै हय-रा  
 गम का कज्जाव लौ बडीया हरी घर रामछै दोनो-री-बहुषा की स्वयं  
 मधिकारों-री आपोबान ।

रामछै-री बहुत राजी-राजी पीरै-सू<sup>१</sup> न्य जाय र मूवाजी मासीजी  
 घर मासीजी-रा इंदा निबझव दिपो घर मामू-रो जी मारो बराव दिबी ।

[ ११ ]

रामछो घर हरी 'सीबा-समाज'-रो डेपूरेछन खंभ'र दारै निकटिवा  
 कारै-सू बादाजी रामजी-री शरण में पूय ग्या । कारै दिन बाहरामको  
 स्वयं सेवकों-सू बिरिपोका घरै आयो । बल कया है मट्ट मुद्रिया-  
 मुरावा खार है । कड़ावा बहिया है पच भर रसाहवा कड़ा है । बेटी  
 जानका काज हूचगी जर बे स्वयं सेवकों-मै कैचा-बूर दा मट्या मारवा  
 कड़ाव ऊया । समक उचबै मरीज ग्या घर हकता-ई रै ग्या । हरी-दे-मै  
 पच बोखिया—देरा क्या दाबहापां करो हो ? हसी बल ही ता काज  
 बारी मा दूबां कबो खिया ?

रामछो कड़क'र बाकियो—मारै बैकलज-सू ? मिबल नहीं  
 देनिवा जने हुगापां-मै सिखली बाबी ?

'क्यों मूला बैस हा काहू ?'

हबै-मै काहू करक है मगळ समाज-जी लो घर ग्या ।"

"जबै मरै न्याय रै पचा-रो हुक्म को मान को ?"

'नहीं ।

'देन पक्षतासी ?'

देनी आसी ।

रानी कारे बूढ़ बडासी ? साम्मतर-रै माछक बाझन भोजन क  
करे नी ?

सरपा साक बकर बकर बाझन-नैभोजन करानुंका । ब-ई कताजी  
बर बाक-र घोरन करन-री कठै सम्मतर-री जिन्या है ? कठै भिम्या है  
पठै मगती अनुसार कथो है ।

कथी घरम-नै को मावे नी ?

‘सगळा-सू पैका मालू । घरम सदा रिक्का करन बारते हुनै है बल  
बारते नहीं । म्हरै घर-री दसा बा-सू कानी बोडी-भी है ?’

( बेनी कथा )—‘बस ता साथी घर घरम-री करे है ।’

‘कोरे है बूढ़ ।

‘हरी जाती बकर बाझनो—बाक-नी बीसायी लो करली बांरा  
गाला-गाला बोड़े-भी गाली ? घर-टापर-नै बेच-र दलरा नै  
रकन-र बासीजी घरम-में बोका-ई सुखी बीसी । सगली-सू कपर कर  
किचा करनी ? भीगली घरम बाड़े नी हुनै है ।

रामछे कड़क-र लवनेबक-नै जाका री—साधिया । बुरा भठ्या  
अर मार दो कड़ावा ठंघा ।

जोर-रै पमाकै-रै सागै-सागै मिच गरजना हुनै—“मवा समाज  
री जय ।”

# भाठो

[ १ ]

सरहो-री रात, फिरमिर फिरमिर झंझा पड़े । घर-रा बारणो  
बड़ी बड़ी लुछे-इकीजे अक ठरै-रो बाक मक-सी जाग रही । लुगाणा  
रो लुगलुस-रै बीच में रै-रै र छ है घुर में हाथ मरी ! छोप-मरी-री !  
हरद-मरी आवाज सुणीजे ।

होप जना-भेक कहुँक इकठो भीस्पा-रा भर जेठ मोरिबार  
जिहै-रै हाथ में छाकटेण, बारणो ओछ र इइबदाँचना प्याबाप्यापा  
दुर पदपा । कुत्ता केब जामै लाई जामा । इकठो डमरबाछै  
जेक साँकड़ी अचारी गळी-म बहर भीमै भीमै जेक घर-रै किबाद रो  
कड़ी लदलदायो । हागळै ऊपर-मू किशो नम काह'र कैवा—देरो  
आपी ।

हवा होना-रै सगै जेक जपेइ लुगाई बाक रही हो तीम अवा  
जर-मै बहिवा । लुगाई हरद माछिबै में तभी जर धोड़ी रैर मू नाबै  
इठरी पर निरत हाव'र । इकठो औम्बावाछै बुझिया—मोनयो । सिय कम  
बाँक ? मोनकी मूडो कटकाव'र निराता-मूर्त घुर में बाछी—बाबाजी ।  
'भाठा बाब बहिबो । बाबोजी निम्कारा मानता बाबिबा—मैर !  
माग-नी बाग हारा ता मोडा रिक् रवा । निह मकका कैरतै-कैररी आ  
संजोप बनिचो हा, पन माग-मै जाडो खिनिचो । कदम भर्नूँ किमो  
होवना ता तगै रात्रा करला र मव-री हाँक ।

बल कइली नावडी बोली म्हावै मर्माच-री बात्र है क-की हाथ ?  
मेर बारणी जीवनी रैवो । जीवी धारै कच-ई मेह-ई आयो ।

## [ २ ]

माझो बोरी हाई ठर-ठर बचन जागो । पण जो माझो सार्वे  
माझी-रे बरबरे गरम फुरतो और देखरीमाझी-रा मज मोबजो हो । जो  
माझो मझा नही पण भाई गोबजी धुधुमार कहिल्या ही । बरबज-  
ई माग-म्हू इवै-रो नाच 'अहिल्या ही राखियो हो । पण जो वाम  
धुगचे -रो-ई री को ।

बरबज्या सगळा ई इवै-नी 'तीजां कैला । बजा जाव येला ज्यो  
वैला—'जा जे रीठ तीजा बजा माई जावै बीजा' । काळी जेव बोरी  
रे सारी पणो त्रिको मोखियार-मोखन इवै-रो-ईम सापी अई इवै-नी  
अहिल्या माई कैर बजजावता । रीठ सर माझो कैवलय्या-जे ममझो-  
वता जे डावर-रा मोव नही विगावतो बोबीजे । पण चोवदियै पवै  
खंड जागी ठी जा-रे जाव जावरी । सगळा मूंजो मचकोळ'र वैला—पै  
रो लवकारो-ईम बजो माई चळ जे । मोखन मन-ई-मन बीवर  
रे ज्यो ।

## [ ३ ]

मोखन हा बजा इमकवज्यो'र समझदार । पर भाग तो ब-री कर  
का करता हा नी वन बारबज्या-में जे-नी सिहा जमियोवो हो । जो  
मदिक बज्य कर'र माहित्य-मामेकन ही 'माहित्य ररव'-री बजो  
ममजान-इमक मज कर प्यो हो । होक ममा-मात्याही ममा मादितियक  
जमाववै-म जे-रा बजव मगळा-म्हू जागे रीतो ।

अक दिन मावज-री मापी जाव-री बैव-म्हू मिळज भावी । तीजां  
भाज-नी वानू बैवा मापी जाव-वाच र मम रवी ही । मोपन मल्लीत्री-ज  
पण जागजा किय । मल्लीत्री माप हाव कैरवा भर बज-मिळई  
जावज-नी ही । पुरवो बीजां कर तीजा-नी-ई मिळई ही वन भाई-म्हू

माही । बूझकी तो चुपकी ऊभी रही पय कीकां भर लोकां मरमोखियै  
 राई मूहां करै कैयो ग्ये-ईं भाई-रै बराबर पांती छेयो । मामी बोली-  
 रांझ्या ! ये भाई-री बराबरी किनां करो हो भे ? इयै-री देखा याखी  
 बाजी ही मर भांगी देखा ठीकरो । ज्यो बान भाई-रै बराबर पांती  
 को मिछै को । जारयां मूडो चडाव'र मिछाई कंक बी । जीगम-में  
 लुरगो । मामी-ही करै सभाज-नी । जगती-रै जक-जक ज्यपड़ बर'र  
 बोली-रांझ्या ! कु-बल भर कु-सीखा भाई-री बराबरी करसो कबों ?

मोहन पूछियो—कु पय भर कु-सीखा कीकर ?

“और क्या घेरा ! जारो होबतो तो मै-रो फिरिबाबर-ईं सैठा जारयां  
 होब'र इहां माझै चढ़ै । पय कइ कुचन-ईंज ई । घोरै-रो होष जोरो  
 पाणी-ईं करै ।

राबर राबर सैन बराबर, क्या जोरां क्या ज़ोरी । क्या घोरयां  
 ऊपर-मू पड़े इ भर जारा-ईंज मा-रै पेट मांय-मू जिकम ई ? क्या  
 परमात्मा जारयां रै हाप-यग जाल बाक जारां-मू कमवी पड़े ई ?  
 दुनिया में घोर-जोरो शोना-री बराबर अकरत ई । जेक रै बिना बीजा  
 अचरो ई निकमो ई ।’

आ बात त कबी जकी टाक पय जारां घोर-ईं दुर्घ । जारा  
 बर-रा पायकीं घर-नी देखो दुख । जारयो-रा कोइ ? मांवरतेक राकुर  
 जी-ईं नीप्यां ज्योप हीबी ।

“कीकर ? जीगम-ईं ? आप-र मग-मू इज सजझकी ? राकुरआ  
 बा-ईं कैदुन भाला दुख का ?”

वेटा लू गळा ई । जावर दुनिया-मै एय आ बल कइ कम  
 कही ।”

समझाव तो को कबै नी मूरती-रो बल छाडा । ममै ता हेराज  
 भाई ई ये माइत होब'र लपान-बीबाप-में दुरमांन किनां राखो ।



बोरा हो कई दूब देई । जर बोरी कई कोस केई । बि । बिना  
भोका बिचार है ।"

"बारी बेम्बा है ए साथे उचकले बेरा । बगल-रो बसो तो इसी  
कोबली । अबे ये अंगरेजी मल्लिबोदा बारा नवी बूलाई करसो ।"

"बड़ी-ई हुक-री बल है, बोली जिकरि जये 'फटकी पड़गो भाटो  
आप पड़ियो' केई । बोली-सी बली हुक' अहे बे-ने जाह-पार-में-ई  
'रांड' बिना बलकल्यै बोली । पल ये ता अली हो पानै तो बली जल-ने  
इसी बीच बही समझनी ओपीये ।

"अहे तो इयो-ई समझसो । मिता-पुखी चाक को बोली भी ।"

मोहन समझ लो के माथा-कोपी करयो फाटार है । जा अंक-रो  
बही समझ-रा दीव है । मर-में बही सुग हुवी । जो बल-रै माथके  
रै जर बीसी हुविओ । बोदा बलिओ-ई हो के कई देके है ये अंक जलो  
कलेरी बाक्या चाक सू हो कराएल्ये हल्य-में सोरो बिना मुंडे सू  
गाठयो-रा गीला बोडयो बल-बार बल पीस-र एक सुगार-ने मारल ने  
उचके है । मित्रक राजोराल देहा हुबोदा सुगार-बापकी बर-बर बूबे  
जर मेखी-मेखी हुबे । बे-ने इया भावी जर ये पड़ियो—घरे माई ।  
नवो बूबे-ने बही-बही मारय-ने उचके है । मित्रक बलाय बिना—  
'कई बलकल्ये भाई' । रोड बही मित्रक है । इबे-ने बाप बार पल्ल हो  
के तू बाडोस-बा-र बरै मल जाया कर पल रोड किसो मल जावे ।  
बडे बलिओ बिना रैबू-ई बही । बराने कये बेटे जने बर-नी बल  
केवल-में मल जाई । इसो काम-ईक नवो करयो । मोहन कयो-जे तो  
सोच हो, बिना अंक-बीबे-सू बोडिया बल-र मर को जावे भी । जा  
तो अंक ठरै-री कर हुबगी । जे भी तो बा-रै मल-बा-मले-बा-में बैड-र  
हुक-सुन-री नला किया करो हा । पले जे बाडोसल कये गया परा तो  
कई गुनो करियो ।"

जा रौंड मिमखी-री-बराबरी करैखा ? बड़ो धायो साथ पग  
करलबालो । पो जिमा बंगलेकी लो तो सगळी कृत बिगाड़ी-ई है ।  
माझो है रौंड-री जात कर छोड'र बार जखी जाली ? रौंड-रा पग को  
बल नाखु की ?”

“ता माई ! समझा'र कैना आभीजे । छुगार्ह ऊपर हाथ उठावयो  
तो महा-पग है ।

पो जिमा रौंडिया मिमखी-ई ता इहाँ ने माथे चाल राखी है ।”

( उचक'र ) बोळ रौंड ! फेर पाडतस-रै परे जाईखा ?

“भळा भादमी ! जवै काई इमै-रा जोष है छेक है ?”

‘मरज है रौंड-मै । बड़ो करखो ह । जा रौंड मरसी ता इमै  
री मा बीजी जाली ।”

भीड़ मांभ-सू काई मना बाळम बाणा—कसाई है छुपर है  
पायो है ।

बीजा बाळिया-रौंड-री जात-नै माथे नहीं बाळनी । इहाँ-री तो  
पूजा उठारो ज जादो पड़म्हा खल्ला उड़गी लोह पूज-ककड़ सी  
डुपमी बेह ।

मोक्ष मागे बच'र पड़िया-बचो बर्ह ! तू बला सांभी-सांभी  
काई बल है ?

छुगार्ह सरमांवतो बीजे मचरे घुर-में बोळी-काई बलक माईजी !  
सगळा बीजा-ई है । जूवै-में पड़िया धार'र धावा है । जवै म्हाता गैला  
बेचम-री कैव है । किउ ऊगे-रा पईमा आभीजे । किमी बाळ मांभ-सू  
बाळ ? हु कैव हु जे तो कमावी बोवनी इती पूजी तो रोड्या  
लागुल लाई रैग ही । जाज हु बिबमी बार्ह-सू बल कर रपो ही ।  
इहाँ ने जेम बडम्हा जे इहाँ-री-ई बल कर हु । मने मरज छेक खा ।

“हैं निरखत राह । कबसे पर-पुरम्-सु बल बज्जा सबधारी ।  
तेजो म्हारो है ‘क पा-रै बस-रो ?’”

‘अ-रो कीकर है ? आं तो बरी-में बाह दिवो ? भवै तो बार्-रो  
हैक है की-बल है । कब पैर इसी काई बल बीमज है उके बासा  
बेवो हो ?

तने काई पचावकी है ? तू बारै वार-धुम्मे काज । जायो बयो है  
राह-रो मारु बजर । कबल जाई है कोरी सैजप कगाव है ।

भोज भोज-सु दो-बार जसा मोक्ष-नै समझावज जाला-मे कबल  
क्यों मायो कगावो हो जावज बा ‘मूरज-नै मतयो सोरो समझ-  
बलो हारो ।

मावज के मन ई-मज बयो-ई कसक मारु बज जोर काई बावै ।  
मू-है-सु हुक-रै मागे निरख पविबो—हाथ रे सम्राज । कब सीबो-ई  
ब-रो रसा बिबो

( ४ )

भामा कबे बडो हुबो । बरबाकाँर भावज भावजिपौ दोमाँरी  
हाकर भावज कागो जपान् बल-बल-में बै-रो मात्रवो बिरद बिबो  
भावज जालो । बावक बावसा तो हुपै-ई है, जाव-रै हुकम-री लाम्बीक  
बडी हुती बैक-र अही कसक जाला जाई ।

अदिलता-ई कई चीज बैबल-री अही करती जने गज्जगाँर बरकात  
बडो कमठी जने मार । इली-ई बडी बावरी इलती ला-ई बसो  
राह-वा बज्जाल मिळता । बावकी गोरी-रो अमाग जावयो । बै-री  
पुरती बबकाई वबा कसंग बिल बिल-री रसाँर-री मज साज बडी  
मकनै-रै कारण काया-कायकी-नै लाडी कसक जाली । कई-रो बावो  
मावरो हो तो मावज-री जको बै-ने हुककारणो बाह करतो कब गोडी-  
में बैरलवो ।

जेक दिन मोहन मौको बेक'र मा-रै सामनै बाण होरी—बायाँ दिन  
पर बाँ-नै उबपाम मारै इयै बास्यै हुवाँ-नै मद्रसे कबो मही भत्र  
देको ? मा इबैबाण-नै काछरु समग्र'र सुजी-अवसुजी करगी मोहन केर  
कबो-बाँ काँई उबाव को दियो नो मा !

मा चिय'र बोझी—काँई मज र करती ? कटै-ई 'कमावण पोदै-ई  
बाण्यो है ?

'मज जानी कजै मकाई-पुराई-रो ज्ञान बुय जाती । मामू सुमरा  
री सेवा करती । सगाऊँ-मू मेक कोक राखती ।"

'माबो बा ! म्हारै तो भणायो कोय नी ? बा साम्यतर परमात्मा  
कृष्ण कोय नी ?"

'किमे साम्यतर परमात्मा ? काँकरी-पुराण-री तो बकर कोय नी  
बाकी साखेबा साम्यतराँ-री तो है । बाभौ सुगायाँ मिनताँ-मू बली भणिबोही  
हुयी नी मा !"

'अ रे तू तो पारिया-मठ-रो है । बे पीटिया जोरया-नै मण्य  
है । जोरयाँ मयन जानी अबै द्वारा काँई करती ?"

'जोरयाँ'र जोरा होवाँ-नै मण्यो जोपीले ।"

तोराँ-नै तो कमाव्यो है जोरयाँ-नै बोहो-ई है ?"

"कमावै तो काँई होय है ? मज्जै-स हिरवै-में जानयो हुआवै है ।  
देवक-ई है— भणिबोदै-दै पार जान्या हुबै है ।"

'जोका मायो मठ लया हुँ तो मण्य-नै को मेज नी ?

तो बाबा ! मठ मण्यबीना । पीजा-विरोध कमीहो काहण्य तो  
पीजायो कै बरी ?

"हई, को पीज्यो को जोरयाँ-रो जरम है ।"

‘तो धो-ई चोखी तरै मू महरसै-में सीकावै है ।’

‘ऐर ऐको पति-री ममती साधू-सुसरा-री सेवा मा-बाब-री बाकरी दावरा-नै किया सोमना ओ सारी बातों तो जोरपा-नै सीका-वणी चोपीअै ‘क नहीं ।’

‘मै बाई सीकावो तो अस्वरी रो सगळं मू वैखी काम है ।’

‘तो मै बातों महरसै-री पोप्या-में लिखिबोही होम् है ।’

‘बता मै किसी पोची पछो है ? किस महरसै गयी ?

‘मे बैठा हा भी मै ग्हांरी य बुरासो री बाली ग्हांनै हवां बाला-री सीक बिचा करती ही ।’

‘हो ।

‘तो मे तो हवां-में लपकतो-ई रैबो हो ? कदेई मीठाम-मू कने बडाब-र सींग देही ता कोर नी ।’

‘अबो ।’

‘हवै बास्ते महरसै मेअन-री अकरत है ।

‘आ मायो मर जा ! ऐको अली यू बाला-में कोतक को है नी ।’

[ २ ]

मोक्ष री तीन् बैनां कमल दिम्पी-री ‘मवेष्टिका भर विद्या-विनोदनी’ बाल करछी । तीन् अनी कपडा सींदनै सुखमै-मिहारै-रो काम काज कमीदा कतसे तंत्री मोडा हुकनै-रै काम-में चतर हुबगी । मै दाधे-ई बरलो कल-र मूनी-अभी त्रिपमा बल्लव छेती । चोखा-नी भयं मांन री किवारस-रा बैका बलाव छेती । गळी-गुवाव बाळा-रा कपडा मुछत सी देती । दावरा-रै चोली टोप्या बलाव देती । गळी री तुगलां अबै बा-री काह करती भर बां मै लपकनी जपकती

को हो नी । मा-री बरै बै खाइली केयो ही । रात बै बै सगळ्यो  
नै रामात्मज-री कथा सुजानी । बोला-बोला पढ़ गली । गळी-में बोली  
मलमल हुचल जागली ।

[ १ ]

जेक दिन इकठो भीस्वावाळै डोकरै—मोहन रै बरै बै-रो मा-नै  
कयो—अबै मोहन रा व्याप् कर बबसा आबीजै । छोग अबै बाल  
पयावन जाग ग्या है ।

मोहन-री मा जबाब दिवो—ये जालो । पज " " वा जुप  
रैबगी । इहै संकेत समझर कथा—ना ! मन इहै-रै बाप रो बराबोही  
सांगन्य बाद् है । पज अबै ता मोहन बीम बरमा-रो हुच ग्या हुसी ?  
भा कर डाकरे जांगळया माबै हैसल कर'र कथा—भी ! हाक पुरो  
इगलीम-रा-ई को हुचा नी । शे-लीन महीना धरै है । पछै बीमबो  
पुरम आगमा । ता जित्तै-ई मगई-रो बेप्रा लो करणी बोबीजै व्याप्  
बाच-सै महीना पढ़ कर देसा । माहन-री मा बोली—देखी छोरणी-री  
फिकर करानी बहसी ।

हां बाराबा-नै-ई मगळा बैबै है बोह-री-बोह करली है ।

‘बीन ओबण्य बोबीजै ।’

‘वीन तो ओवादा स्वार है । बाल-में बसा-ई बाबर है । काक  
काक जी आररै बाला-रा मांगा दिवो हो ।

‘यां काई उपछी दिवो ?’

‘मै कयो—बा-रो मांगो मिर बर । छोरी-रो काई ? येर गूल-र-ई  
मार जावै । बोही बीनला-मू सखा करमिबा ॥’

मोहन बीच-में-ई बाक इदिवो—बै बोना तो दादाजी आऊन है ।  
काई मने न गुचे छापर है ।

‘नहीं बेरा ! थोका अंगारेजी-नी कूटी भर बीजो साठवीं फिजल-मे मये है सुगतर है ।’

‘मा दादाजी ! मे म्हाली-ई रक्क-मे तो परै इज है । ई ब-मे बोली छरे जाणू हूँ ।’

‘बेरा ! काबजी कने पुबिबा’ है । दावर सीता देसी ।’

‘इज-मे नाका ‘पुबिबा’-ने । जोरपा-रै कमर भर रो दुप दुप जाण का । जोरपा, जोरपा-म्हू बनी धमिबोकी है ।’

‘ये इबै-नी कोई सुणो हो, पा-रै जमे बने-ने दे देवो नी ।

मा ! जोरपा मेव-बकरवा को है नी जम्मे बाई जड़े-रै खरै डोर देवा । हूँ जाणू हूँ नी जोरपा-ने । ना-ने कमी भर कूटी-मे नाकमी सिरली है । इकम तो जाण बोवा-रो-ईज बाकसी वन राव तो म्हे कोग-ई दे देवा ।’

‘नहीं बेरा ! तबे माराज किवां बोई-ई छरे है । गोपीनाथजी-रै हो बेरा भर थोका मलीजो है ।’

‘काई मये है ?’

‘हो जमा तो बबदवीं फिजल पास करी है भर थोका बारवीं ।’

( सीधे ) ‘हां ! हां !! ठीक है मये जाण छिबा । छोटा सैपा है । पण मा ! जोरपा-रा देवा तो दावा कर राखो ।’

‘जोरपा-रा देवा कुछ बबदवतो हो । इवा-ई रोठ-रै राखते सुजब बोझाजी बबदव खाती ।

( जम्मे सोम से ) ‘बाहरे समाज ! ध्याव बोवा डेर-र को करो नी मा !

ना बेरा ! ‘बिप किम्पा दुप जावै । दले-ई कोग बेरै है ।’

जह-वपां जवेद गीरी जवा वपां व रोदिनी- ?

जका जाला-री खोरया-नै लो बाला-तेरयो खाता है ।

मोक्षम मान म्या । बाबा-रा प्योब करवा तै हुबम्बा ।

[ \* ]

प्योब हुया-नै मणो बल्लव बीठ ग्यो । मापुब लीला नै बिदुपी  
परीजा पास कराय ही । खोरया जालरै गुला-सू सामरै बाबा-मै मोक्ष  
खिया । अब करै-इ धारया रै सामरै ही गली-री लुगायो मोक्ष-री मा-  
सू मिळती लो कती—मगीजी ! बैरया बूब पीर जायी है । हाथ-री  
बगर कर सेव्या हुयी है कै जान से बाबी-इ को रखके नी ।

मा-री दातो हरक कर भवे-सू पूब जावती ।

[ ८ ]

बाल-रै मागै-मागै दुनिया-री रंगव-इ बदलनी जायै है । मोक्षम  
तया बल-री पैलो-रै बयोग-सू जाला जाला 'महिजा मडल जालव  
हुब म्या ।

अक दिन मोक्षम होदिवा-होदिवा जायी भर मा नै कथा—मा !  
बाबो ता अब अर्थ-मै-री बान देवाह । मा बैरै-रै मागै लायी-लायी  
हुती । मापुब अक सभा मंडर-रै-कने जवयो । मा अर्थ-मै धरीअर अदीनै  
बदीनै ऐकल छागो । अदिसा बापु दिदी से बारा बरबाह 'छी जाति-री  
अपला कर मापुब दे रयो ही । दमारा जाल-सुगावा बिराम-रा  
बाबु-रै सुब रवा हा । मापुब अदिसा लायी जोगली करैर कथा—  
देवा मा ! ' भाठ माथ-सू पूब म' है ।

मा-री आख्या हरक कर बम-सू गीको हुबनी ।



# मिनस्वापणो

कन

## १३—डाढापणो

[ १ ]

रमेस-री बाँध चुकी । सघेरे-री नव बग चुकी ही । रात-न बाँध  
हैनिस-रे रंगक्यां सामी गमक देखे-र मौहो आली हो । सटपट चाल न  
इजामत बघाली अर सुरस-सू रगद रमद-रे हाँती-नै चमकालन बायो  
पक्षे सिमान कद-रे-बार कबल-सू मा राम-ना बाँध के-र बीमल बैसे-  
हो के रूपगळ-रे हो पाद-र कबो — बापूजी ! आज दूसरी घाटीअ ।  
राम बिरातो ? कबली नहीं पाद-र रूपगळ-रे मोही देर बग खोया  
हूँ-हूँ-में 'बापूजी नवरी-रे आदमी आनाम ही—बापूजी  
बिड के हो ।

बापूजी-रो बीमयो इराम हुन लो । कई काया कई नहीं कम  
अर मुचलीनयो बोखो-कमल का कैदे काक नहीतबल-ने आज  
राम के बाचीओ । दोनू उगावगीसं रसो बापियो पन बा-री आक्या-  
आसा-रो ओत नु बली होसली हो ।

[ २ ]

रमेस-रो बिड आज दलद-में काक केया करवै पर भी आगो के  
हो की । ऐ-ऐ-रे अबादे-में आलिया बिबावरी-री असक बिबां बैजमली-रे  
प्यल बायो मिरतो हो । तबला-ना बपिया मिळता-हा ० ), अर देव  
हा दूपां रे बैवा । ओ बायो बिबां पुरो हुन ? बिड पाद-बर्द हुन लो ।  
बिड पाँच बली अर रमेस भीओ अर-रो रसो बिबो ।

घरे घाबर केर बिम्बा में दूध ग्या । करे-ना कीहँ करे । बार कर  
 र भक बाने ऊपर बिलन लागी—

### मकगनमाल ओड मम

मेकरी चिम ।  
 आठमरेम पैम ।  
 बामद व मकीम ।  
 पद भद बाडहर ।  
 मकग माकन ।  
 भदेकी मिडापो ।  
 रिमकुर ।  
 रैकर ।

### बागडा मदर्म

मदिचैरिदक दुप मम ।  
 कोकोनम दुप-ने र ।  
 गुल भीषर ।  
 मियर हो ।  
 मियरन दकरपीद ।  
 मदिचैर ।  
 बाग बागो नीम ।  
 गुले वगाव मेक ।  
 वड देवद देवर भादव ।

### पकन-कूट-दाग

रिचि न ।

पंच श ।

स्त्रीपर ।

इन्नों-रै बपान आरै-सोबै-री वृकानवम्बै-रा बानवम्ब-ना परबम् । अबै तो मंवरजी-री नकन चक्रापी । ममापिबो बैरन्य बाबो बर मागै आप ही दया ऊपर मृग आपी । मरुपर जोडन दिबो बर नकनर बाबन बैर न्नी । चाक भावका भयैका र मागै मरुताल-नै भावणरो-ई जी की बाबतो हो नो ।

[ ५ ]

कमळा-री मा रसोई सु बिबर र बाबुजी कर्म जाल बैडी घर कैच छाती—सरही चमकमी है सीरकन-रजापी बनावजी है । सगका सारु सी-रको कमको-ई काबुजे पड़ेका । कमळा-री बास्ता अंक बीपी-बोडो भी जालो है । रजेरा पैकाई-सु नयुजिबोडो बैडो हो । तबक'र बोडिबो—बा-नै बा-री-ई पकी है बीडो कोई सरा'र जोबो । म्हासो तो देवाळो पीपीय रको है बर बांरी चरमास मागै-ई काही है । कमळा-रो मा सिक्की से का सको नो । बांकवां माच-सुं चासु नाकती बोखी—दो पूर तो म्हे-ई मागा गन्त-गांठा पीरन-वरुठ तो बा-रा भर पत्ता । कबै बर-री कल चक्राई कर्म मूंडो लोच बू नो । परमहमा हुगर्त-री कल-ई कोडो बही । रमेय बिगर बोडिबो—बा-रै रोय-ई बानै बनिबो है । कबै बर-में आल बारो लोचन बनिबोडो-ई देखू । रोयो-ई है तो जक दिव मिकी-ई मबै रोय-बोव'र जातो बोडो ।

“यूको पा-रै मूंडे माच-सु । मकां हू इसी पापजी हू । इम ठरै-री कल कैसो तो म्हारा बिबरु दूठ जाल जा । धे बैका तो बरबो करवा बको कोबमी, पछै बीजां मलै कसूर मबो ।”

‘बया देका म्हारो काई कल-कैच करबो है ।”

‘य कञ्चित् श्रीमन् ब्रह्मा ज्ञात्वा ब्रह्मैव विवर्तते काम आह ममै  
वे । ये धर मित्रस्त्वो-री काम-री जेक-ई जिनम ज्ञात्वा काय नो ।’

रात-री तीन बजो ताई बेर मांरी कटपट-कटपट करता रहा पत्तै  
रोन् बज्जर मूठा ।

भार हुआ हमेशा बड़िया अठ-सूं पसा-ई बिता अठ पड़ो हुयी ।  
अटपट कपड़ा पैर-र सेठ मोलीछाछ-रै अठै गयो । खंची कपड़ सौ रुपिया  
कपड़ मांगिया । सैर कपो—जमानत दीवतै मिलन-री बछावजो पड़ैछा ।  
जबै सो-रा बिबै मिलसो । मात-रा मात इस रुपिया लखी-रा बैधा  
पड़ैछा । हमेशा बोखियो—हू कोई पार हू जको बीजै-री जमानत  
बछाई ? जे आज-ई काम बड़ियो र आज ई भूख रहा । बालिवी-री  
कोई मीठ ।

सेठ कपो हूयै में बिगल-नी तो बात ई कोलबी आ तो बैबार री  
बल है । बेर अचार तो सिखावो कमर सोच र बैबार हैम् ।

[ ४ ]

हमेशा मोलीछाछ सेठ-री जे सुरोपजी-सू बड़ो हुकी हुको । बा-सूं  
ग्या-सू बड़ीनै-बड़ीनै सूं रुपिया पैसा-ई जे राखिया हा । करै तो कोई  
करै ? सोच्छा-सोच्छा जे-जे आप-रै जूमे मानवै गोपाल-री पार आपी ।  
सीको बै-रै करै पूगियो । सगळी बड़ीगल कपी । गोपाल बड़ो धरजन  
हो । घर-ई पैरी लोख-र सी रुपिया है बीबा । रीस-री अंतराया आसीछ  
बैब छानी । बीबी बेर बड़ीनै-बड़ीनै-री बलौ हुजै-रै बल गोपाल  
मीठान-सूं पूछियो—पारै मावै किछोक करजो है ?

अन्नाबन कोई तीगसी-छाकी तीकसी-रो ।

कोई मानरो-मोमेरो कपना मुकतो काखियो हो ?”

वहीं बाले महीने पचीस-तीस इत्यादि है । इन पर सब घर-में इसी एकम मात्रे हुए गी ।”

‘तो मर्दान् कम्बु-करक ने होक ।

‘आ किस्स देखो हूँ में किसी जिवस जावत है ।

सोपाक किस्स बाचन जामो—रूप परर हूँ बहुत बोमोड बैसकत  
सुन्दर बंगाल देवीदेवक देवर जावक पंचरूप कलकत हूँ, रक्षित  
हैंकरचीक रेतमी । कबो बाहरे रेतमी । तू तो बहा-बहा मापन दिवा  
कर है पक्षे मारी अकल अंधी किना हुवागी ?”

कीकर ? रेतमी नीची नस कर’र बोकिनी ?

‘बल-करी जिवता जावत है । तीन-तीन बोकी कृता ? मेक-सू  
कम को जावनी ? कीमती ठेका-रै बहक कपूर मिळिबोको गिरो-नो  
ठेक डीक को रैबू की ? कीर क्वा-क्वा केबू ? कीमती हूँ-येस कर  
मृग-रै कबकै कर्तु वीरोग नीम-रै दाठन-नो कपकांग हुरो है ? तीन  
बार जावत-रा ती दाठन जाव जाव ।”

‘काम तो चक लगे है पन

“पन कोई ना-से तो घर निज्जी करयो है । रैकर-नी कर्तु अकरत  
है ? म्हाँरे सलो मो तो हूँ ना-रै जितो रैकर-मेकमिना-ने पांचा-ने  
बीच’र पानी काड हूँ । घर-में-ई बह-बैठक जामक हूँ । बैसकीन-सू  
पैरो कर्तु कमकेडा ? म्हीर-में अद बक हूँ तो बाले-ई पैरो निज्जकन  
जाग जावै । बाबी सुन्दरता तो कपनी-में बक हुवा-नी है । घरवाला  
बाल-कपवा-ने तरमे कमका हूँ सारक रोली रैबू वन में जावत  
करक-सू द्यो को भी । सोची तो बके हैस रै की मिमल-नी भीतक  
कमार्तु बोवै देवा-रै मुकलक में पुरन हूँ बदै रै बीमार्त-ने कर्तु  
अंधी हूँ है । वे कर्तु निजावती करचीके जीमल-नी बकल कर’र

बास-रै पनां कवर आपै-ई कबड़ा बासै है ? बोखो बाईं इसी कज  
परी कज-रो बांज-ई 'जीवण' है ? इसै-जे मिनखापखो कैयूं कम  
डांडापखो ?”

[ ५ ]

मिनख-रै सुधार-री सारी ब्रां अक सगै मंझी नहीं हुन बासै  
जिरी तई सुधार को हां सके नी ? हज ठरै-री ब्रां रमेरा अक बार  
नहीं अनेक बार बोझ-रै मूई-सू सुग जुबयो हा पय जोपड़िये घड़े  
बौर-ई को काप्पी ही बी । पज मासै पर करज मोलीखाल सेर-री  
बेसुरीबो बर-में रोरो सुगई-सूं कटपट कर ऊपर-धूं माई गोपाळ-री  
मीठी कटकार अ सारी ब्रां सूं रमेरा-रै मन-में गिहानी पैदा हुयगी  
अर करवव बुद्धि आम बठी ।

बिबि रो बिबाम ई कइं इसो जल्प पड़े है के बल्ल-रै सगै मिनख-  
री बिबार पाता-ई बड़क आब । बाज रो रमेरा बासै जो रमेरा को रवा  
नी बज हाक तई बै-रै काला में कड़े-कड़ गोपाळ-रा जै लण्ड गुंजिया  
करे है रमेरा । इसै-जे मिनखापखो कैयूं कम डांडापखो ।”

## १४—सच-वाढी

[ १ ]

बडीयै तो मीहो हुबै बडीयै उपम्बाम किमो हाव-मू हट जाव  
मोहन यको सामो ओवा भर हकबदाय र मन-ई मन जा कैर उडवा-  
ई ! सगरी हम बजयी ।

यो धम धम बोळै उतरियो । पर्याधियो पर मैथियोहो मजामयो  
पग-रो डोकर-मूँ ऊँचो हुन ग्यो भर हक मजमाव-मूँ बे रा लरीर डुक्का-  
डुक्का हुम ग्यो ।

बो लीअर वृक उठियो—किमारी ! जे किमारी !' वन किमोरो  
हुबै तो बोळै ।

लीअरोहो-ई गल्ली-में गयो । किमो वृद्धियो—भाअ वृज्ज-मै मीहो  
कर दिवा । मिरर कारै आलो बिछै पग बाटै-मूँ मरीअ ग्या । किमोरी  
गल्ली-में-ई दीली कोबली जध ज्यादा बिअर गळो आबियो—किमोरी !  
जे किमोरी !

बोरी हुककर होइयो आली पय हवाम-में मिथिया हाप बप्पव  
भर लहकोगत सक हुबै—

‘राअ ! कटे बली हो !’

“अठै-ई हमयो हो ।”

हेछो पाइतै गळो वक ग्यो कैयै ई अठै-ई हो । कृषी कुली ।  
बग-यो कैरै बरै बळ्यो हो !’

( वृज्ज-वृज्जतै ) ‘कोअू अठै-ई बरै ।’

‘जो पैका हक कपो बोछी ! (आम पज्ज-र) कैर बोखसी हव !’

गल्ली-में ऊबेदे खेड़ हानै मिमल कइकर कयो—बचो डाबर-नै मारै है ? मापन खसलाना हो'र कोकियो—काका ! मने कइ ऊपर चडाली घली बड़ै कुरै-रो काको मूडो र बीछा बम । जर छोरी मामी मोलना काहो ।

[ २ ]

महीने-री दमवीं लमील । कइ खइकी गइ-गइ-गइ । किमारी रो मा बालछै-मू खोखो लो धामै मूडोवी लंबीबाला डना । खीक'र घली-नै लइक हो । मापन होकै-होके कयो—किमारी नै मेम ।

किमारी धापी । मापन बै-रै मापै ऊपर हाथ फेर'र कयो—जा बेटी ! पारना लाछ'र मूडो-नै कैव ह के काको घर में कोवनी ।

किमोरी मुकक-मरक'र बोली—बचो काका ! कइ बचो बोलो ? बे घर में हो नी । हरी-ई में घडोने काफै जर बडीमे जा हामो-री बार मोलना छोरी नै लालन होइो । घारी बीछी बइती जर बारको लाल'र मूडो-नै कयो—जे काको कैवै है काको घर में कोवनी ।



## १५—प्रभु-रो धरम

[ १ ]

रुहर में रोऊम्य ! हिन्दू-मुसलमानों-रो हुंगो काबी-कानी । 'असल हो-काफर' कैर मुसलमानों लोक हिन्दू-रो हुंगल में बाब कगारी बाबको हुकाबदार नी कैर नामो कारै 'मारो काफर नै, मारो काफर-नै' रा हाको ।

हिन्दूनां लोक मुसलमान रईस-री कोडी-मै बाळ ही । कोडी-रं माळक मरी-तरी कोडी मै जोड'र एक मुझिनां-मै बाळो । कारै मारो तुरक-नै मारो तुरक-नै' रो हाको ।

इने हाके-दिदबिद-मै एक मुसलमान डोअरो तुफनो-तुफनो बा रनो ही । कारै-सू रीको हुको—'मारो-मारो । तोषा-तोषा कैर ना लोक घर में बीव कैर बबो ।

[ २ ]

कलैहिनां-री रोकी घर रै समी हाको करण बानी—काहा तुरक मै मारै काहो तुरक-नै मारै ।

हिन्दू घर-बानी कैको—अटै कोई कोषको ।

बीव मांघ-सू लोक बनी गरमिषो—रुचो जीवली माली मिरो ही ।

बीव मांघ-सू बीको बंकिषो—इहां दुखी जात्र-ई जात्र-रै मित्र नै चिन्त कियो ई ।

ओर-सू कई कना मेझ-ई पूर उमिषा—वर कुरै-मै कारी कोबनी घर मेह-ई कंज दान ।



## १६—पराधीन

[ १ ]

काहु १—उदरो भारी ! जो देखा सामझै-सु काहको जान लो !

काहु २—पौ बारह है भार !

काहु ३—जायाँ हौई जोधो गज्जो मारयो है । पैर कोय बज  
सु ।

काहु ४—( बीच-ई में ) काहु रे छोमन्नी बानी ! बडो बचै  
परमात्मा ।

काहु ५—बार-बार हुआ मौला जोई-ई मिळै है ।

काहु ६—जो देखा है भाव रहा है । हुस्तिबस हु जायो ।

काहु ७—( सरदार काह र ) मा ! जाज्य जारी तिसोवरी पत  
मिराज कीजै ।

काहु ८—इच्छोछाँ ! सरदारा-नै ता स्वर हो । जो-ई हुकम दिन  
काई हुसो ।

काहु ९—साँची कय है । जानर बनजी पुराणा बापुय है ।

[ २ ]

“बनजी ! जे चारिदौ कोछे ।

“बदरजी ! दिगजादे जारी जे लाफी में ।

रबामजी ! हगूजै काजी ”

हीरजी ! लायूजै हजिरी ।”

“इदानी काई हुकम हुय है १७



'पल रस्ते-में बाँ-रो कुच-कपो मिळानो कइ कहें हाथ डूबो ।'  
"रामनिवा दख जाती ।

"बूढ़ी माँ सुन-सुन-र जर जाती ।"

हाथ । हाथों दुपट्टे-रो गलत हुआव कपो बराही माँठ बल ।"

'बाँ-रोतो डूली क बहों बाराँ-रो जो सँभलतेक दीजे-ई है ।'

'तो बरबाला उड़ीक-ई उड़ीक-में पूरा हु जाती ।'

'घोरे रै कारै छुकिबोड़े किनी सुन-सुन जे सारी बाराँ सुनी  
अर बड़े-सू बिरबर चोई-माँई हुन लो ।

[ \* ]

इधर-उधर करतै बासही-में बैरब-रा मामा बल रवा हा । बरबल अर  
बहुक भेक जाती पड़ी हो । कारै-रै कारैबाको सारी सुन-सुन अरै  
राक जगता बबलुत बलिबा जेमे हो ।

कापड़े रा जेठ अक भेक कर र कपे धु नीसर रवा हा । कारै सू  
बग बाजिबा बल बल रवा हा ।

अबलुत-बै बैक-र बाँ-रो सारी उठकिबो कई अना बोझ-र  
बोझा—जै अबलुत तो अत्यन्त सरबल दीसै है । सारा अना बैक मिदिबा  
अर पयाँ-में मापो छेकिबो । एक जेमे हिम्मत कर-र छेकिबो—ओ कई  
किबो सरबल ? बबलुत-री बानी-में बरबल बोझिबा—बराही  
साँबलिबै-री ।

तो जे-ई बाँ रै बरबा-में रै-र बलम सुबारसा ।" जा जे र सारा  
बाराँ बासही-में जापरा मामा बल बिबा ।

हिम्मत-रै बकड़े मुँबारै में भी भैक बासही-री बिठल मूली सामे  
मूली ककराबोही अबलुत तो सारी ओसू बासही भाव-रै पयाँ-रो  
पराबोत कर रही थी ।

## १७-सुरेश

सुरेश सेहिया कम्पनी में बहपो जक छुरसी सिरकाई'र काय जमियो ।  
 भक भक कर'र मिराक जाल्य जागा । जक 'पीपर्स सोप -मांवी  
 तो बीजे 'जदकिगसब-रा बैत्रीदेवछ देवर जायक मंगिया । जोड़े दो  
 'हैर भर बीपै रैकर भर दो 'नकरायां मांगो ।

सुरेश-रै मन-कपी बपय में डन-री सुताय भर भर्त्ता-री मा जेक जेक  
 कर'र झाकिबो । सिगोर रै धूँदे-रो बाजूक बजावटै भकै सगखी-रै  
 सम्मो जोबा । चार भाँकनां हुई जापस में 'जब रामजी-रो को ।  
 देखिबो तो भागै सै 'पबासिया 'तीमिया बाजूका । बो डैरबो  
 'पबामियो हन बासटै बै-रो बौ'रो पृथक गयो । भ'र सेखतई में भाँटो  
 मूँहो कर'र पूनो कातै-कलठ मीमो खिलव जागो—

१—पीपर्स सोप

४—रनो

२—हुकै बंगाल टैक

२—रैकर

३—हैजकीय मीम

१—नकराया

जोड़ हो तो २२ हुआ । धूँदे-रो बाजूक बजावटै भकै मनमन में-ई  
 कबो—दौर कुछो परना ना ।

तांगो खाया लावाल बरीबिबो । कम्पनी रै गुमास्ती होखैसीक  
 सुरेश-रै कान्ठ-म कबो—जाकै बिछ हो पैमें ठा कराव दो ? बिचै  
 दको-में जबाब दियो-घमकी पहखी लारीक का समये । तांगा दुरिबो ।

सुरेश रा जमरा-ही बोळ बिचै-रै काना-में रै-रै'र गूजन जागा—  
 घमकी पहखी लारीक को समये ।' माथै में बिजु क ही बीजबी जेक  
 दकाथे मारिबो भर ककपना-रा किबाइ छाँड दिया । बिचै देखिबो  
 बेसिबर दिजला-रो । ख खै'र बिचै-री कानी जाल रयो दे । भक कानी

बरहै-में ऊभोवा धर्म-दास अर साध-बान-रो हुकमदुआ बिना  
कामो सैन कर रहा है । सुरेह-में ओक छोरो बाबो अर स  
मोर लुकागी ।

कल्पवा केर बिचैरी ओकवा-में सुगती-री सज्जको केरी । निहै देखिबे  
बैठक सांखड़ी खिलमीजी-री ठसबीर सजीव होव'र आसु नाव रही है ।  
पोहै आंगरै झीटा बिडापोहो अर हाव में बचीतो सिमरैरी हास  
हसती कुखिलमी अडीवै बडीवै जाव कभाव रही है । सुरेह-में छोरो  
जाव प्यो । अर सली-मी मीठ खुली । इच्छै-मी में तो ठगिदुआ  
कबो—उठसियेगा बाबु साहब । मकाम आ गया ।

— — —

## १८-व्याख

[ 9 ]

बडीमै कण्ठे बरिबै-री रजिस्दरो हुषी बडीमै सगाभी पखी हुषी ।  
 बल बचन छागी । सगळै कर'र १२ बज्यै-री मंडळी बनी जलै में  
 जोझाखी अर नाहै पालखी ।

थक थारै सै माँबदै-ये हककल मजगी । होखी होख बजावन  
 जानी । तुगावाँ मैयक राग जुयेरी । वू वू झक बाजियो । भेक छीम  
 बरसाँ-री झोगी-जै मा पोषी में छँ'र केना तुगावुय डुकी ।

{ 2 }

राम कसिबो । धामै में बारछ-रो जक बूयो भी जिसो हीन जायै ।  
 काक-इससो । काकी गाँव-बाम्बा मज्जु दुरिबा । गाम्मती-रा मा-बाप ई  
 दिननै का कटे गया जिह्मे-रा बाबा को बाबुबिबामो । बापन ओझी द्यारी  
 माझीन-री हर कर-र रोवन झूके कर सुमरो बिये-बै गोदी में केर  
 बार रमावण से जायै । गुवाइबाम्मा द्यारी ससो आंगळी कर जेबै—  
 धा जोती बाबेजी-रै बेटे री बट्ट है मखा । माते माता-ई ही-ही हसे ।

[ ३ ]

સીંચણ-નો રીંછાનો શાશરિયા સહાય જાગ્યા । રાખ્ણી-ની બાવડો  
 સીંચણ-ની ધેર જઈ શ્યા । બાવડો માથે-મેં ટાળીજો ક્રિયા । જર-નો આગ  
 દુબળી, દેખી દુરગી । બાવડી બારી ગામનો રોંઠ દુબળી । જર સમાજ  
 રારું રીંગળ જાગ્યા ।



बढ़ गई सुद बर्त । पूरे लोक सुग बीठ लो । गोमती-रो सम-  
 ली सरग-रो रम्यो बिचो । काखी मुसरो भर बढ़, दोष बीज दबिवा ।  
 सुसरो लोक प.लो-री पौ में ७) दबिवा मरुने-रा कान्ने कौ-में  
 कटो मटो बाधो कर्त ।

गोमती बबली में पग बरिषी । कूर-री इसी कान्ने बरि मरि-  
 बीर-र काही हुय । लोक दिन काच-में धाप-रो रूप बैब-  
 काच-बी छद्द हुय गी । पल लल मर में बनिपसो बर लो ।  
 सोचन कापी—इसै रूप-रो भेद कित-बै बैमुका । काखी-में  
 चोसता कूर ला ।

धर म भिचन सुगायो-री बीज । कोई बैद तो कोई बलावर-ने  
 हुकायन रो कर्त । काबाओ हुकायन कान्ने ।

सेकरी-री सुनीम हाकम कर बलावर-ने साग छेवर काच  
 बमकिषो । काबेरी-र काच कान्ने मोर-सू बैयो—महारै बनिषो-रो  
 भिचो १) काबेरी काच लोकर लोक बार बह कर बीजी बार  
 मीठ कापी कोचो । सुकीक जलो बप-र काबेरी-रो बंगुमी काच  
 कवर बैबल बिषो ।

काबी बीबी—में बैब बाली मांभिचो । गोमती गगाबक-रो गुडको  
 बिचो । काखी-में बीज दबन कापी भर करीर दको बढ़ लो । गोमती  
 दक-दक हुय गी । पाहोतन दक बै मांभ-स अठार र भांगन में  
 बसारिषो ।

गामती सैममैम हुकायी दबी । सासरै कर पोर रोन् लाली छोर  
 लंपारी । अक चीन बीकडी कर बैने कोचो काच लो ।

## १६ पत्र

[ १ ]

मिमा माथै तैजा। अऊ अघाम रै-रै'र डंकी साँमाँ मरै हा। बीच  
बीच में हा-अऊ होवा पाणो रा बे-री आँकवाँ माँव मूं हा'र अमी माथै  
पड़े हा। बे-री गोक कमळै मूँ हे माथै छाऊ चोछै काछै अर चोछै  
बाय री सुवाँ अलाम-री उबका पुचछ ५ विरतल बलाय ही। बे अऊ  
बाम नि मढाय अर कदना-मरी आँकवाँ मूं सामने-री हरी मरी अमी  
पामो मोवा अर बड़वडावो-मही ! कदे-नूँ मही ! केर भड़क र उदगा।  
तारुत तन्ना। किचकिची आवी। बस बहै सोच'र पादा पैठ ग्या।

[ २ ]

बहै दिना री भूली-दारी मा अऊ बसबाई आँकवाँ मील्या बड़ी  
हो। मूं-मूं करानी पवन बाधै ही। हा-नीन हावर हादी तिमो बहै  
बीच गार बेर-री बल्लन पुसाय-री कोमीम करै हा। अघामबऊ अऊ  
बायद झवरी मारी अर बाँरो-र हाव री हादी छै र बा जाव बो जाव।  
सारी बूको। उवाव रा बाव हु पा। झर आग'र आवा। सारी-नी  
मुचकारी गाहो छै'र माँव मूं बिहावो। रलो-रानी भूली सीरो पादी  
नऊ में तापगो। सीरो ना गुरका हुवी ५ अघाम-ना ५-५ हावुल  
जागो। आगम तिकाओ दुई। रोम अयो। हाँव कोम'र बाण्य—  
दिम री गाना ? दिम-री गाना हु हुना कऊ हु ? आग मगया  
राग हईल धन-जे बहा मीजा माथै ई अर हु आवा गाना अरकना  
दिम हु। वराता बूब तिया हावतिवा आग अऊ हुक रोरो में माथै हु।  
हेम ! हेम ! वदन-मना ! वदन-मना ! जानि ! जानि ! मगळै-ना आ  
कोई में अऊ उई छै हाववा र दिमा अऊ हातै बावडी-ना ईअ

औसर बीयवै है । छड़ी घबोई लड़ो, पन पन भां गिरबोत बछरी-  
री पैर-री बूझा किवां सहीजै । लड़ी ! बहै और लड़न-री बस्त  
को भी । जमा करजे मा मेवाव-री-सूमि । आज दावरी-रै मरव यै  
कावर बजाव दिवो । जी हूँ न्यो । आज-सूँ हूँ-ई कइती-री रोको-में  
नाय बिभाज हूँ ।

छोरी-नै माथी गोदी-में बे'र बै-ई सिखा मालै पुरी जल रड्यो  
थर छेकन-मज्जसयो छे'र कागड़ छिजन जालो ।

[ ३ ]

दिकली जगरी-रै साज-री आज काई कयो । बर-बर धरिवां थर  
बछरमाज बां बांघावै है । चारु कापी बाजा बाजै है । सैबावै-रै  
सुर-सूँ दिसावै पूजै है । पोरी सिंगर मालै समै लूँ आज दिकली सज  
रची है । लता बीम आज जाल-रै दिसावै केर रचा है । जे जाल-रै  
है समन्दर-में जेक जयो, काखी जेक जयो हूँ, हुली है । बेरै मूँह-यो  
रंग जोकी पड़्यो है । जो बीं छिपे है थर छिल-रै डावै है । सोवै है  
केर छिपे है । छिपे है जेक छिप-जमीन-यो दवा-रो पुणजो माल  
थर वै मिसी सावर-मंथर । हूँ बिचाव-ई मालै हूँ जो सगळी दसमवार है ।

[ ४ ]

छोटी कामर काथ जवाव-रै हाथ-में दिवो । जदम बांघो—

बलक जो पतसाव बोळी मुख हूँया बलन ।

मिहर विजय दिय मांह कौ कल्प-रत्न उत ॥

'परसूँ मूँहा बाप के परसूँ मित्र तग कर ।

बीजे छिज बीजाव । हय जो मंडली बल हूँक ॥'

जो प्रथम भाग-रै मूँह-सूँ जदम ने 'बाहराव' के'र बचकन' को  
राजा कल्प-रै बेरो सुरज जावूय विमा में छती ।



## २० वीर कुसळोजी

[ १ ]

गड-रै बार-कर कुसमर्षी-री चौक-रो बेरो हो । गड हुसमर्षी-रै हाथ-में बाण्ड है बाळो हो । सरदार-सायन्ता मोक-सू मोक्ष्य बण गनीम-सू बाण मिळिया हा । महाराजा कोरापुरसिंहजी तामजेर बाकरा सागै गड-में बिरबोहा बैठा हा । रसद मिचर रही हो । हम करी राकस बडो बाको आदिवा उडोण रही हो नै कद बाण जामै कर कद हू भीकामे-री स्वाधीनता-में गळताद कक ।

[ २ ]

जेक—भार् ! कर्ई कुछी ?

बीजो—कुछी कर्ई ? सरसा र मारभा ।

ठीजो—कुछम-मै उडीण्य हा । वही जे-ई बोका'र जे-ई मैदाव ।

चौजो—आतां फिछाव तो कण्य हा ? मीप-रै धावै ।

पांचवो—( बीच-में-ई ) जारे कावर ! सरमै-सू इरै है ?

कड़ो—जडे तो कणकण मावै बांघ राखियो है बल-हरामी को होवां बी ।

साठवो—बीपटां बलिया-रै कुछ-री कही-ई को जागव हैवां बी ।

जाडवो—जे-री मा छुंड कापी है वको बलिया-रै सामो बोव जे बांघवां को काडवां भी ?

ବର୍ଷ—ଆମ୍ଭ-ର ବର୍ଷ ତୋ ମା ମାଣ୍ଡି ଭେ ବସୁ ଗହ-ମେ କୋई ଶିତୋ ହି ବସ ଆସି ଗି ।

ବର୍ଷ—ବସ ହା । ତୁମ୍ଭା ତୋ ! ଆପଣା ଚୁକରକେ-ରା ସରସର ବୁସଞ୍ଜାଣି ତୋ କୋ ଭାବା ଗି ? କୋଣି ବା-ନେ-ହି ବସୁକ ତୋ ପୁଣାଣି ଶୋଧିଣି ।

ହମ୍ଭାବର୍ଷ—ବଡ଼େ ବେଢା କାହିଁ କରୁ ହି ? କଡ଼େ ତୋ ସିର ପର ଭାବ ଗଣି ହି ।

ବାବର୍ଷ—ଆମ୍ଭ-ର ତୋ ଦେତୋ ହି ଆମ୍ଭା ତୋ କିମା ଆସି ?

ତେବର୍ଷ—କହ କହୁଁ ? ହାଁ । କୋ ଦେଲୋ, କୋ ଗାଲୋ ।

[ ୧ ]

ଢାକର ମାଣ୍ଡି ମାଣ୍ଡା-ମୁଁ ବେଢା ଭକ ବଢ଼ିବି ଶି ଚୁକିବି ଶି ଶି-ର ବାରି ବାବ ରହା ହା । ଭାବବଞ୍ଜାଣି କୁବନେ-ମୁଁ ଢାକର-ର ସାମ୍ମୋ ଦିଲିବି କର ଭାବେ-ଭକ-ମୁଁ ବାଣା ବ ମାରି ହାଣିଗତ କବି । ଢାକର ଭାଣିବାକ-ର ସାମ୍ମୋ କାମା ।

[ ୨ ]

କହୁଁ ଢାଣି ମେ ଦେବ ଧାପ ରହା ହା । କହୁଁ ପୁରୀ ଶି ବସାଣା ବଜାପ ରହା ହା । ବାଣା ମସାଣା-ର ଚଳ କୁପଦ ରହା ହା । ଗାଣ-ମେ ବାକ୍ସମେକ-ଶି ଧାମ ରହା ହା । ରାଜ ବଢ଼ିବି-ବଢ଼ିବି ବା-ରୋ ବାମ୍ମ ପୁରୋ ହୁବୋ । ଢାଣି-ମେ କାକର କାମା । ବା-ର ସିଂଗା ମାଣ୍ଡି ଗାଣି ମସାଣା ବାବ ବ ବା-ନେ ଶିର ଦିବା । କା-ର-କା-ର ବୁସଞ୍ଜାଣି କର ବା-ରା ମାଣ୍ଡି ବାବ ରହା ହା ।

[ ୩ ]

ଢାଣି-ରା ଦିନ ହା । ଗାବପୁର-ଶି ଶିବ-ରା ମିବାଣି ଶିରାଣ-ମୁଁ ବସା 'ହା-ହା-ଶି-କୋ କର ରହା ହା । କହୁଁ ମାଣ୍ଡି ହା ଶାମାଣିବା କାବ ରହା ହା । କହୁଁ ହାଣି ମାଣ୍ଡାବୁଜ-ର ବାରି କର ରହା ହା । ହା-ର-ହି ମେ ତା ଗୋର-ଶି

हाथो सुजीवियों । सगछ-रा कम ऊंचा हुआ । मोकड़ी जलो  
 समझा जाँ है काँची जाती हीसी । गलीम सोचिरो—उई हका  
 ससाजकी है बदे कीच जो कुल जाने किसीक हुए जा ! मू-मू  
 चामणे बंदो जाती गया क्षेत्र में मरुतु मचम जाती । इऐ ई-में  
 बर सुण-सवार पैसी-सूँ जाती हीसियों बर कककार सुधीयो—ईरा,  
 काकीरा जावा ! मायो-ई !

[ १ ]

बूँद-रो सामान बेच-बेचरे जोय कुमकौ जी-ने सावासी दे रहा है ।  
 पय हुसखोड़ी बकै जाती कया पाग-रै पकौ-स गह-री रमी सहकम  
 रहा हा । मोह बर मोह-रै मेक-सूँ जाँ-रै हिररै-में विखीको उड़ियो  
 जोक्या बरस बही भर मुँहै माँच-सूँ जै लख निककिया लहरे जीरा  
 बीकाने बर बह-ई जाँच जाती बह मुरज मरमाज कोबरे निप्यम  
 में कगसी ।

कुसको पूँहै कीर-ने विखयो किम बोकाव ?  
 म्हाँ कलं तू पाकड़े निप्यम ऊँगे मात्र ॥

## २१-जय जगलधर वादसाहू

[ १ ]

धोमी-धोमी-इहा नदी-रो छहरा साँ रम रही-ही । पंकरु तर-तरै  
री रागबनो गाव रहा हा । पात माथै देही मंजली मस्त हो र गुलछर्रा  
घाट रही-ही । मगझी-रै चरी माथै चमक भर हिरदै-मे उमंग-रो-तरंग  
बढ रही ही ।

अकाधेक मैद-गरजना इहँ अक मारी गळै-रा अगाधी मलिनोहा  
मबदू कानी में वरिषा—वाकिजो । हा शबर बास । मारा हा-मारा  
भातिजिहा घर घडीमै बडीम देखल जागा । इहो-दू में तो अक धंर  
पवग कझी काँबळ बनिवाहा रतीपझी भीबुरी जागती मूरती भाव  
पमछी । इहा यमी ब धोमी-धोमी बाखल जागो । दंगरजो-रा सुर  
बनुरा भर बीला दा र ५ ब दूबग्या । काई पनर मिमर र भायरै  
मबहा-री पात-मू गगझी मे अगा र बा ममहरमी मू नी अचारै में  
दाई माई दूबगो ।

[ २ ]

कमझी-मै बाझा मारग्या । काझी प बाव जागती भर शरीर-रै  
गज-जुल-म झरु नगी । भाँवरी माँवमे बाँके बाव बाँरी-नी अझाई  
दिनर र मगझी जागा अमयी कदकहार-न मागै मजक देवा-मो अडे  
मग हाव बरिषा । मजक-मो भावा ब दूबी भर बीउछी जार-रा  
रकडा मरिबो । भिद-गरजना दूबी—बरिषा बाळ । बरिषा बाळ ॥

[ ३ ]

बाद-रा बाळी बरिषावी मरिषीग्याहा । बाव दिव क हो बहल मं



हकर जाँर रुकी । भातै होयबान्है परिनाम-र डर-सु बरदर-रा ह्य  
 पाका पवण जागा । समर-में अवार मायो कर बान बयसा हयन  
 जागी । करै लोचनियै-री जोन में सगळ्यै-री जाँक्याँ जागी । एन पै  
 जोकम-मरियै मार-नै कुन मानै देखै ?

परमात्मा-नै पठ राखनी हो । भाकर बर-रै हिरनै-में जोन-माया  
 कर बिजमीलाभजी-ओ परचो हुनो कर लखन्यै-है हन-री जाँ लप्या-यै  
 रा पकी—डाकुरजी-री दया कर भाव सिरदार-री मदत-सु जो मर है  
 बडावच-नै त्पार है ।

भाकर-री घेर जीर-सु बर जाकी । मूढ़-रो तखत बनिओ । साय  
 सिरदार मिसलसर कथा हुआ । सुनरो हुनो । उताती तनो । कुबो-  
 री भरती जोन सु माही नायाँ-रा दुफका-दुफका उठना । हनै-ई-में  
 वो हिम्बायै-री पठ राखसहार-री जी । जंगल-र मादराह महाराज  
 करणसिंह-री जी । रै लप्या-सु जाकत भूँज उठियो ।

---

## २२-जाज हूयी

[ १ ]

बन्दूकाल हाभीरुख री दसवीं किछाम में पड रयो है । बाप पोम बरसा-री छर ५ बोड'र परकोक सिधार गयो हो । मा कामन बहिबा-पापड बट'र घयो होरो बैनै हूयो बयो किनो । धात्र बै सठरवों माछ पुरो बर'र नठारवै में पग बरियो है ।

बन्दूकाव-रै हा काका हा पल बा-रै-ई छान-मार्द ही । बैरी मा-री मरत करन ओगो काई का हा मो । लीनू प । में बो भक भी तु/क-रो हाठन घर-री मात्र बर-री देवकी हा ।

बो मा-नै बो हीमठ बंवावठा-ई हो कै भक बरस देखै हू बाकरी छाग बाकड़ा बहै पा-नै बनों पापड-बड़ी-तु मायो जगावना बदेका । पल बाप-रै होपा काका-रो-भी ओ जमात बूठा हा कै बपो मीदावो हो हू कामन छागानी वै जता रै रोरी हा साँपा मायोनी । छोरो सैबो-मनूत अर गुबकतो मातन त्रिया हो ।

मा रै लमे कई खपा-बुरवा हा जिबो बारी-रै भीमर बाप रै किरिया-करम अर बटू-री जिरोनी-में केन छाग चुको हा । लम बयो हो बब-बारावज-री बह जिब नू मयल-मट्टी करो हो डुकर्फी गयो । बन्दू-रै बजावैबझा-रो भी गढा बारी-सारा गुबकता हा । दूहै में बहै-भी नू तापै-रै पडै-रो-भी सापरो को शमी ।

बन्दू रै घर-रै लम भक बाय-समा ही । लल-नै बो बहै पदल जाला पाा कातल घनी बैका बर में लल-ना-भी बीक को दुगा होनी । बजावै-री बा बा दाता-री गरज बर'र बा नांग-नांग र के जानो । गाभा-वा ओ हाथ हो कै भक काही रै बाय अर घानी कै महीना ताई

ब्रह्मण्य ब्रह्मण्यो । पञ्च सङ्क्रान्तो हसी हो के करै ओ मैसा गिन्तो को  
हो-मणो हो नी । सदा चोखैर चोचो-न बीका-बनक राखो । मरसै-सु  
परै भावतै-नी पङ्क्तिओ पैर चोचो रै परसना पाक'र चोखै-ने द्रवकाने  
होचो-ने एरी कपर दंग रैवो ।

गली में साँदा-ठठा री चट्टु बैया राज'र बपु'न' छाव द्रव्यो ।  
कई-रो भोकाओ काम कर रैवतो । कूटै-कूटै-रै घर में पाखी गरी हुओ  
तो चट्टु-नी बक-सु बड़ो भर पाँवा । कली-रै चौकटै-सु रौब'र साय  
काय रैवतो । सगली-रै मुँडै खानयो हो घर जाँल-में पाखियो नी न  
रचकतो हो नी ।

चट्टु-री मा-री बाब'र बैया हो के चट्टु बैगो परबोखै । पञ्च जोरी  
हुओनी को होबी गलीब-ने कूज बैबै । मित्र मित्र बारी-मदारी दिवन्धा-रै  
हाव जग'पुटै-जग'पु'न' बैकड़ भक कामा पावो हुओ ।

चट्टु प्याँच-री चरचासु साँच-नी-साँच हुओनी होव जाँवतो । वा  
सोचयो हचै-नी चर-री का दमा है नक जोड़ बचन-सु पैर करचो  
बच-नी-ली । कई सु 'बा-कपड़ा कासी । कई-सु माई'रै-बुआ  
धीमसी जमा कत में वो जेक दामरियो है शिवा भवोनी बहालै घर  
हो । पञ्च रकम-रो भ्यात्र नी वो जागसी । कई-सु बैसत । हुँ संभसु  
वो दण्ड हो बरल्ल-नै । हचै करजै-रो कोर चिजोत्र कासी ।

मा-र सादतै कई-नी चट्टु कई-कई बाना करतो नद वा जैती-  
बैदा ! होमठ राखो डाकुनओ सगली ठीक करसी—'जिब घर बाक्य  
नञ्च घर करिब-ना बैवाक्य ।

[ ५ ]

जिम्मा रै घर में भूषाजी चिन्मियोही हो । काई काई-काई करतो  
हो । मग-सु सनमक जोखिया दूखनी जायो । लेख-रै केरै-रो प्याँच हो ।  
दूखती जोखयो एसी राज'रै-में मरकनो पङ्क्तिओ ॥ पूर्व कूटै-ने बैकड़ा  
पाँवो ।

सेही हुगायां जगै मिसरी भर कुल-कायक बकायो ।  
 वन धाँक्यां विगडती यही । जो-रा बुझाझिवा जसपतलक बाझा । उठे  
 पतीश-री सुप्यार्थ कहे ही । दोष-जीया बिबा कुल बरवा करता हो ।  
 के-ने हाथ बिबा हाथ हो । सम्यकतक भाषां पैदा मामूखी दया पाखर  
 रकाव दिबो-पक्षे धनी घरम भर हाथाओही करी जइ मारती हाथ-रो  
 कबो । किसनू रै जाँक्यां धाँकी धडधल-रो बिचर महज्यो । कुल कस भर  
 जसो । कुल रोटी दगासी । कड-सूं जो-बोपद'र दूध बाम् ।  
 पक्षिषां दूकता-ने महोतो-माव हुवावा सेठ ही काम काह र अछर  
 दे दिया घर में कुलको भी कोवही बापही छोरी जमनूही पारा  
 जुग 'र बापू' कई बाझी'र कई पैदा छोरो-सु कायज-सु कछर  
 गावै जसो कहे सुदिवा सुचरती आषी । गोपै कैबो हो हु  
 हाथदरही-ने के-सुन र जहयताक-सु-जीम रोटी भर दूध रा मुदन  
 में बदावरन कराम "सु । कायज छोरो सीक-बार बार छिरी पन  
 गोषो छिया भाव 'र मू हो-ओ इन्वाव काय । सुपारक बगिचा छिरी  
 है जल बल रो सवन-जी कायबी । बीजा कोई सैंबो कोयनो । के मे  
 हाथ बिबा हाथ ।

दे बापुय कर को क अरुणाक-रो भोपाल जायै कोवनी । पा-री  
 दवा कर को करो नी । जाँक्यां में बडीवा मात्रव समग । ये-उहे  
 पुरुष जायै पन मद्य कोई नहीं करै । बिगा-ओ नहीं के रल-बिरल  
 रा समक तो खेपै । छोरी कायज दानुं छोरी दुबनो । किसनू री माम  
 रो कैरो कहे-कहे भाव जाँक्यो । वन छियनू रै मुक-री जागां कुल  
 पना दूध जाँक्यो । देरा शहर-दूधर बमक मचावता जल बैबे छिहर  
 मुनीनुनो कोवनी । टखरी भै दुपारो-मिरादुल-जी मोबीजनो जडीवै बर  
 में जू दरा निदयो करता हा ।

गझी-में निव-बैज जल मजम-पूजव करझिवा मोक्या हा । गीना-रो  
 बर होवतो । जलमा बरमाजमा बक है री बरवा पावती । रामावज

बाँधीबन्धी । समय पूरा आता पन दुजदुजी बडाच'र हरकत । एत  
रा आभीडान हुवाहा हा । परतौ दुज में पड़ने री बेतवा होली-ओ को  
हीनो । काली सूँडे-री बपावणी ही ।

किसरू बर्बा-भी मैरू-ओ-रै परसाव सुखिओ माँवहिबाओ-रै  
आका मेडिबा डाकोसिवे लने गिरै-गोचर देखता नर बबोबराओ-रो  
दाम किओ पन आँक्या-रा पड़ सिद्ध-ओ गवा । अबै छाई मीठा रंकोकन  
कितो हुबन्धो । पीरै बीरै ककड़ी-रै साधरै किरन-नुरन अगो ।

कने ठो अकल-रा बोव भी नहीं । अडीने छोरी वरनान्न सार्न  
हुवगी । कई सुकड़े-सू नर कई नवनिवा-सू उदर-प्राप्त करे ।

कमरूही-री साआम्बा सँ परबीबन्धी । बारीबा मेडो हुनै कने  
बे-ने कर्नै 'बारी बाप तने कद वरन्नामी ने कमरूही । अबै ए छोरी  
ओरै-ओ है । देख ! जूमी हा कानो गाव म्हा-सू ठो बार  
आपस बीबी है ।

कोई चवराओ-सू' किसरू-ने छोरी-ने परबन्धन रो हमारो करतो  
तो कोरै कूड़ पाधरा ओ बत्तर सिरकाव देवता है चोरी घोड़-री-बोड़  
हुवगी लगे कित्तक दिन कु आरी राखयो ।

बटू-री मा-मै नरक अली । बै माँगा-नाँगा करवा सद किया ।  
किसरू-री मा-मै-री बेटी-री गाय करी । किसरू भी चारै-री शोभा  
सुनी । आप जिता-भी सगा मित्रने-सू कु भी जी-में बनी ।  
बडोने-बडी-री निठ-री कैव-सुनी-सू आकर भक चानी दिन  
हाकरो भर सिचो ।

बटू-री मा-रै अबै इतल रा बार नहीं । बडोने किसरू-री भी  
बिला हूँ कमनी दुभी ।

एन व नू बारा री नूवाकी भेडो होच'र होनू सगा-मै मरने-मै  
जिन्ना बरकन केन सक कर दिया ।

किम्बू-रै गाने-जी-रै सेठ-रै घर में पोते-री बचामी हुआ। किम्बू-रै मामे-री बेटी-रो इठे जाय-जो-जाय-जो हो। वे छोटी देव-रै मठ मेठा-जी-रै किम्बू-री इन्नीगत कबी कबी—ओसबाळ घोषाळ बाजे है, छोटी-रा हाथ पीछा करबाळ हो तो किम्बा दाम-रो कळ मिळसी, किम्बू बाप-जी भांचा है। सेठ मळा हा भर गरीबा-री बास्ता जी-में थोड़ी बापा हो। ज्ञान रै मल-मल किम्बू-रै रोटी-पाखी-रो तुपाव भी सदा-री बास्ता कर दिपो।

इस ठरै किम्बू रो काम तो पार क यबो। बन्तू-री मा जमे बाप-रो हो किम्बो अडाल रापर व्याप-री तुगाव बैठापी।

जन्म-जी-रा सादा। जन्म-बू-जी बीत-ने माभदाभूत बाप। जन्म-जी गोखे बही। रंग-में मंग होबल खातो। बानू घरा-में इरभ भर जिला। सगे-मारी बच-मिळकल जागी। बन्तू-री गळी गुवावबाळा जळ पग लमा जूमा। कने भी कोर्बा। पदु जाले तो कहे-जो कोर्बा बागदर। बीड-जे विविध विवेक लराव होबल जागी। पारा सेव्य हो मल मल सगळा-र मलमे कब भीबो मने अवार मल बरल जो। म्हा-रै जी-मू हाग-जो खाग रबो है। पल पने बदिपोर। जोब इठे कांकर करीमे बन्तू-री मा ही बाप-र बेरदा के कांकर-जी केरा भुप-ब देव्य। हागदर-री मुव्या मल होमल जापी।

लीज-रा पाचक क स्थितो। हागदर इन्नीगत देवा मल किबा। बापी केनी हुआ। मूत्र मल बैरल जातो। हागदर केर इन्नीगत रिपा २२ बा-जो—हाग-जी सेवरी-र रबो है, मल मिळक जागी कने केरा मल गुवाव बाप-जी घरी-रा भागदर घोष-रै जी हुवे है।

मा कबो—बुपको रे । चट्ट रोवर कबो—भो जी हूँ रे ।  
 केही मठ सुनयो रे ॥ पण सुनयो कुन हो । हो अर्घ्य सावरो रक्षे  
 नूमो किनो । परमपूज्य-ही विधि बेगी-बेगी होबन्नु कामी । चट्ट-री  
 बाप एकद र बीगाथ सँकटप भरयो । पाछो-को बे-मै गोदी-मै मुडाव  
 सुनयो दिनो । बापदर कोर हुनमैकान हीको घर परै गयो । चट्ट रात म  
 पछिबो घर बोझिबो—भरे बा जरा दो रे । भरे छोरी-रा माय छु...  
 र ओर... .. श्री माय रे ।

साक्षरकै चिद् विगडन लागे । ह्रम ह्रम गयो । बाप हाथ काँपी  
 बढी । धाँस्वा बोझ पाछम कामी । बापदर-बैद हाथ मडकान दिवा ।  
 सगळ हुन विठा घर चरान्तर-मै हुन ग्या । मा अन्ध हो'र पडगो ।  
 मातन जायो । हुमा बुझ ग्या घर-री आन हुनगी देखी ह्रम भी । घर-मै  
 कडकड मचगो ॥ सारै सै'र मै बाप नुनगी ॥

## [ २ ]

सै'र मै उडयो हुनगी । हा अन्ध मेडा हुनै नरै बा ओक-ओक  
 चरन्ना । ओक मिनी ठरै चरन्ना पाछो देख गोविन्द हुनो होव ।  
 बोझिबो—बापही छोरी कम्मोबर हुनगी । हचबेच -रो पाव लागो ।  
 बाप काँचो घर साम्रै-पीरै बोम्प परा-मै कसालो ।

गोपळ पछिबो—छोरी-री क्या भीन्ना है ?

“भिन्नारै बासा-री ।”

बापही-मै हच-बैच-रो पाव लागो, भिन्नै बन्नी-रो क्या हसिबो ।”

“छोरै ठो बढी-बढी कबो बढावै के केरा मठ देखो ।

“ओ मना करछे-करछे-भी कबो केरा देख दिवा । छोरे-री भिन्ना  
 की हो भी अमे निचा कन-वा ।

“भिन्ना तो जन्म-ही भिन्ना-क ।





से कर-भी रहा हा हूँ मैं-भी तो मरुन जाप'र कबो—कब रातभर  
को पाँचू देखा-भी एग म्हा नर बरबाद-भै समझाव भाषा वै  
देहक-पोछिबो राखो । मा नी कबो वै बीडा दवाव करन-री बल  
अधरम है । इसी बल करोका तो म्हात-जत-सु जायोका बरा ।

वाँ रामचन्द्रजी-री बात माव जी कथा ।

‘कथा करवा बातका गरीब ।’

‘रामचन्द्रजी आपा घना-भी बरम-ती बडा ! इमारा कविता पद  
राज्य-रै बाप-सु बंधो कर'र खात र गिरग्या घर दकर भी हो जीवी ।

‘हूँ तो वैदू हूँ आपा-मै इमानी कोबो-जै नर को । जगान्धो  
ओवी-जै ।’

“अब हाको म्हा-भी कु हँ मदरक को रैवा नी ।”

“मार्हजी ! बोरी-रो म्हागा बिगड़ जाय'का म्हा ।”

तो हाकुमजी-रै भागै बीती-रो ओर पावो है कथा ।”

ता कोई परलोकिवादी-ओ परलो-जै है कथा । बरम दूर को  
जाय नी ।”

‘अनै बरम-री रंग नू न-री तो का-भी कोबवी परग्या नर अनै  
बाली-सु बाळ्या दिरो हो ।”

‘तो ये कथा दिवा बिदक-विवा ? हूँ भी देगू का ।”

‘अरे ! बारी-मै गाळी दपकै-रो भी बात सामो है । बाही वै कबी  
रो कथा ऐनिवी है ! अरे बाँरे काल्ज-री जगामादा परिबोधा है कथा ।”

हाका हाको कबो म्हा हो ? हूँ वै मिली भी बला ।”

‘बल का है कै नरै मीओ नूक गा ।”

मोद अरु मोद कर गिरग्या ।

२५-श्रेक-में अनेक

[ , ]

ਕਮਲਾ-ਨੀ ਬਾਰ ਡਿਥੇ ਸੀ ਥੇ ਮੈਂ ਰੇਨੀ ਕਾ ਕਾ ਕਈ ਸਾਲਾਂ-ਨੀ ਹਾ ।  
 ਖੁਸ਼-ਨ ਦਰ-ਨੂੰ ਦਿਖਾਵਾ ਨਾਂਪਰੇ ਫਿਰਦੇ ਹੈ ਅਮੁਰਾਮ-ਨੀ ਚੜ੍ਹਾਈ  
 ਭਰਮ ਹੈ ਦਰਸ਼ਨਾਂ-ਨੂੰ ਥੇ-ਨੀ ਅਨੁਦਰਸ਼ਨਾਂ-ਮੈਂ ਕੁਝਕੁ ਝੜਨੀ ਕਲ ਥੇ ਸੀ ਥੇ-ਨੀ  
 ਸ਼ਾਂਤਿ ਵੱਧਾਨ-ਆਚਰਣਾਂ ਹੈ ਸਾਫ਼ ਕਰ ਅਗਨ ਮ ਹੈ ਸੰਘਟ-ਸੰਘਟ ਸਾਂਝ-ਨੈ  
 ਰਾਗ ਅਫਿਰੈ ਅਚਾਰਜ ਰ ਸਾਗੈ ਧੰਗ ਦੁਖਾ ਕਰਨੀ ਹੀ । ਦੁਖੀ ਬਹਿਲਾ ਸ ਕਾਰ  
 ਖਰੀ ਬਾਨੀ-ਮੈਂ ਬਹਿਲਾਈ ਕਮਲਾ-ਨੈ ਸਨੇਥ ਲਾਨੀ ਅਰ ਸਾਫ਼ਾਕਾਰ ਹੀ ਸੁਗੰਧ  
 ਥੇ ਕਰ ਕਰ ਰਾ ਸਗਲਾ ਸਾਫਿਨ ਦੂਪ ਰਕਾ ਹਾ । ਘਾਟੈ-ਸਫ਼ਾਈ ਨੀਬਰੀ  
 ਰਾ । ਪੈਰੀ ਖਾਸੀ ਕਾਸਕ ਕਾਫ਼ੀ ਸੀਥੈ ਨਿਰਾਨਾ ਸਮਝ ਤਿਲਨੈ ਅਰ  
 ਬਾਲ-ਕਾਫ਼-ਮੈਂ ਕਮਲਾ ਆਗੀ ਸਗਲੀ ਸਾਂਝੀ ਸੀਥੈ ਰਾ ਸੁ ਸਵਾਧ ਹੀ ।

कमला हा मा वन कमळा हो गागर बीर जोष रवा हा वन  
कमळा न काळी कमलार्ति ति छी सर का । हला वाता टुका रीत का  
रवा हा बी अर वे न वृत्र कारेन लखे बाधमी वे बाधना का हा बी ।

[illegible]

“सि कर भी रहा हा इत्तै में-भी तो मरव भावर कबो—काल राख  
 ओ बाबू देखा-भी पूग म्हा घर बरबसा-ने समझाव जावा के  
 बैठक-पोसिवा राखो । आ भी कभी के बीजा इत्तै करम-री राख  
 अचरम है । इसी बात करोवा तो म्हाल-जाव-सू जावोवा परा ।

“तो रामचन्द्रजी-री बात मान ली क्या ?

“क्या करवा बापका परोष ?”

रामचन्द्रजी जावा घना-भी करम-री बजा । इज्जतों बरिवा बस  
 लम्बा-ने नाबू-सू कबो करे बाल-र गिरवा घर बकल-भी को लोबी ?”

“हू तो केहू हू जावो-ने हाथनी जावो-ने घर जोर बघावो  
 कोबी-ने ?”

“जबै हाथो भजा-भी कु ई महरक को रैवो बी ।”

मार्ज्जी ! कोरी-रो जमात बिगड़ जावो-वा भजा ?”

तो डाकुरजी-ने जाली बै-नी-रो जोर जाके है क्या ?”

तो कोई परबीजिबोही-ओ करनी-ने है क्या ? करम हूव को  
 जावो-बी ?”

“जाने करम-री हांग पूव-री तो क-नी कोवनी परवा घर बूरे  
 पाली-सू बालवा चिरो ही ।”

“तो ये करम बिपा बिदध-निषा ? हू-नी केहू का ?”

“जरे ! जगरी-ने जाकी इचकै-रो-ओ पाप जालो है । बाकी ये कबी-  
 रो क्या देखियो है । जरे जरे काल-ने-री जगता माठो बरिपोको है क्या ?”

“हाथो-हाथो कनो कनो हो ? मू के जिपी-भी बाला ।”

“जाव जा है के जने मौको पूक लो ।”

धीक अउ धीक कर जिहणी ।

बिट्टलनाथ-र कम अ पास करतै-भी माग-री हमी सुपी अही  
जिहा बे-बै घर-भी बाखेह-री पाँखरी मिछपी । मामा अबै पृथको का  
ममावतौ हो नी ।

घर में मामो हमोदम हो । मामा माजबो हाथ आ मिछव बोवता  
अगो भोजन मिछबो । मामो अब अहोबै-यहीनै बिट्टलनाथ साक दारी  
भोजन खाता । बो बावता हो कै माजबै रो घर मइ जावै औपमा  
हुन जावै ।

बन बिट्टलनाथ-रै मन-में कई बीड़ी भी उबल-गुपल मय रवी ही ।  
बा बरणीजनां बावता भी बो हो नी । अहम मर बिरमबारी रैर  
ममाव-मंय-रो बिरल खेला बावतो हो ।

बो म यता—देव-में दिया बिरमबादा जेजियादा है । यमवान  
बावतो धन में-धन मइ रज साक राजम वन र बुनिया-में रामन-री भी  
पुन में खला रवा है ।

बो सोचनी—बाग तप'र मम-री मूरन लुगापी-री बीत-भी यमी  
दिल तर-मू कण्ठ मुह-मू पूजा उता है कई बा बिरमबारी अर  
अर्थांगना बाजा बाव है ता रवा आ गली बाग भी हो बन सावै-भी  
जिहा भी बरतता हा ।

बा माज ।—दिल तर हापुरभी री बल्ल-बुरानी गम्य राजा-रै  
म-पै वर देन-र हाथ री जमा ग-यता राजा अर बरकार-रा बल्ल-बुर  
बहावा जाव है ? रवा राजा म बाग दृश्य-रा राजन बरन री  
बावता अ-भी अ है ।

बो सोचनी—दिल तर बूड बाईना अर राजा-में देवा रवा-रै  
वरुण अंदरा भीरी खेचता अर म सोचाबाद अर 'दुवै रज-मू  
का कई भी बिना दयदा पाक मुक्ता वर है ।

मा-बाप बधा-भी कछिया बारै-झारै दिवसार् रै हाथ छाता  
 गैरी-माई भर बागदीरो-भी काम दूजाबो बस बोली बोली-भो बस  
 हाथ स कन्ध-नै त्वार को हुयो भी । जाकर हारैर बैठ ग्या ।

बडीनै कमका तर-तर बडी होख जायो बडीनै मा-बाप-नै  
 तर तर ककमल छाता । मोर क्या बदै ? कमका मा-पाप-रो ककमल  
 देख र माँव-भी-माँव बिछुरती हो ।

पचाई कमका-रो छाह सगळै बरजमका पैका-सु बयो कर  
 छाग ग्या पल भीक्या बामडा कडै-सु काज ?

कमका सोचती—हमै भीषणो ना तो तर जलजल-भी मका । वा करै  
 कडै मा-बाप-रै हुक-नै देख र जगजल करन-रो सोचती । अब बरा  
 जाहो बामर जागकी सिवाल र कीतो 'जबवात पोष पप । बरजम  
 नै-नै जकली को बीडवा हा भी । बस बोली ना तो माँवकी बचता-सु  
 हुकनी जायती हो ।

[ १ ]

बिहुकवात बचन-भी भेद भे पल करी हो कर बरीस्था-में पल  
 छातर जायो हो । काई-रा जमल-रा-भी माईव मर ग्या । माँव  
 पल बामर बडी कियो । बस जायो अब सु जम-रो सिवाल  
 में बडे जमल पल होखतो रयो । हाथीसुख-रो पचाई पूो करै  
 काबीर में भरती हुयी ।

माँव रै काई रै काँधी सीपल को हो भी । काँधी-माँवै जाकर  
 जिकली भर बीस-नो लुगाव करवा । बोतो हमी पडौ-रो जगजमका-रै  
 सभो हो के माँव-में पाकिनी-भी का रकमो होवी । गळी-मुवाइ-रा  
 सगळ जमल पुन-नै देखैर हुकमती मानवा हा ।

तो पक्षे क्या बात है ?

‘क्या बताऊँ ।’

‘तो पारो बकछै-रो बैडो-रैडो की समझना होती ।’

मामा भाँसू पूछल जामो । पक्षे बोलियो—एक आगँ लुगाव तो बपानो है । घर जोखो है । बोरी-भी फुररी है । कदत डाकुरजी चुन खेवै तो पारो घर मंड आपँ ।

बिटुछनाथ चुपको रहो । मामै कबो—बेडा ! होइ तो बनी भी होइ हूँ । बोरी-रा मा-बाप तो राखो है । मासी बंजीक ।

बीच में भी बात काट’र बिटुछन ध बोलियो—जावन-भी क्यों हो की थियै खरपरै नै ?

क्यों रे डकोछ ?

‘हूँ मारस्त-रै बजाव-में कसपो को जानूँ वो ।

‘क्यों पल ?’

‘ममै रात्रीना काजी बना करे है ।’

पूछ रे ?

‘भारत माया ब्रिजम-ओमका ! ब्रिडे-री मिटो में रमिपा ब्रिडे-री परतो-री घाल लावो ब्रिडे-री बुधा-बाबुरवाँ जर लकावाँ-रो बापी रिपो ।’

मामो भाँसू काट’र माजत्र मामो ओखल जामो । बिटुछनाथ कबो—हूँ अमर जर बुधारा र र जवसेवा-रो अलख बरखी बाँवसूँ ।

नहीं बेडा ! रीखा है भी’—मामै केवा’ तू ठा हल मिबन्ध-में समझावना जामो है क’ क्या समझाऊँ । जात्र हूँ कर डहीवै-ओ जाऊँ हूँ । देखा डाकुरजी किरा करी का दो चार दिना में भी पारो हूँ क

बो सोचता—किस तरह क्या मजिदना पूरा घमण्ड में बज्जाए  
साधारण जगह-से दूर-दूर गाढ़-से सपाही-में सज्ज बघतब सक्त  
पांचा भाज्य बँवता फिर है । किस तरह वे मर्तुता-में उतरिबोहा मोर  
समझ है । मगधान है बैककर-भी नहीं मिद-र किस तरह मोर  
मागध-री कातर जोटा-करा कर-र बज्ज पूरी कर है ? क्या खैर निजान  
भमर-रै बज्जकै मौ-र-रा मज्जुत बँभा बस सकैका ? क्या निजा पकै  
रो जो-भी न बरब है ?

बो सोचतो—किस तरह जोग बघत घमण्ड ज्ञानी आँक्या पाहल  
मगध बरम-री पासी-से आँक्या मीच बैकु है ?

बो सोचतो—क्या है जो कातर मिद सज्ज-ने दूर कर-र  
बज्ज काछो पैर दूना-में-भी काप-र मिजलरा जिसी बज्ज-की पिताभिका  
सोचते-सोचते बैरी आँक्या भराज काँवो कर बो गछमको दूज मीवो ।

मा मा मारत मा ! बज्जम मोमका !! कपो-कैतो बसकै  
कज्जम कागलो ।

[ ३ ]

जामो बह बैरै जद मागध-री बुजिबामो मुदाम कर रोक्-रोक् ।  
बैकद बैक दिव मै मागध-ने पूर भी ली बिबो—बारै तरीर में कई  
कुआ है ?

नहीं तो ।"

'तो वही तू जिना उदास-र राक्-रोक् बको रीव है ? क्या मा  
बाद-री बाद बाव है ?'

मा बाव-रा दुरमज तो भाव-में भीज कर बूँटू । मै जो होय  
सज्ज-र आँक्या-की मा बाव है क्या ।"

ममताम आने क्यों आनीका इधे है। इया आदमी मिकमा आया है।  
तो क्या ये-मे बुझावर ममताम ? कतल्य गा आनी कही है।

बंदी बाबो ! ईह-कुहें आया। स्वाममुन्दर बाबू मिमा हो—  
विदुष्यताम के अम्मीके के ममताम में कतल्य दिमा कि आज थाय का धं  
कते मुझमे मेरे मकाम पर कवरण मिछें। देमा अमी-अमी चिन्ता  
मिमा हो। बहुत अकरी कर दया। मे आजा केर ईह कतल्य गया।

स्वाममुन्दर बाबू माचल आमा—विदुष्यताम विदुष्यताम शर्मा  
कीही ता कही मिछेरी मतर कया दिन देमा कतल्य-नी मा  
कतल्य-मे दया कतल्य दिमा कतल्य हा। एक कतल्य कतल्य-नी मा  
कतल्य आमा हो... पति बड़े कुल आने क्या दया। कतल्य  
कतल्य कतल्य कतल्य- कुल आने। वो कतल्य-मु आनीका है ही।

कही में कतल्य-कतल्य-कतल्य पांच कतल्य। स्वाममुन्दर बाबू कही कतल्य।  
कतरामी कतल्य आमा के कतल्य करी—मोतर आनीका मादय। डीक है  
केर स्वाममुन्दर बा कतल्य।

[ ५ ]

कही बाबू ! मोरें कतल्य कतल्य-नी कतल्य कतल्य-नी मिमा  
कतल्य—विदुष्यताम कतल्य।

महा माचल ! आमा कतल्य कतल्य ?—स्वाममुन्दर बाबू कतल्य।

‘कतल्य कतल्य ?

मिमा कतल्य तो कतल्य कतल्य-नी कतल्य।”

“जा तो डीक है कतल्य ॥”

‘मे कतल्य आदमी हो। कतल्य कतल्य मिकमा मादय कतल्य बाबू  
कतल्य है। कतल्य कतल्य कतल्य नी आमा कतल्य कतल्य है ॥”



जाती । बिट्ठकबाब मामै-रा पग पकक'र बाँसू नाचवो बोलिबो—  
मनै गिरस्त-रै दहै-मे मछी चंसावो । मनै बजम भोमका लेवा न  
हुकाम रही है ।

मामो बोलिबो—सैवो हो'र दावरावा कर है । कनी म्हासो :  
सोरो को कनाजै नो ?

“हूँ पोती कानुरजी बाबरी पूजा करु बा । बे बसिा की मरो रात  
मामा जी ! ना मनै बालिबो-पोसिबो बजानो बहै हूँ इसो पाती होई  
अछे मानै बै-पूछ बैसूबा ।”

‘तू तो बेरा ! बैकुठा है । तू-जीअ म्हारै काह जानै है । बीजो दुप  
है ? कनी तू किसी म्हाती सेवा को करे है नो ! बब... ” मामां  
बैतो-बैतो दुख ल्यो ।

बब क्या ? बे म<sup>नै</sup> बजाम-में ना कसावो ।”

ममा मल्लका ठाँ हूँ तो बाज-काम में-जी खोजा मराव सार्खूबा ।”  
इसो मामा जी ।

‘बस चुपको-चुपको बैडो रै म्हारो बबिकम है । बब तू मनै  
कानुरजी दारै मानै है तो म्हातो हुकम है” —धा क'र मामै पाचपी  
ममाजी दुबरो काबै मेखिबो भर सपा-रै बर-तो माता बियो ।

[ \* ]

बिट्ठकबाब न जेतगी-तू मरलीछो है दिवा ।

रवामसुन्दर बब पिता-बिमाज-रा बाहर-दर हा करलीछो बाँर  
छमे दुगिबो । बे संभोर बिजल में हुब ल्या । बोरो को लेकी है बड़ी  
बायबामज्यो है । कुरकली मर-ने बड़ी चीकर बै-नी साक-सोमा है ।

भावात्त बाबू क्यों अस्तीका है? इसे आदमी मिकपो जाना है।  
तो क्या वे-वे बुझावर समझाई? कर्तव्य तो आभी कैसी है।

बही बाबू! ईद-कुर्बे आगो। स्वामसुन्दर बाबू जिशा हो—  
बिटुबबाब के अस्तोके के सम्बन्ध में उन्हें लिखो कि आज शाम को वे  
जैसे सुससे मेरे मकान पर अवरण मिछें। ऐसी जमी-जमी चिट्ठी  
मित्रता हो। बहुत अकरी कर देता। ओ भाऊा और ईद कबर्त गयो।

स्वामसुन्दर बाबू प्रोचन आता—बिटुबबाब बिटुबबाब शर्मा  
बीरू तो नहीं मिछैरी कतर बना दिन देखा कमक-री मा  
कमक-री देवदा बाबू मिछर बजाया हो। बुक डोकरो कमक-री मा  
कबे आगो हो पक्षे पक्षे हुन आजै क्या हुयो। पक्ष  
जबे बाबू कमक-री बुक झाके। बाँ इम्माक-सू आगो पक्षी।

बही में टन-टन-टन पाँच बजो। स्वामसुन्दर बाबू बही उठावो।  
अपरमि किशुव कोक'र करक करी—मोटर आपगी साहब। डीक है  
को'र स्वामसुन्दर का डरपा।

[ २ ]

बही बाबू! म्हारै लोकरा करक-री जबे आवक-यो मिदा  
कोबनी—बिटुबबाब बोखियो।

भक्ता मालस ! आकर क्यों पक्ष ?—स्वामसुन्दर बाबू पूछियो।

क्या बताऊ ?

बिना कारण तो कारण हुनै-की कोबनी।"

"आ तो डीक है पक्ष ।"

"जे बीम आदमी हो। बहका कर मिन्नीपक्ष भाइव बीरू बाबू  
करी है। अकोच ओकरा आगो जी आकर कब क्या है।"

इसमें मैं-भी तो कमका भक्त कभी-रै सारी चाब छे'र बायी ।  
 विदुषबाब-नै बूझो-बूझो बार बाबो नै बनै नै बी छ पाक करी ही  
 एक बार मामैली हूँ-भी बोरी-री बात बजानी ही । पण या तो बाँधी  
 है । नै जान मर में-भी या बात सोच ली ।

चाप पोतै-पोतै विदुषबाब कही—हूँ बच-छेपा साक नौकरी  
 बोजकी चामू हूँ । बीपारिया-रो विस्थापन हुगावाँ पर आत्मापन  
 बाळकी पर मार-कटकार रोमी मर तरीन साप्ता-री बैसमाच  
 विपारिया-री छत्कार-डीकवा मर बोधी बूँ—इहाँ बाता-नै एक-देकर  
 म्भारे दिवै-में रै-र'ए हक जुदै है । सांपरटक बाँझाँ बैकते भंभरो  
 कोकर बिधो बाँझै ।

धारा विजय बोल फुररा है—रचममुँदर बाह बोजिया ।

कमका कभी-रै सारी बात-मुपारी-इजाजती-री बिबी छे'र बायी ।  
 विदुषबाब-नै परिचय करतबन बास्ता बाबूजी बोजिया— या म्भारो बेदी  
 कमका है । मर कमका-रै मामै पर बाक-सू हाम के'र कबो—मै  
 म्भारे कनै बेडा बिडे प विदुषबाबजी है कालेज-में प्रोफेसर है, बडा ही  
 ज्ञानक मर भडा है । कमका मर विदुषबाब होइ जेक-बीजे-नै  
 नमस्कर करी ।

कमका-रै बायी-रै बाह विदुषबाब दूबियो— क्या बाई-री जान

'हां सीपक-में होइ बाँझाँ बडी मशी । बीत-बीत इजाज  
 करावा पण —बाबूजी एक बम्बी घाँस ली मर बाँझाँ दू बी ।

आ तो बायीज सीप-री बात है साथ ।"

सोच भक्त किमोक्त ? ज्ञानक-रो जमारो विगडामो । मशी-मुली

हम-नी बजर पत्र घोड़ों-नी कमर होजै-सू हाथ ! ”—बाबूजी  
मूँहें बाहो समाह दिया ।

बिट्ठबबाप-रै मालै-में बीकली-रो मल्लोदियो बाबुिया भर मर  
बाबुिहै इह किवाही बिचार बहर काट-र दाँद-माह हुप भा ।

पोही केसा बाबू बाबू जी बाबुिया—तो नीकरी यकै देउ-मेवा की  
बाबै-नी ? बिघरिबिया-ने आछो मिकवा द-र मुबारपा है । जकी ओ काम  
तो डाकुरजी बा-नै इह राखिवा है । आ मेवा कोपनी ?

‘आ तो पेट-री मेवा है ।’

“तो कल संवा-सू क्या बरबाह-रै पेट पाकणे-री बात बत है ?”

बिट्ठब बैसन-सू केवा—हां है तो जामी...मवा-ओ ।

तो पयै हिरदै-सू अिबै-मै सेवा समझ-र-नी काम करा । जामी  
भाव-नै भीर हो मुबारपा है ।

‘हजो तरे बुझिया-रा मपछा काम मवा समझ-र-नी करा—माम  
जोरी बिम्बेपारा मम भर कमव-सू ।’

‘होक है ?’

‘बहै सारो जीवन मवा माव-सू मरीज जामी । भर देह छुपर  
ब-री जाही जमिवाही मछ-रो धइ कलम-री माव-सू कर-र देह दिव  
दिप काव जामो भर प्रमु-रै बरब-रै मपरम जामी कल जामी ।  
प्रमु-री कुरवा-सू किवाहा काम बीम निमबा मिह गोष की-या ।

‘आ तो म्येछे आता होऊ है ।’

‘जनी बरनीछो पाइ। छे देखी । अह परापरम बनाव-र प्रमु-रै  
बरब-में बहाव हा भर कमर कम र तुर पहा काम में ।’

‘ता हूं बरनीछा पाता छे देखू ।’

‘हे दोसो कर ! को धो कागर् जिखो ।’

‘काओ !’ क र विन्धवाय कागर् ठिकय बाओ ।

[ ५ ]

अबै तो विद्वज्जवाय भू बूझै तो स्वामिगुग्गर बाबू-रै मरै बाबू-  
बूझै । सोर जो जोख र सहा होवै सत्तह होवै बाउ-री बाल में बूझ  
मईवा पीत ग्या ।

विन्धवाय अबै बसका-रै गुग्गर-रै कित बाह करे—देखो  
विचारी आधी होवतै पदो आत-रै हाथ सू-ओ’क पिछाओ साक दिव्वा-  
सिग्वा बाबू काबू किसी बेछा कवा कोबीजै जिखो बाबू-ओ  
बाबू केवै भर देवा में सुजायवाने-ओ केवै बेछावै । साकवाट कमका  
है कितो बाम है बिसा-ओ गुग्गर है । को सोचवो—एक आली बापकी-रो  
कवा दाम्ब होती । कवा बाबू-रै करे-ओ बूझ पूरी करली पक्की । कवा  
आधी होवत-सू सै गुग्गर बकोज्जवा । पति-री सेवा छुपाओ कोर जिखै  
करे तो बूझै इसी काचारी-री बछा-में पति-रै छुपाओ-री सेवा बड़ी  
करली कोबीजै । कने तो स्वाम-रो-ओ मेक है । एक वाली हूओ त्याग  
तो कोबी बाली काओ कोम-री-ओ कपाओपी—दिररेसुरी मागसुरी ।  
कने तो पति आओ हु बाबू तो छुपाओ-रि-ओ बे-बै कोर-दिरकम-र  
पीरै काओ बरो कोबीजै । बै बेछा तो संसार के-ओ कायकिषा पर बछाव  
केवै । बिबै बापकी-रो कोई काबू को होवैकी । बाबू रे स्वामी बिरदकी  
संसार ।

अ-रो सोचवो मग कद-ओ कोखिओ—तू भी तो भिबै-रू संसार-ओ  
मुतबिबो भर कोबी बाली बहारबिबी जीव है तू भी तो छेवा-लेवा  
बूझै है । कवा तू को काम को कर सकेवी ।

सरीर-रै भेक लूने-में छुकिओही कमकोरी बाली बप र बोली—  
बपो कोबी-री काओत गळे पोवै है ।

"तो मिले खोरी-रो क्या होमी ? मगबाब ! मगबाब !! मैं सगली  
 मैं चलणो दप्राबो । मूखै-मै भारग बताओ । सदा  
 ॥ ... खनो'ज खोरी है आज का पक्षी बैरी बापड़ी-री लाखी  
 रकी बापड़ा भी'ज का पक्षी है पक्ष म्हातो क्या बलखो-क्यामापसी  
 म्हाप्योही कोपवी काई ? तो क्या रबाममुन्दर बाबू-रो बिमसोक दुख  
 मगबाब तो मगबाब मैं सगली नहीं हैबू'का ?"

बा बाबू-रै बिचारो-रै हबो'छं छु' छिछ-छिछापी कम्बो जर कूचन  
 मेरब बागा । माबो बडाबो का सामी भी किसन मगबाब-री तस्वीर-रा  
 तिमन हुआ ।

हबू'अ-मै पक्ष बाबोमी-रै बर-बू रेडिबो बाबिपी—

अब तेरे मित्रा बीन मेरा कूचन कन्हा ।

बस तू ही किनारे से आगा दे मेरी नैया ॥

[ • ]

रबाममुन्दर बाबू-मै अब रजिस्टरी छिछाओ पुगिपो ।

आज मैं तस्वीरगन-मू अबार भी मगबाब-री मचा कर र उडिवा  
 है । कम्बका लन बैरी तबूरे कबर कीरवन कर रही है । आज मगबाब  
 का क्या-भी अन्धकारिक दरमन हुआ । सब'र बुद्धि-मू बर आत्म-री  
 धेक घंर आज बोने पीपुन-मै मिछी ।

रबाममुन्दर बाबू हैनिवा हमकन नैया-नैया बाग है बही बू'छ  
 तो बिदु'बाब-रा है । बल बिच्छ मैं बीड़ी क्यों है ? कैर रजिस्टरी ?  
 बा का राज-को बरे आज भी है ।

छिछाछ बाबिबा । बाडा बांधी । एक बार का बार तीन पार ।  
 मग-मै बिमबाब का बांधन हो बा । क्या मा'ब-भी बिच्छ-री बीड़ी है ?  
 ब र कैर बांधी । मग का है । मोच बिदु'बाब हमकन है ।

“वे कैसे कहें ? जो जो कागद लिखो ।”

‘कामो !’ के र बिटुबनाथ कागद लिखन लागो ।

[ ९ ]

अबै तो बिटुबनाथ रू पड़े तो स्वाममुन्दर बाप-रै अरे बाप-रै  
पूछे । रोय जी कोय-र सहा होयै सत्सङ्ग होयै बाठ-री बग में हथ  
सईया पीठ गया ।

बिटुबनाथ अबै कमला-रै गुण-नै नित बाद करै—देको  
बिचारी कोपी होयै कब बाप-रै हाथ स-बी-अ पिताजी साक निरूप-  
सिग्या बाप बापै किमी बेका कब कोपीजै किमी मागू-को  
जान केयै कर सेवा में सुजायमान-की केयै बेकायै । सावनाय कमला  
है किमी नाम है किमा-की गुण है । को सोचतो—जब बारी बाप-री-रो  
कब हाथ होसी ? कब बाप-रै करै-की जूय पूरी करणी पवसी । कब  
कोपी होय-सु से गुण बकोकवा । पति री सेवा हुगामी कोरै जिये  
करै का पछै हसी बाबारी-री दस्त-में पठि-नै हुगामी-रो सेवा नहीं  
करणी कोपीजै ? कमी तो स्वाय-रो-की मरु है ? एक पत्नी हणो स्वाय  
तो बीजै पासी बाबारी बीय-री-की कपायपी—दिरदेसुरी प्रानेसुरी ।  
कमी तो पति कोको हु जयै तो हुगामी-रै-की बे-नै कोय-किरकन र  
पोरै बापको बरो कोपीजै ? नै बेका तो संसार बे-नै बायकिमां बर बडाव  
केयै । मियै बाप-रो कोरै माय को होयैबी ? हाथ रे स्वामी, निरदबी  
संसार !

कै-रो मायको मग कह-की कोकिचो—तू भी तो जिये-रै सत्ता-रो  
मुनकविचो जर कोपी बलां बचामविचो जीव है तू भी तो सेवा-मेयै  
रूके है । कया तू को काम को कर सकैबी ?

सरीर-र कोय लूरी-में हाकिचोबी कमजोरी भालै कब-र कोपी—  
कब कोपी-री बाप-र पछै कोरै है ?

विष्णु मयापान-ही मय-में मसार-ने मूखियो बैठो है । केई कुचमाही आगम-में बाये बाँधवा मीच-र सैन कर रहा है । केई कुचपुम-कुचपुम कर रहा है । पथ विरगद में लो मगक-ई हरण अठाव रपा है । ममोही दोवा हाथों स गुह-नारेख झूठाव रपा है । बारन मीठी सीपी राग-सू भूमववा डाकक पर मगक नीव-गाव रपी है ।

बिदुबवाच-रा विद्यार्थी संगली-रा प्रोत्तर अचरज घर भाव-में मरिषोवा पर-में बड़े-निकल है । बिदुबवाच सेवा-सू निष्ठ-र मुसी मुसी कर प्रम-सू सगळों की आत्मसत्य कर है ।

परीने कमळा कमर-में धूमो मन-भी-मन केव रपी है—करवा-मिषु ! आनर ग्दारा दुल पांसू महोत्रिषो कावनी । दीवानाव ! अत्रिके ये दाम बकदाव रहा हो बा कित्ता दबायु कित्ती सज्जन कर कित्ती सेवाबापी है ? मर-भी लो गिरमिनी-र सुकड़े-में लेख बाँधी-ने अलग-ही जाणम मुकली है । तुगाभी विनक-ही वीर-वोव र सेवा करे त्रिही हू का कर सरे नी । तुगाभी घर-नी मुकी-सगळं करे त्रिही हू का कर सक वो । तुगाभी मिमन-रा कपडा-कसा ओर-अवत माँमें त्रिही हू का कर सक नी । पथ हम निच्ये दूँदे-में ये गल्ले बाँधन-सू क्या कावडा काहरो ? यवो बीह बेच र भीत्रका मोख ये रपा है ? मने अभीकार कर र बाँमें बुजमा सुग मिछनी ? आज हरण-सू ग्दारा दिषो दिखोवा ग्दरत बर हू दुग्री हू । हाव ! तुगावाँ ने मिमन-नी सेवा करनी बापीने बरती बाँमें ग्दारा सेवा करनी पदमी ? बाव ! बाँ मने बापी बको करी ? करी वा बड़े मने बार र बार-ने मूनी-में भी लूण लूनी करन देखनी हो ! वराये गल्ले-में मारो बाँपर बाँने कर बको दुग्री कर रपा हो ! प्रभु मने अगळ मुदाग देवा । बार करे-भी वृद्ध-नी पदी-ओ मन आगम दिवा । आ कैरी-केनी ओरन-ने पथ-सू जीमू वृषगो, कज्जा दातुराओ-र चरणी में पमच बजावना ।



हिरदे-में लवेष्ट आलद भर खुमंग-री तिरव धी उमड़ी । माझी  
वरस पड़ी भर मूँडे-सु लिच्छक पड़ियो—बहु ! तू बवाहू है बवा-री  
समंदर है ।

माझा-बापा पग घरवा कमळा-री मा-रै कमरै-में बजिया । मा  
माझी धम्म-में कामोड़ी ही । रयाममुन्दर बाहू-रो आलद-सु मूँडो धव  
हूय लो । पीठी बै-रै सामी घर ही । काम छोड़-र बा बांचल घासी—  
भइ ब धी रयाममुन्दरमी ।

भयवाहू के दुमातीबाहू-स्वरूप भी कमळा-रुची को मैं अपनी  
कौन-क-संगिनी बचाने का प्रस्ताव परिवर्तन साधर आपकी सेवा में  
कपस्वित करवा हूँ । क्या आप इसे स्वीकार करके मुझे मुचकृत  
कीजियेगा ?

आपका दया-भिष्ट

ठा १—२—२ ।

विदुष्यमात्र

हमरै-मी दिन घरमें बड़ी धम्म-पात्र-सु भयवाहू-रो उद्धव  
भगवतीजियो । हाकुरजी-में सामथरी करोगाथो । बैष्णव-समाज सुविधो ।  
महत्तमाहारी बापी-सु घर गूब उठियो । कम संहरल होने पर  
सागळ-में कमळो परमाह बैटोजियो । कमळा-री मा भर पिठाभी भी  
हाकुरजो-रै चरवा-में विदुष-रै बप-में घर दिया । भगवाहू-री बाळ-  
मूर्ति मुचक बरी ।

[ प ]

आज जिच्छ-र मागी-ने हेतो तो हेतव-भी है बापों । बापी मूर्ति  
छकने म हू बह दूत बही । घर 'बघाई है-बघाई है-री मुच बापी-सु  
गु उ उठ्यो । भावाम-वादात्म-री सुगावी संगळ-गीत गाव रही ही ।

दो-हो ! कबो जावो ।

स्वामी-मल मेव्ह दाखी ग्दामी रचि-अकचि-रो ध्याव राखे ।

‘बोला ।

‘राखिइये दाखी ग्दामी जोलम-अत घर कपड-अत्ता ममाळै ।

ते अक-मे अनेक गुण है ।

केर लुच पारै भावने-म्ह घर बसिवा हे नदी अने भूजव  
बहिषो हा । बारै भावने-म्ह घर-में हाकुरात्री बचारिवा । बारै कीरवना  
री बवितर भर मीडी रतावना-म्ह घर-रो बलावरन पविषर हुषी ।  
अर ए लुचके केमां काक सादी बेर र लंघुरै-रा तार धिरे है अर मीदे  
मुरां में वर गावै है ता अने हमी माळम वरै जावो माळमाल  
खिचडीडी भगवान-जे रिखावण लाक गाव रही है । पार भुर-रै हमरा  
मे कीवने रेखे-म्ह लरि-में लयी डमंग लयी मरगी रा दबोळ भावण  
जागे है दिन भर-रै कामां-री बकावट कडे-ओ नाड जावै अर नरावर  
अर भुजंग-म्ह रग-रग बाधन जाग जावै ।

बचाव जावो द्वारा जान । बिबे जावो ग्दारा बलाण ।

नदी है मीगंद न्याव'र कचू है नं ग्दारे घर-री खिलडी है ।

माथे भी ?

बुरे बाचे-ओ । कमळ छपर बेड'र धेवरा व-रो मृगव-रे मीदे  
नर-में वर हो र बुजिवा-म्ह वर कडे-ओ चिरिचो रबू है व-ओज  
रवा ग्दारी हुच रही है । काम्यनगातो में वरा कामन किचो है ?

ग्दामी रवा जो हमी बां अकर भी कर हो है । ये-ओज कामन  
गवा होआ हो ।

कई दिनों ठहरे पौ बिट्ठलनाथ रै ब्याकुली बरखा चखती रहीं ।  
 पछै नदी बाध नह दिव खाँपी-ठापी ठेरै बिन । शोचेलर साब कमका-रै  
 भुज पर इसा दीछ म्या के काछेर रै परबस लगली रैम बे रै छने-बी  
 बिठाबुल । भाबका-भयेका इजगी-इजगी सगली जगाँ जामो बंध कर  
 दिवो । बिबुंगे कमका-ले नहाबुनो-खोबान्धी जाम बजान्धर बालबी  
 सेव-री धामगरी सजलबी कर बोमू बेछा रहोबी बजान्धी । छुडी-रै  
 दिव कमका-ले भुमबुज-ले छे बजान्धी ।

कमका बा-ले बर-सखाबा-रा सुन्दर भानु-भरिवा पद ठहरै ऊपर  
 गाब-र भुजावा करती ।

कईई का हल बोक-र कैती—नाम ! बाँ जाल-बुझ-र क्यों आप्त  
 गले बाँबी ? कबे कबे बाँ-र धार-र बिट्ठलनाथ रै-री हल धर-र  
 हल में केब-र कैती—हूँ तो पिये नै परमादमा-री जाल-र धिरपा  
 समझ हूँ ।

कमका कैती—सेव-री कम सुगाछी-रो हुबै है जिको बाँ-नै  
 गहरी सेवा करनी पछै है ।

‘तो क्या ! कबे बी गहरी बल-में तो कबे-बी बल गाछे-में कब  
 बीब-रै मगग ऊपर हो बजा-न भागै-सही बाबबे है तो छुली-छुली  
 बाबबो बोनीजे ।

‘तो हूँ बाँरी क्या सेव-सहायता कर हूँ ?’

‘हम-दोहर हैछ-र मा दाछी मोख करायै कर बाबरो पछै ।

‘दीक है ।

‘हुल-हुल में मायसी दाछी सखा-रुप देवै कर समझायै ।

‘सुनिमजी दाछी बर-रै दिसल-बिसल-रो छेको जलजियाँ  
 मायै राखै ।

